यसायाह

[illegible]

यसायाह की किताब अपने नाम को उसके मुसन्निफ़ से लेती है। उस ने एक नबिय्या से शादी की थी जिस से दो बेटे पैदा हुए। यसायाह (7:3; 8:3) उसने चार यहूदिया के बादशाहों के दौर — ए — हुकूमत में नबुव्वत की वह बादशाह हैं उज़्ज़ियाह, आख़ज़, यूताम और हिज़्क़ियाह।

[illegible]

इस किताब की तस्नीफ़ की तारीख तक़रीबन 740 - 680 क़ब्ल मसीह के बीच है।

यह किताब उज़्ज़ियाह बादशाह की हुकूमत के आख़िर में और दीगर तीन बादशाह यूताम, आख़ज़ और हिज़्क़ियाह के दौर — ए — हुकूमत में लिखे गये।

[illegible]

सेबसे पहले ख़ास नाज़रीन व सामईन जिन से यसायाह मुख़ातब था वह थे यहूदिया के लोग जो ख़ुदा की शरीअत की ज़रूरत के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने में नाकाम थे।

[illegible]

यसायाह का असल मक़्सद था कि पूरे पुराने अहदनामे में हमें येसू मसीह की एक वसी' नबुवती तस्वीर फ़राहम करे। यह उस की ज़िन्दगी की वुसअत को शामिल करता है: येसू के दुबारा आमद का इशतिहार यसायाह (40:3 — 5), उस का कुंवारी से पैदा होना (7:14), उस के ख़ुशख़बरी की मनादी (61:1), उसकी ज़बीहाना मौत (52:13 — 53:12), और अपने ख़ुद का दावा करने के लिए उसका लौटना (60:2 — 3) सबसे पहले यसायाह की बुलाहट यहूदा की सलतनत के लिये नबुव्वत करने के लिए थी। यहूदाह

बेदारी और बग़ावत के हालात से होकर गुज़र रहा था। यहूदाह को अश्शूरों और मिस्र ने बर्बाद करने की धमकी दी, मगर वह ख़ुद के रहम के सबब से बख़्शा दिया गया। गुनाहों से तौबा करने के लिए यसायाह ने मनादी की और मुसतक़बिल में ख़ुदा की नजात के लिये उम्मीद भरे तवक़्क़ो का इज़्हार किया।

[illegible]
नजात

बैरूनी ख़ाका

1. ख़ुदा की तरफ़ से यहूदिया को अपनी रहमत से दूर करना — 1:1-12:6
2. दीगर क़ौमों के ख़िलाफ़ ख़ुदा की तरफ़ से अपनी रहमत से दूर करना — 13:1-23:18
3. मुसतक़बिल की बड़ी मुसीबत — 24:1-27:13
4. ख़ुदा की तरफ़ से इस्राईल और यहूदिया को अपनी रहमत से दूर करना — 28:1-35:10
5. हिज़िकिय्यह और यशायाह की त्वारीख — 36:1-38:22
6. बाबेल का पसमंज़र — 39:1-47:15
7. तसल्ली और इतमिनान के लिए ख़ुदा का मन्सूबा — 48:1-66:24

1 यसा'याह बिन आमूस का ख़्वाब जो उसने यहूदाह और
येरूशलेम के ज़रिए' यहूदाह के बादशाहों उज़ियाह और यूताम
और आख़ज़ और हिज़क़ियाह के दिनों में देखा।

[illegible]

2 सुन ऐ आसमान, और कान लगा ऐ ज़मीन, कि ख़ुदावन्द यूँ
फ़रमाता है: "कि मैंने लड़कों को पाला और पोसा, लेकिन उन्होंने
मुझ से सरकशी की।
3 बैल अपने मालिक को पहचानता है और गधा अपने मालिक
की चरनी को, लेकिन बनी — इस्राईल नहीं जानते; मेरे लोग कुछ
नहीं सोचते।"

4 आह, ख़ताकार गिरोह, बदकिरदारी से लदी हुई क़ौम
बदकिरदारों की नसल मक्कार औलाद; जिन्होंने ख़ुदावन्द को
छोड़ दिया, इस्राईल के क़ुददूस को हक़ीर जाना, और गुमराह
— ओ — बरगश्ता हो गए!'
5 तुम क्यूँ ज़्यादा बग़ावत करके और मार खाओगे? तमाम सिर
बीमार है और दिल बिल्कुल सुस्त है।
6 तलवे से लेकर चाँदी तक उसमें कहीं सेहत नहीं सिर्फ़ ज़ख़्म
और चोट और सड़े हुए घाव ही हैं; जो न दबाए गए, न बाँधे गए,
न तेल से नर्म किए गए हैं।
7 तुम्हारा मुल्क उजाड़ है, तुम्हारी बस्तियाँ जल गईं; लेकिन
परदेसी तुम्हारी ज़मीन को तुम्हारे सामने निगलते हैं, वह वीरान
है, जैसे उसे अजनबी लोगों ने उजाड़ा है।
8 और सिय्यून की बेटी छोड़ दी गई है, जैसे झोपड़ी बाग़ में
और छप्पर ककड़ी के खेत में या उस शहर की तरह जो महसूर हो
गया हो।
9 अगर रब्ब — उल — अफ़वाज हमारा थोड़ा सा बक़िया बाक़ी
न छोड़ता, तो हम सदूम की तरह और 'अमूरा की तरह हो जाते।
10 सदूम के हाकिमो, का कलाम सुनो! के लोगों, ख़ुदा की
शरी'अत पर कान लगाओ!
11 ख़ुदावन्द फ़रमाता है, तुम्हारे ज़बीहों की कसरत से मुझे
क्या काम? मैं मेंढों की सोख़्तनी क़ुर्बानियों से और फ़र्बा बछड़ों
की चर्बी से बेज़ार हूँ; और बैलों और भेड़ों और बकरों के ख़ून में
मेरी ख़ुशनूदी नहीं।
12 "जब तुम मेरे सामने आकर मेरे दीदार के तालिब होते हो,
तो कौन तुम से ये चाहता है कि मेरी बारगाहों को रौंदो?
13 आइन्दा को बातिल हदिये न लाना, ख़ुशबू से मुझे नफ़रत
है, नये चाँद और सबत और 'ईदी जमा'अत से भी; क्यूँकि मुझ में
बदकिरदारी के साथ 'ईद की बर्दाश्त नहीं।

14 मेरे दिल को तुम्हारे नये चाँदों और तुम्हारी मुक़र्ररा 'ईदों से
नफ़रत है; वह मुझ पर बार हैं; मैं उनकी बर्दाश्त नहीं कर सकता।
15 जब तुम अपने हाथ फैलाओगे, तो मैं तुम से आँख फेर लूँगा;
हाँ, जब तुम दुआ पर दुआ करोगे, तो मैं न सुनूँगा; तुम्हारे हाथ
तो ख़ून आलूदा हैं।
16 अपने आपको धो, अपने आपको पाक करो; अपने बुरे कामों
को मेरी आँखों के सामने से दूर करो, बदफ़ेली से बाज़ आओ,
17 नेकोकारी सीखो; इन्साफ़ के तालिब हो मज़लूमों की मदद
करो यतीमों की फ़रियादरसी करो, बेवाओं के हामी हो।"
18 अब ख़ुदावन्द फ़रमाता है, "आओ, हम मिलकर हुज्जत करें;
अगरचे तुम्हारे गुनाह क़िर्मिज़ी हों, वह बर्फ़ की तरह सफ़ेद हो
जाएँगे; और हर चन्द वह अर्ग़वानी हों, तोभी ऊन की तरह उजले
होंगे।
19 अगर तुम राज़ी और फ़रमाबरदार हो, तो ज़मीन के अच्छे
अच्छे फल खाओगे;
20 लेकिन अगर तुम इन्कार करो और बाग़ी हो तो तलवार का
लुक़्मा हो जाओगे क्यूँकि ख़ुदावन्द ने अपने मुँह से ये फ़रमाया
है।"
21 वफ़ादार बस्ती कैसी बदकार हो गई! वह तो इन्साफ़ से
मा'मूर थी और रास्तबाज़ी उसमें बसती थी, लेकिन अब ख़ूनी
रहते हैं।
22 तेरी चाँदी मैल हो गई, तेरी मय में पानी मिल गया।
23 तेरे सरदार गर्दनकश और चोरों के साथी हैं। उनमें से हर
एक रिश्वत दोस्त और इन'आम का तालिब है। वह यतीमों
का इन्साफ़ नहीं करते और बेवाओं की फ़रियाद उन तक नहीं
पहुँचती।
24 इसलिए ख़ुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज, इस्राईल का
क़ादिर, यूँ फ़रमाता है: कि "आह मैं ज़रूर अपने मुख़ालिफ़ों से

आराम पाऊँगा, और अपने दुश्मनों से इन्तक़ाम लूँगा।
25 और मैं तुझ पर अपना हाथ बढ़ाऊँगा, और तेरी गन्दगी
बिल्कुल दूर कर दूँगा, और उस राँगे को जो तुझ में मिला है जुदा
करूँगा;
26 और मैं तेरे क़ाज़ियों को पहले की तरह और तेरे सलाहकारों
को पहले के मुताबिक़ बहाल करूँगा। इसके बाद तू रास्तबाज़
बस्ती और वफ़ादार आबादी कहलाएगी।"
27 सिय्यून 'अदालत की वजह से और वह जो उसमें गुनाह से
बाज़ आए हैं, रास्तबाज़ी के ज़रिए' नजात पाएँगे;
28 लेकिन गुनाहगार और बदकिरदार सब इकट्ठे हलाक होंगे,
और जो ख़ुदावन्द से बाग़ी हुए फ़ना किए जाएँगे।
29 क्यूँकि वह उन बलूतों से, जिनको तुम ने चाहा शर्मिन्दा होंगे;
और तुम उन बाग़ों से, जिनको तुम ने पसन्द किया है ख़जिल होगे।
30 और तुम उस बलूत की तरह हो जाओगे जिसके पत्ते झड़
जाएँ, और उस बाग़ की तरह जो बेआबी से सूख जाए।
31 वहाँ का पहलवान ऐसा हो जाएगा जैसा सन, और उसका
काम चिंगारी हो जाएगा; वह दोनों एक साथ जल जाएँगे, और
कोई उनकी आग न बुझाएगा।

2

[illegible]

1 वह बात जो यसा'याह बिन आमूस ने यहूदाह और येरूशलेम
के हक़ में ख़्वाब में देखा।
2 आख़िरी दिनों में यूँ होगा कि ख़ुदावन्द के घर का पहाड़ पहाड़ों
की चोटी पर क़ाईम किया जाएगा, और टीलों से बुलन्द होगा,
और सब क़ौमें वहाँ पहुँचेंगी;
3 बल्कि बहुत सी उम्मतें आयेंगी और कहेंगी "आओ ख़ुदावन्द
के पहाड़ पर चढ़ें, या'नी या'क़ूब के ख़ुदा के घर में दाख़िल हों

और वह अपनी राहें हम को बताएगा, और हम उसके रास्तों पर
चलेंगे।" क्यूँकि शरी'अत सिय्यून से, और ख़ुदावन्द का कलाम
येरूशलेम से सादिर होगा।
4 और वह क़ौमों के बीच 'अदालत करेगा और बहुत सी उम्मतों
को डांटेगा और वह अपनी तलवारों को तोड़ कर फालें, और
अपने भालों को हँसुए बना डालेंगे और क़ौम क़ौम पर तलवार
न चलाएगी और वह फिर कभी जंग करना न सीखेंगे।
5 ऐ या'क़ूब के घराने, आओ हम ख़ुदावन्द की रोशनी में चलें।
6 तूने तो अपने लोगों या'नी या'क़ूब के घराने को छोड़ दिया,
इसलिए कि वह अहल — ए — मशरिक़ की रसूम से पुर हैं और
फ़िलिस्तियों की तरह शगुन लेते हैं और बेगानों की औलाद के
साथ हाथ पर हाथ मारते हैं।
7 और उनका मुल्क सोने — चाँदी से मालामाल है, और उनके
ख़ज़ाने बे शुमार हैं और उनका मुल्क घोड़ों से भरा है, उनके रथों
का कुछ शुमार नहीं।
8 उनकी सरज़मीन बुतों से भी पुर है वह अपने ही हाथों की
सन'अत, या'नी अपनी ही उगलियों की कारीगरी को सिज्दा
करते हैं।
9 इस वजह से छोटा आदमी पस्त किया जाता है, और बड़ा
आदमी ज़लील होता है; और तू उनको हरगिज़ मुआफ़ न करेगा।
10 ख़ुदावन्द के ख़ौफ़ से और उसके जलाल की शौकत से, चट्टान
में घुस जा और ख़ाक में छिप जा।
11 इंसान की ऊँची निगाह नीची की जाएगी और बनी आदम
का तकब्बुर पस्त हो जाएगा; और उस रोज़ ख़ुदावन्द ही
सरबलन्द होगा।
12 क्यूँकि रब्ब — उल — अफ़्वाज का दिन तमाम मग़रूरों
बुलन्द नज़रों और मुतकब्बिरों पर आएगा और वह पस्त किए
जाएँगे;

13 और लुबनान के सब देवदारों पर जो बुलन्द और ऊँचे हैं और
बसन के सब बलूतों पर।
14 और सब ऊँचे पहाड़ों और सब बुलन्द टीलों पर,
15 और हर एक ऊँचे बुर्ज पर, और हर एक फ़सीली दीवार पर,
16 और तरसीस के सब जहाज़ों पर, ग़रज़ हर एक ख़ुशनुमा
मन्ज़र पर;
17 और आदमी का तकब्बुर ज़ेर किया जाएगा और लोगों की
बुलंद बीनी पस्त की जायेगी और उस रोज़ ख़ुदावन्द ही सरबलन्द
होगा।
18 तमाम बुत बिल्कुल फ़ना हो जायेंगे
19 और जब ख़ुदावन्द उठेगा कि ज़मीन को शिद्दत से हिलाए,
तो लोग उसके डर से और उसके जलाल की शौकत से पहाड़ों के
ग़ारों और ज़मीन के शिगाफ़ों में घुसेंगे।
20 उस रोज़ लोग अपनी सोने — चाँदी की मूरतों को जो
उन्होंने इबादत के लिए बनाई, छछुन्दारों और चमगादड़ों के
आगे फेंक देंगे।
21 ताकि जब ख़ुदावन्द ज़मीन को शिद्दत से हिलाने के लिए
उठे, तो उसके ख़ौफ़ से और उसके जलाल की शौकत से चट्टानों
के ग़ारों और नाहमवार पत्थरों के शिगाफ़ों में घुस जाएँ।
22 तब तुम इंसान से जिसका दम उसके नथनों में है बाज़ रहो,
क्यूँकि उसकी क्या क़द्र है?

3

[illegible]

1 क्यूँकि देखो ख़ुदावन्द रब्ब — उल — अफ़्वाज येरूशलेम
और यहूदाह से सहारा और भरोसा, रोटी का तमाम सहारा और
पानी का तमाम भरोसा दूर कर देगा;
2 या'नी बहादुर और साहिब — ए — जंग को क़ाज़ी और नबी
को, फ़ालगीरों और बुज़ुर्ग को।

3 पचास पचास के सरदारों और 'इज़्ज़तदारों और सलाहकारों
और होशियार कारीगरों और माहिर जादूगरों को।
4 और मैं लड़कों को उनके सरदार बनाऊँगा और नन्हे बच्चे उन
पर हुक्मरानी करेंगे।
5 लोगों में से हर एक दूसरे पर और हर एक अपने पड़ोसी
पर सितम करेगा। और बच्चे बूढ़ों की और रज़ील शरीफ़ों की
गुस्ताख़ी करेंगे।
6 जब कोई आदमी अपने बाप के घर में अपने भाई का दामन
पकड़कर कहे, कि तू पोशाकवाला है; आ तू हमारा हाकिम हो,
और इस उजड़े देस पर क़ाबिज़ हो जा।
7 उस रोज़ वह बुलन्द आवाज़ से कहेगा, कि मुझसे इन्तिज़ाम
नहीं होगा; क्यूँकि मेरे घर में न रोटी है न कपड़ा, मुझे लोगों का
हाकिम न बनाओ।
8 क्यूँकि येरूशलेम की बर्बादी हो गई और यहूदाह गिर गया,
इसलिए कि उनकी बोल — चाल और चाल — चलन ख़ुदावन्द
के ख़िलाफ़ हैं कि उसकी जलाली आँखों को ग़ज़बनाक करें।
9 उनके मुँह की सूरत उन पर गवाही देती है वह अपने गुनाहों
को सदूम की तरह ज़ाहिर करते हैं और छिपाते नहीं उनकी जानों
पर वावैला है! क्यूँकि वह आप अपने ऊपर बला लाते हैं।
10 रास्तबाज़ों के ज़रिए' कहो कि भला होगा, क्यूँकि वह अपने
कामों का फल खाएँगे।
11 शरीरों पर वावैला है कि उनको बदी पेश आयेगी क्यूँकि वह
अपने हाथों का किया पाएँगे।
12 मेरे लोगों की ये हालत है कि लड़के उन पर ज़ुल्म करते हैं,
और 'औरतें उन पर हुक्मरान हैं। ऐ मेरे लोगों तुम्हारे रहनुमा तुम
को गुमराह करते हैं, और तुम्हारे चलने की राहों को बिगाड़ते हैं।
13 ख़ुदावन्द खड़ा है कि मुक़द्दमा लड़े, और लोगों की 'अदालत
करे।

14 ख़ुदावन्द अपने लोगों के बुज़ुर्गों और उनके सरदारों की
'अदालत करने को आएगा, “तुम ही हो जो बाग़ चट कर गए
हो और ग़रीबों की लूट तुम्हारे घरों में है।”
15 ख़ुदावन्द रब्ब — उल — अफ़्वाज फ़रमाता है कि इसके
क्या क्या मा'ना हैं कि तुम मेरे लोगों को दबाते और ग़रीबों के
सिर कुचलते हो।
16 और ख़ुदावन्द फ़रमाता है, चूँकि सिय्यून की बेटियाँ
मुतकब्बिर हैं और गर्दनकशी और शोख़ चश्मी से ख़िरामाँ होती हैं
और अपने पाँव से नाज़रफ़्तारी करती और घुंघरू बजाती जाती
हैं।
17 इसलिए ख़ुदावन्द सिय्यून की बेटियों के सिर गंजे, और
यहोवाह उनके बदन बेपर्दा कर देगा।
18 उस दिन ख़ुदावन्द उनके ख़लख़ाल की ज़ेबाइश, जालियाँ
और चाँद ले लेगा,
19 और आवेज़े और पहुँचियाँ, और नक़ाब।
20 और ताज और पाज़ेब और पटके और 'इत्रदान और ता'वीज़।
21 और अंगूठियाँ और नथ।
22 और नफ़ीस पोशाकें, और ओढ़नियाँ, और दोपट्टे और कीसे,
23 और आर्सियाँ और बारीक़ कतानी लिबास और दस्तारे और
बुर्क़े भी।
24 और यूँ होगा कि ख़ुशबू के बदले सड़ाहट होगी, और पटके के
बदले रस्सी, और गुंधे हुए बालों की जगह चंदलापन और नफ़ीस
लिबास के बदले टाट और हुस्न के बदले दाग़।
25 तेरे बहादुर हलाक होंगे और तेरे पहलवान जंग में क़त्ल
होंगे।
26 उसके फाटक मातम और नौहा करेंगे, और वह उजाड़ होकर
ख़ाक पर बैठेगी।

4

1 उस वक़्त सात 'औरतें एक मर्द को पकड़ कर कहेंगी, कि हम
अपनी रोटी खाएँगी और अपने कपड़े पहनेंगी; तू हम सबसे सिर्फ़
इतना कर कि तेरे नाम से कहलायें ताकि हमारी शर्मिंदगी मिटे।

[illegible]

2 तब ख़ुदावन्द की तरफ़ से रोएदगी ख़ूबसूरत — ओ —
शानदार होगी, और ज़मीन का फल उनके लिए जो बनी —
इस्राईल में से बच निकले, लज़ीज़ और ख़ुशनुमा होगा।
3 और यूँ होगा कि जो कोई सिय्यून में छूट जाएगा, और
जो कोई येरूशलेम में बाक़ी रहेगा, बल्कि हर एक जिसका नाम
येरूशलेम के ज़िन्दों में लिखा होगा, मुक़द्दस कहलाएगा।
4 जब ख़ुदावन्द सिय्यून की बेटियों की गन्दगी को दूर करेगा
और येरूशलेम का ख़ून रूह — ए — 'अद्ल और रूह — ए —
सोज़ान के ज़रिए' से धो डालेगा।
5 तब ख़ुदावन्द फिर सिय्यून पहाड़ के हर एक मकान पर और
उसकी मजलिसगाहों पर, दिन को बादल और धुवाँ और रात को
रोशन शोला पैदा करेगा; तमाम जलाल पर एक सायबान होगा।
6 और एक ख़ेमा होगा जो दिन को गर्मी में सायादार मकान,
और आँधी और झड़ी के वक़्त आरामगाह और पनाह की जगह
हो।

5

[illegible]

1 अब मैं अपने महबूब के लिए अपने महबूब का एक गीत,
उसके बाग़ के ज़रिए' गाऊँगा:मेरे महबूब का बाग़ एक ज़रख़ेज़
पहाड़ पर था।
2 और उसने उसे खोदा और उससे पत्थर निकाल फेंके और
अच्छी से अच्छी ताकि उसमें लगाई, और उसमें बुर्ज बनाया और

एक कोल्हू भी उसमें तराशा; और इन्तिज़ार किया कि उसमें अच्छे
अंगूर लगें लेकिन उसमें जंगली अंगूर लगे।
3 अब ऐ येरूशलेम के बाशिन्दो और यहूदाह के लोगों, मेरे
और मेरे बाग़ में तुम ही इन्साफ़ करो,
4 कि मैं अपने बाग़ के लिए और क्या कर सकता था जो मैंने न
किया? और अब जो मैंने अच्छे अंगूरों की उम्मीद की, तो इसमें
जंगली अंगूर क्यूँ लगे?
5 मैं तुम को बताता हूँ कि अब मैं अपने बाग़ से क्या करूँगा; मैं
उसकी बाड़ गिरा दूँगा, और वह चरागाह होगा; उसका अहाता
तोड़ डालूँगा, और वह पामाल किया जाएगा;
6 और मैं उसे बिल्कुल वीरान कर दूँगा वह न छाँटा जाएगा न
निराया जाएगा, उसमें ऊँट कटारे और काँटे उगेंगे; और मैं बादलों
को हुक्म करूँगा कि उस पर मेंह न बरसाएँ।
7 इसलिए रब्ब — उल — अफ़्वाज का बाग़ बनी — इस्राईल
का घराना है, और बनी यहूदाह उसका ख़ुशनुमा पौधा है उसने
इन्साफ़ का इन्तिज़ार किया, लेकिन ख़ूँरेज़ी देखी; वह दाद का
मुन्तज़िर रहा, लेकिन फ़रियाद सुनी।
8 उनपर अफ़सोस, जो घर से घर और खेत से खेत मिला देते हैं,
यहाँ तक कि कुछ जगह बाक़ी न बचे, और मुल्क में वही अकेले
बसें।
9 रब्ब — उल — अफ़्वाज ने मेरे कान में कहा, यक़ीनन बहुत
से घर उजड़ जाएँगे और बड़े बड़े आलीशान और ख़ूबसूरत मकान
भी बे चराग़ होंगे।
10 क्यूँकि पन्द्रह बीघे बाग़ से सिर्फ़ एक बत मय हासिल होगी,
और एक ख़ोमर' बीज से एक ऐफ़ा ग़ल्ला।
11 उनपर अफ़सोस, जो सुबह सवेरे उठते हैं ताकि नशेबाज़ी के
दरपै हों और जो रात को जागते हैं जब तक शराब उनको भड़का
न दे!

12 और उनके जश्न की महफ़िलों में बरबत और सितार और
दफ़ और बीन और शराब हैं; लेकिन वह ख़ुदावन्द के काम को
नहीं सोचते और उसके हाथों की कारीगरी पर ग़ौर नहीं करते।
13 इसलिए मेरे लोग जहालत की वजह से ग़ुलामी में जाते हैं;
उनके बुज़ुर्ग भूके मरते, और 'अवाम प्यास से जलते हैं।
14 फिर पाताल अपनी हवस बढ़ाता है और अपना मुँह बे
इन्तहा फाड़ता है और उनके शरीफ़ और 'आम लोग और ग़ौग़ाई
और जो कोई उनमें घमण्ड करता है, उसमें उतर जाएँगे।
15 और छोटा आदमी झुकाया जाएगा, और बड़ा आदमी पस्त
होगा और मग़रूरों की आँखे नीची हो जाएँगी।
16 लेकिन रब्ब — उल — अफ़्वाज 'अदालत में सरबलन्द
होगा, और ख़ुदा — ए — क़ुद्दूस की तक़्दीस सदाक़त से की
जाएगी।
17 तब बर्रे जैसे अपनी चरागाहों में चरेंगे और दौलतमन्दों के
वीरान खेत परदेसियों के गल्ले खाएँगे।
18 उनपर अफ़सोस, जो बतालत की तनाबों से बदकिरदारी को
और जैसे गाड़ी के रस्सों से गुनाह को खींच लाते हैं,
19 और जो कहते हैं, कि जल्दी करें और फुर्ती से अपना काम
करें कि हम देखें; और इस्राईल के क़ुद्दूस की मशवरत नज़दीक हो
और आ पहुँचे ताकि हम उसे जानें।
20 उन पर अफ़सोस, जो बदी को नेकी और नेकी को बदी कहते
हैं, और नूर की जगह तारीकी को और तारीकी की जगह नूर को
देते हैं; और शीरीनी के बदले तल्ख़ी और तल्ख़ी के बदले शीरीनी
रखते हैं!
21 उनपर अफ़सोस, जो अपनी नज़र में अक़्लमन्द और अपनी
निगाह में साहिब — ए — इम्तियाज़ हैं।
22 उनपर अफ़सोस, जो मय पीने में ताक़तवर और शराब
मिलाने में पहलवान हैं;
23 जो रिश्वत लेकर शरीरों की सादिक़ और सादिक़ों को

नारास्त ठहराते हैं!

24 फिर जिस तरह आग भूसे को खा जाती है और जलता हुआ
फूस बैठ जाता है, उसी तरह उनकी जड़ बोसीदा होगी और उनकी
कली गर्द की तरह उड़ जाएगी; क्यूँकि उन्होंने रब्ब — उल —
अफ़वाज की शरी'अत को छोड़ दिया, और इस्राईल के क़ुददूस
के कलाम को हक़ीर जाना।

25 इसलिए ख़ुदावन्द का क़हर उसके लोगों पर भड़का, और
उसने उनके ख़िलाफ़ अपना हाथ बढ़ाया और उनको मारा; चुनाँचे
पहाड़ काँप गए और उनकी लाशें बाज़ारों में ग़लाज़त की तरह
पड़ी हैं। बावजूद इसके उसका क़हर टल नहीं गया बल्कि उसका
हाथ अभी बढ़ा हुआ है।

26 और वह क़ौमों के लिए दूर से झण्डा खड़ा करेगा, और उनको
ज़मीन की इन्तिहा से सुसकार कर बुलाएगा; और देख वह दौड़े
चले आएँगें।

27 न कोई उनमें थकेगा न फिसलेगा, न कोई ऊँघेगा न सोएगा,
न उनका कमरबन्द खुलेगा और न उनकी जूतियों का तस्मा
टूटेगा।

28 उनके तीर तेज़ हैं और उनकी सब कमानें कशीदा होंगी,
उनके घोड़ों के सुम चक़माक़ और उनकी गाड़ियाँ गिर्दबाद की
तरह होंगी।

29 वह शेरनी की तरह गरजेंगे, हाँ वह जवान शेरों की तरह
दहाड़ेंगे; वह ग़ुर्रा कर शिकार पकड़ेंगे और उसे बे रोकटोक ले
जाएँगे, कोई बचानेवाला न होगा।

30 और उस रोज़ वह उन पर ऐसा शोर मचाएँगे जैसा समन्दर
का शोर होता है; और अगर कोई इस मुल्क पर नज़र करे, तो बस,
अन्धेरा और तंगहाली है, और रोशनी उसके बादलों से तारीक हो
जाती है।

6

[illegible]

1 जिस साल में उज़्ज़ियाह बादशाह ने वफ़ात पाई मैंने
ख़ुदावन्द को एक बड़ी बुलन्दी पर ऊँचे तख़्त पर बैठे देखा, और
उसके लिबास के दामन से हैकल मा'मूर हो गई।
2 उसके आस — पास सराफ़ीम खड़े थे, जिनमें से हर एक के छ:
बाज़ू थे; और हर एक दो से अपना मुँह ढाँपे था और दो से पाँव
और दो से उड़ता था।
3 और एक ने दूसरे को पुकारा और कहा, "क़ुद्दूस, क़ुद्दूस, क़ुद्दूस
रब्ब — उल — अफ़वाज है; सारी ज़मीन उसके जलाल से मा'मूर
है।"
4 और पुकारने वाले की आवाज़ के ज़ोर से आस्तानों की
बुनियादें हिल गईं, और मकान धुँवें से भर गया।
5 तब मैं बोल उठा, कि मुझ पर अफ़सोस! मैं तो बर्बाद हुआ!
क्यूँकि मेरे होंट नापाक हैं और नजिस लब लोगों में बसता हूँ,
क्यूँकि मेरी आँखों ने बादशाह रब्ब — उल — अफ़वाज को देखा!
6 उस वक़्त सराफ़ीम में से एक सुलगा हुआ कोयला जो उसने
दस्तपनाह से मज़बह पर से उठा लिया, अपने हाथ में लेकर उड़ता
हुआ मेरे पास आया,
7 और उससे मेरे मुँह को छुआ और कहा, "देख, इसने तेरे लबों
को छुआ; इसलिए तेरी बदकिरदारी दूर हुई, और तेरे गुनाह का
कफ़्फ़ारा हो गया।"
8 उस वक़्त मैंने ख़ुदावन्द की आवाज़ सुनी जिसने फ़रमाया "मैं
किसको भेजूँ और हमारी तरफ़ से कौन जाएगा?" तब मैंने 'अर्ज़
की, "मैं हाज़िर हूँ! मुझे भेज।"
9 और उसने फ़रमाया, "जा, और इन लोगों से कह, कि 'तुम
सुना करो लेकिन समझो नहीं, तुम देखा करो लेकिन बूझो नहीं।

10 तू इन लोगों के दिलों को चर्बा दे, और उनके कानों को भारी कर, और उनकी आँखें बन्द कर दे; ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें और अपने कानों से सुनें और अपने दिलों से समझ लें, और बाज़ आएँ और शिफ़ा पाएँ।"

11 तब मैंने कहा, "ऐ ख़ुदावन्द ये कब तक?" उसने जवाब दिया, "जब तक बस्तियाँ वीरान न हों और कोई बसनेवाला न रहे, और घर बे — चराग़ न हों, और ज़मीन सरासर उजाड़ न हो जाए;

12 और ख़ुदावन्द आदमियों को दूर कर दे, और इस सरज़मीन में मतरूक मक़ाम बकसरत हों।

13 और अगर उसमें दसवाँ हिस्सा बाक़ी भी बच जाए, तो वह फिर भसम किया जाएगा; लेकिन वह बुत्म और बलूत की तरह होगा कि बावजूद यह कि वह काटे जाएँ तोभी उनका टुन्ड बच रहता है, इसलिए उसका टुन्ड एक मुक़द्दस तुख़्म होगा।"

7

[illegible]

1 और शाह — ए — यहूदाह आख़ज़ बिन यूताम बिन उज़्ज़ियाह के दिनों में यूँ हुआ कि रज़ीन, शाह — ए — इराम फ़िक़ह बिन रमलियाह, शाह — ए — इस्राईल ने येरूशलेम पर चढ़ाई की; लेकिन उस पर ग़ालिब न आ सके।

2 उस वक़्त दाऊद के घराने को यह ख़बर दी गई कि अराम इफ़्राईम के साथ मुत्तहिद है इसलिए उसके दिल ने और उसके लोगों के दिलों ने यूँ जुम्बिश खाई, जैसे जंगल के दरख़्त आँधी से जुम्बिश खाते हैं।

3 तब ख़ुदावन्द ने यसा'याह को हुक्म किया, कि "तू अपने बेटे शियार याशूब को लेकर ऊपर के चश्मे की नहर के सिरे पर, जो धोबियों के मैदान के रास्ते में है, आख़ज़ से मुलाक़ात कर,

4 और उसे कह, 'ख़बरदार हो, और बेक़रार न हो; इन लुक्टियों
के दो धुवें वाले टुकड़ों से, या'नी अरामी रज़ीन और रमलियाह
के बेटे की क़हरअंगेज़ी से न डर, और तेरा दिल न घबराए।
5 चूँकि अराम और इफ़्राईम और रमलियाह का बेटा तेरे
ख़िलाफ़ मश्वरत करके कहते हैं,
6 कि आओ, हम यहूदाह पर चढ़ाई करें और उसे तंग करें, और
अपने लिए उसमें रख़ना पैदा करे और ताबील के बेटे को उसके
बीच तख़्तनशीन करें।
7 इसलिए ख़ुदावन्द ख़ुदा फ़रमाता है कि इसको पायदारी नहीं,
बल्कि ऐसा हो भी नहीं सकता।
8 क्यूँकि अराम का दारुस — सल्तनत दमिश्क़ ही होगा, और
दमिश्क़ का सरदार रज़ीन; और पैंसठ बरस के अन्दर इफ़्राईम
ऐसा कट जाएगा कि क़ौम न रहेगी।
9 इफ़्राईम का भी दारुस — सल्तनत सामरिया ही होगा, और
सामरिया का सरदार रमलियाह का बेटा। अगर तुम ईमान न
लाओगे तो यक़ीनन तुम भी क़ाईम न रहोगे।
10 फिर ख़ुदावन्द ने आख़ज़ से फ़रमाया,
11 ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा से कोई निशान तलब कर चाहे नीचे
पाताल में चाहे ऊपर बुलन्दी पर।"
12 लेकिन आख़ज़ ने कहा, कि मैं तलब नहीं करूँगा और
ख़ुदावन्द को नहीं, आज़माऊँगा।
13 तब उसने कहा, ऐ दाऊद के खान्दान, अब सुनो क्या तुम्हारा
इंसान को बेज़ार करना कोई हल्की बात है कि मेरे ख़ुदा को भी
बेज़ार करोगे?
14 लेकिन ख़ुदावन्द आप तुम को एक निशान बख़्शेगा। देखो,
एक कुँवारी हामिला होगी, और बेटा पैदा होगा और वह उसका
नाम' इम्मानुएल रख्खेगी।
15 वह दही और शहद खाएगा, जब तक कि वह नेकी और बदी
के रद्द — ओ — क़ुबूल के क़ाबिल न हो।

16 लेकिन इससे पहले कि ये लड़का नेकी और बदी के रद्द —
ओ — क़ुबूल के क़ाबिल हो, ये मुल्क जिसके दोनों बादशाहों से
तुझ को नफ़रत है, वीरान हो जाएगा।
17 ख़ुदावन्द तुझ पर और तेरे लोगों और तेरे बाप के घराने पर
ऐसे दिन लाएगा जैसे उस दिन से जब इफ़्राईम यहूदाह से जुदा
हुआ, आज तक कभी न लाया या'नी शाह — ए — असूर के दिन।
18 और उस वक़्त यूँ होगा कि ख़ुदावन्द मिस्र की नहरों के
उस सिरे पर से मक्खियों को, और असूर के मुल्क से ज़म्बूरों को
सुसकार कर बुलाएगा।
19 इसलिए वह सब आएँगे और वीरान वादियों में, और
चटटानों की दराड़ों में, और सब ख़ारिस्तानों में, और सब
चरागाहों में छा जाएँगे।
20 उसी रोज़ ख़ुदावन्द उस उस्तरे से जो दरिया — ए — फ़रात
के पार से किराये पर लिया या'नी असूर के बादशाह से, सिर और
पाँव के बाल मूण्डेगा और इससे दाढ़ी भी खुर्ची जाएगी।
21 और उस वक़्त यूँ होगा कि आदमी सिर्फ़ एक गाय और दो
भेड़ें पालेगा,
22 और उनके दूध की फ़िरावानी से लोग मक्खन खाएँगे; क्यूँकि
हर एक जो इस मुल्क में बच रहेगा मख्खन और शहद ही खाया
करेगा।
23 और उस वक़्त यह हालत हो जाएगी कि हर जगह हज़ारों
रुपये के बाग़ों की जगह ख़ारदार झाड़ियाँ होंगी।
24 लोग तीर और कमाने लेकर वहाँ आयेंगे क्यूँकि तमाम मुल्क
काँटों और झाड़ियों से पुर होगा।
25 मगर उन सब पहाड़ियों पर जो कुदाली से खोदी जाती थीं,
झाड़ियों और काँटों के ख़ौफ़ से तू फिर न चढ़ेगा लेकिन वह गाय
बैल और भेड़ बकरियों की चरागाह होंगी।

8

[illegible]

1 फिर ख़ुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, कि एक बड़ी तख़्ती ले और
उस पर साफ़ साफ़ लिख महीर शालाल हाशबज़ के लिए,'
2 और दो दियानतदार गवाहों को या'नी ऊरिय्याह काहिन को
और ज़करियाह बिन यबरकियाह को गवाह बना।
3 और मैं नबीय्या के पास गया; तब वह हामिला हुई और बेटा
पैदा हुआ। तब ख़ुदावन्द ने मुझे फ़रमाया, कि उसका नाम "महीर
— शालाल हाशबज़ रख,
4 क्यूँकि इससे पहले कि ये लड़का अब्बा और अम्मा कहना
सीखे दमिश्क़ का माल और सामरिया की लूट को उठवाकर शाह
— ए — असूर के सामने ले जाएँगे।"
5 फिर ख़ुदावन्द ने मुझ से फ़रमाया,
6 "चूँकि इन लोगों ने चश्मा — ए — शीलोख़ के आहिस्ता रो
पानी को रद्द किया, और रज़ीन और रमलियाह के बेटे पर माइल
हुए;
7 इसलिए अब देख, ख़ुदावन्द दरिया — ए — फ़रात के सख़्त
शदीद सैलाब को या 'नी शाह — ए — असूर और उसकी सारी
शौकत को, इन पर चढ़ा लाएगा; और वह अपने सब नालों पर
और अपने सब किनारों से बह निकलेगा;
8 और वह यहूदाह में बढ़ता चला जाएगा, और उसकी
तुग़ियानी बढ़ती जाएगी, वह गर्दन तक पहुँचेगा; और उसके परों
के फैलाव से तेरे मुल्क की सारी वुस'अत ऐ इम्मानुएल, छिप
जायेगी।"
9 ऐ लोगों, धूम मचाओ, लेकिन तुम टुकड़े — टुकड़े किए
जाओगे; और ऐ दूर — दूर के मुल्कों के बाशिन्दो, सुनो: कमर
बाँधों, लेकिन तुम्हारे टुकड़े — टुकड़े किए जाएँगे; कमर बाँधो,
लेकिन तुम्हारे पुर्ज़े — पुर्ज़े होंगे।

10 तुम मन्सूबा बाँधो, लेकिन वह बातिल होगा; तुम कुछ कहो,
और उसे क़याम न होगा; क्यूँकि ख़ुदा हमारे साथ है।
11 क्यूँकि ख़ुदावन्द ने जब उसका हाथ मुझ पर ग़ालिब हुआ,
और इन लोगों के रास्ते में चलने से मुझे मना' किया तो मुझ से
यूँ फ़रमाया कि,
12 "तुम उस सबको जिसे यह लोग साज़िश कहते हैं, साज़िश
न कहो, और जिससे वह डरते हैं, तुम न डरो और न घबराओ।
13 तुम रब्ब — उल — अफ़वाज ही को पाक जानो, और उसी
से डरो और उसी से ख़ाइफ़ रहो।
14 और वह एक मक़दिस होगा, लेकिन इस्राईल के दोनों घरानों
के लिए सदमा और ठोकर का पत्थर, और येरूशलेम के बाशिन्दों
के लिए फन्दा और दाम होगा।
15 उनमें से बहुत से उससे ठोकर खायेंगे और गिरेंगे और पाश
पाश होंगे, और दाम में फँसेंगे और पकड़े जाएँगे।
16 शहादत नामा बन्द कर दो, और मेरे शागिर्दों के लिए
शरी'अत पर मुहर करो।
17 मैं भी ख़ुदावन्द की राह देखूँगा, जो अब या'क़ूब के घराने से
अपना मुँह छिपाता है; मैं उसका इन्तिज़ार करूँगा।
18 देख, मैं उन लड़कों के साथ जो ख़ुदावन्द ने मुझे बख़्शे, रब्ब
— उल — अफ़वाज की तरफ़ से जो सिय्यून पहाड़ में रहता है,
बनी — इस्राईल के बीच निशान — आत और 'अजायब — ओ
— ग़राइब के लिए हूँ।
19 और जब वह तुमसे कहें, तुम जिन्नात के यारों और अफ़सूँगरों
की जो फुसफुसाते और बड़बड़ाते हैं तलाश करो, तो तुम कहो,
क्या लोगों को मुनासिब नहीं कि अपने ख़ुदा के तालिब हों? क्या
ज़िन्दों के बारे में मुर्दों से सवाल करें?"
20 शरी'अत और शहादत पर नज़र करो! अगर वह इस कलाम
के मुताबिक़ न बोलें तो उनके लिए सुबह न होगी।

21 तब वह मुल्क में भूके और ख़स्ताहाल फिरेंगे और यूँ होगा
कि जब वह भूके हों तो जान से बेज़ार होंगे, और अपने बादशाह
और अपने ख़ुदा पर ला'नत करेंगे और अपने मुँह आसमान की
तरफ़ उठाएँगे;
22 फिर ज़मीन की तरफ़ देखेंगे और नागहान तंगी और तारीकी,
या'नी ज़ुल्मत — ए — अन्दोह और तीरगी में खदेड़े जाएँगें।

9

[illegible]

1 लेकिन अन्दोहगीन की तीरगी जाती रहेगी। उसने पिछले
ज़माने में ज़बूलून और नफ़्ताली के 'इलाक़ों को ज़लील किया,
लेकिन आख़िरी ज़माने में क़ौमों के ग़लील में दरिया की तरफ़
यरदन के पार बुज़ुर्गी देगा।
2 जो लोग तारीकी में चलते थे उन्होंने बड़ी रोशनी देखी, जो
मौत के साये के मुल्क में रहते थे, उन पर नूर चमका।
3 तूने क़ौम को बढ़ाया, तूने उनकी शादमानी को ज़्यादा किया;
वह तेरे सामने ऐसे ख़ुश हैं, जैसे फ़सल काटते वक़्त और ग़नीमत
की तक़सीम के वक़्त लोग ख़ुश होते हैं।
4 क्यूँकि तूने उनके बोझ के जूए, उनके कन्धे के लठ, और उन
पर ज़ुल्म करनेवाले की लाठी को ऐसा तोड़ा है जैसा मिदियान के
दिन में किया था।
5 क्यूँकि जंग में मुसल्लह मर्दों के तमाम सिलाह और ख़ून
आलूदा कपड़े जलाने के लिए आग का ईन्धन होंगे।
6 इसलिए हमारे लिए एक लड़का तवल्लुद हुआ और हम को
एक बेटा बख़्शा गया, और सल्तनत उसके कंधे पर होगी, उसका
नाम 'अजीब सलाहकार ख़ुदा — ए — क़ादिर अब्दियत का बाप,
सलामती का शहज़ादा होगा।
7 उसकी सल्तनत के इक़बाल और सलामती की कुछ इन्तिहा
न होगी, वह दाऊद के तख़्त और उसकी ममलुकत पर आज से

हमेशा तक हुक्मरान रहेगा और 'अदालत और सदाक़त से उसे
क़याम बख़्शेगा रब्ब — उल — अफ़्वाज की ग़य्यूरी ये करेगी।
8 ख़ुदावन्द ने या'क़ूब के पास पैग़ाम भेजा, और वह इस्राईल
पर नाज़िल हुआ;
9 और सब लोग मा'लूम करेंगे, या'नी बनी इफ़्राईम और अहल
— ए — सामरिया जो तकब्बुर और सख़्त दिली से कहते हैं,
10 कि ईंटें गिर गईं लेकिन हम तराशे हुए पत्थरों की 'इमारत
बनायेंगे गूलर के दरख़्त काटे गए, लेकिन हम देवदार लगाएँगे।
11 इसलिए ख़ुदावन्द रज़ीन की मुख़ालिफ़ गिरोहों को उन पर
चढ़ा लाएगा, और उनके दुश्मनों को ख़ुद मुसल्लह करेगा।
12 आगे अरामी होंगे और पीछे फ़िलिस्ती, और वह मुँह
फैलाकर इस्राईल को निगल जाएँगे; बावजूद इसके उसका क़हर
टल नहीं गया, बल्कि उसका हाथ अभी बढ़ा हुआ है।
13 तोभी लोग अपने मारनेवाले की तरफ़ न फिरे और रब्ब —
उल — अफ़वाज के तालिब न हुए।
14 इसलिए ख़ुदावन्द इस्राईल के सिर और दुम और ख़ास —
ओ — 'आम को एक ही दिन में काट डालेगा।
15 बुज़ुर्ग और 'इज़्ज़तदार आदमी सिर है और जो नबी झूठी
बातें सिखाता है वही दुम है;
16 क्यूँकि जो इन लोगों के पेशवा हैं इनसे ख़ताकारी कराते हैं
और उनके पैरौ निगले जाएँगे।
17 ख़ुदावन्द उनके जवानों से ख़ुशनूद न होगा और वह उनके
यतीमों और उनकी बेवाओं पर कभी रहम न करेगा क्यूँकि उनमें
हर एक बेदीन और बदकिरदार है और हर एक मुँह हिमाक़त
उगलता है बावजूद इसके उसका क़हर टल नहीं गया बल्कि
उसका हाथ अभी बढ़ा हुआ है।
18 क्यूँकि शरारत आग की तरह जलाती है, वह ख़स — ओ —

ख़ार को खा जाती है; बल्कि वह जंगल की गुन्जान झाड़ियों में
शोलाज़न होती है, और वह धुंवें के बादल में ऊपर को उड़ जाती
है।
19 रब्ब — उल — अफ़वाज के क़हर से ये मुल्क जलाया गया,
और लोग ईन्धन की तरह हैं; कोई अपने भाई पर रहम नहीं
करता।
20 और कोई दहनी तरफ़ से छीनेगा लेकिन भूका रहेगा, और
वह बाएँ तरफ़ से खाएगा लेकिन सेर न होगा; उनमें से हर एक
आदमी अपने बाज़ू का गोश्त खाएगा;
21 मनस्सी इफ़्राईम का और इफ़्राईम मनस्सी का और वह
मिलकर यहूदाह के मुख़ालिफ़ होंगे। बावजूद इसके उसका क़हर
टल नहीं गया बल्कि उसका हाथ अभी बढ़ा हुआ है।

10

1 उन पर अफ़सोस जो बे इन्साफ़ी से फ़ैसले करते हैं और उन
पर जो ज़ुल्म की रूबकारें लिखते हैं;
2 ताकि ग़रीबों को 'अदालत से महरूम करें, और जो मेरे लोगों
में मोहताज हैं उनका हक़ छीन लें, और बेवाओं को लूटें, और
यतीम उनका शिकार हों!
3 इसलिए तुम मुताल्बे के दिन और उस ख़राबी के दिन, जो दूर
से आएगी क्या करोगे? तुम मदद के लिए किसके पास दौड़ोगे?
और तुम अपनी शौकत कहाँ रख छोड़ोगे?
4 वह क़ैदियों में घुसेंगे और मक़तूलों के नीचे छिपेंगे। बावजूद
इसके उसका क़हर टल नहीं गया बल्कि उसका हाथ अभी बढ़ा
हुआ है।

[illegible]

5 असूर या'नी मेरे क़हर की लाठी पर अफ़सोस! जो लठ उसके
हाथ में है, वह मेरे क़हर का हथियार है।

6 मैं उसे एक रियाकार क़ौम पर भेजूंगा, और उन लोगों की
मुख़ालिफ़त में जिन पर मेरा क़हर है; मैं उसे हुक्म — ए — क़तई
दूँगा कि माल लूटे और ग़नीमत ले ले, और उनको बाज़ारों की
कीचड़ की तरह लताड़े।
7 लेकिन उसका ये ख़याल नहीं है, और उसके दिल में ये
ख़्वाहिश नहीं कि ऐसा करे; बल्कि उसका दिल ये चाहता है कि
क़त्ल करे और बहुत सी क़ौमों को काट डाले।
8 क्यूँकि वह कहता है, "क्या मेरे हाकिम सब के सब बादशाह
नहीं?
9 क्या कलनो करकिमीस की तरह नहीं और हमात अरफ़ाद की
तरह नहीं और सामरिया दमिश्क़ की तरह नहीं है?
10 जिस तरह मेरे हाथ ने बुतों की ममलुकतें हासिल कीं,
जिनकी खोदी हुई मूरतें येरूशलेम और सामरिया की मूरतों से
कहीं बेहतर थीं;
11 क्या जैसा मैंने सामरिया से और उसके बुतों से किया, वैसा
ही येरूशलेम और उसके बुतों से न करूँगा?"
12 लेकिन यूँ होगा कि जब ख़ुदावन्द सिय्यून पहाड़ पर और
येरूशलेम में अपना सब काम कर चुकेगा, तब वह फ़रमाता है मैं
शाह — ए — असूर को उसके गुस्ताख़ दिल के समरह की और
उसकी बुलन्द नज़री और घमण्ड की सज़ा दूँगा।
13 क्यूँकि वह कहता है, मैंने अपने बाज़ू की ताक़त से और
अपनी 'अक़्ल से ये किया है, क्यूँकि मैं 'अक़्लमन्द हूँ, हाँ, मैंने
क़ौमों की हदों को सरका दिया और उनके ख़ज़ाने लूट लिए, और
मैंने बहादुरों की तरह तख़्त नशीनों को उतार दिया।
14 मेरे हाथ ने लोगों की दौलत को घोंसले की तरह पाया, और
जैसे कोई उन अंडों को जो मतरूक पड़े हों समेट ले, वैसे ही मैं
सारी ज़मीन पर क़ाबिज़ हुआ और किसी को ये हिम्मत न हुई कि
पर हिलाए या चोंच खोले या चहचहाये।

15 क्या कुल्हाड़ा उसके रू — ब — रू जो उससे काटता है
लाफ़ज़नी करेगा अर्राकश के सामने शेख़ी मारेगा जैसे 'असा
अपने उठानेवाले को हरकत देता है और छड़ी आदमी को उठाती
है।
16 इस वजह से ख़ुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज उसके
फ़र्बा जवानों पर लाग़री भेजेगा और उसकी शौकत के नीचे एक
सोज़िश आग की सोज़िश की तरह भड़काएगा।
17 बल्कि इस्राईल का नूर ही आग बन जाएगा और उसका
क़ुद्दूस एक शो'ला होगा, और वह उसके ख़स — ओ — ख़ार को
एक दिन में जलाकर भसम कर देगा।
18 और उसके बन और बाग़ की ख़ुशनुमाई को बिल्कुल बर्बाद
— ओ — हलाक कर देगा "और वह ऐसा हो जाएगा जैसा कोई
मरीज़ जो ग़श खाए।
19 और उसके बाग़ के दरख़्त ऐसे थोड़े बाक़ी बचेंगे कि एक
लड़का भी उनको गिन कर लिख ले।
20 और उस वक़्त यूँ होगा कि वह जो बनी इस्राईल में से बाक़ी
रह जाएँगे और या'क़ूब के घराने में से बच रहेंगे, उस पर जिसने
उनको मारा फिर भरोसा न करेंगे; बल्कि ख़ुदावन्द इस्राईल के
क़ुद्दूस पर सच्चे दिल से भरोसा करेंगे।
21 एक बक़िया या'नी या'क़ूब का बक़िया ख़ुदा — ए — क़ादिर
की तरफ़ फिरेगा।
22 क्यूँकि ऐ इस्राईल, तेरे लोग समन्दर की रेत की तरह हों,
तोभी उनमें का सिर्फ़ एक बक़िया वापस आएगा; बर्बादी पूरे
'अद्ल से मुक़र्रर हो चुकी है।
23 क्यूँकि ख़ुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज मुक़र्ररा बर्बादी
तमाम इस ज़मीन पर ज़ाहिर करेगा।
24 लेकिन ख़ुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है ऐ
मेरे लोगो, जो सिय्यून में बसते हो असूर से न डरो, अगरचे कि

वह तुमको लठ से मारे और मिस्र की तरह तुम पर अपना 'असा
उठाए।
25 लेकिन थोड़ी ही देर है कि जोश — ओ — ख़रोश ख़त्म
होगा और उनकी हलाकत से मेरे क़हर की तस्कीन होगी।
26 क्यूँकि रब्ब — उल — अफ़वाज मिदियान की ख़ूँरेज़ी
के मुताबिक़ जो 'ओरेब की चट्टान पर हुई, उस पर एक कोड़ा
उठाएगा; उसका 'असा समन्दर पर होगा, हाँ वह उसे मिस्र की
तरह उठाएगा।
27 और उस वक़्त यूँ होगा कि उसका बोझ तेरे कंधे पर से और
उसका बोझ तेरी गर्दन पर से उठा लिया जाएगा और वह बोझ
मसह की वजह से तोड़ा जाएगा।”
28 वह अय्यात में आया है, मज्रून में से होकर गुज़र गया; उसने
अपना अस्बाब मिकमास में रख्खा
29 वह घाटी से पार गए उन्होंने जिब'आ में रात काटी, रामा
परेशान है; जिब'आ — ए — साऊल भाग निकला है।
30 ऐ जल्लीम की बेटी, चीख़ मार! ऐ ग़रीब 'अन्तोत, अपनी
आवाज़ लईस को सुना!
31 मदमीना चल निकला, जेबीम के रहने वाले निकल भागे।
32 वह आज के दिन नोब में ख़ेमाज़न होगा तब वह दुख़्तर —
ए — सिय्यून के पहाड़ या'नी कोह — ए — येरूशलेम पर हाथ
उठा कर धमकाएगा।
33 देखो, ख़ुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज हैबतनाक तौर से
मार कर शाख़ों को छाँट डालेगा; क़द्दावर काट डाले जाएँगें और
बलन्द पस्त किए जाएँगे।
34 और वह जंगल की गुन्जान झाड़ियों को लोहे से काट
डालेगा, और लुबनान एक ज़बरदस्त के हाथ से गिर जाएगा।

11

1 और यस्सी के तने से एक कोंपल निकलेगी और उसकी जड़ों
से एक बारआवर शाख़ पैदा होगी।
2 और ख़ुदावन्द की रूह उस पर ठहरेगी हिकमत और ख़िरद
की रूह, मसलहत और क़ुदरत की रूह, मा'रिफ़त और ख़ुदावन्द
के ख़ौफ़ की रूह।
3 और उसकी शादमानी ख़ुदावन्द के ख़ौफ़ में होगी। और वह न
अपनी आँखों के देखने के मुताबिक़ इन्साफ़ करेगा, और न अपने
कानों के सुनने के मुवाफ़िक़ फ़ैसला करेगा;
4 बल्कि वह रास्ती से ग़रीबों का इन्साफ़ करेगा, और 'अद्ल
से ज़मीन के ख़ाकसारों का फ़ैसला करेगा; और वह अपनी ज़बान
के 'असा से ज़मीन को मारेगा, और अपने लबों के दम से शरीरों
को फ़ना कर डालेगा।
5 उसकी कमर का पटका रास्तबाज़ी होगी और उसके पहलू पर
वफ़ादारी का पटका होगा।
6 तब भेड़िया बर्रे के साथ रहेगा, और चीता बकरी के बच्चे
के साथ बैठेगा, और बछड़ा और शेर बच्चा और पला हुआ बैल
पेशरवी करेगा।
7 गाय और रीछनी मिलकर चरेंगी उनके बच्चे इकट्ठे बैठेंगे और
शेर — ए — बबर बैल की तरह भूसा खाएगा।
8 और दूध पीता बच्चा साँप के बिल के पास खेलेगा, और
वह लड़का जिसका दूध छुड़ाया गया हो अफ़ई के बिल में हाथ
डालेगा।
9 वह मेरे तमाम पाक पहाड़ पर न नुक़्सान पहुँचाएँगें न हलाक
करेंगे क्यूँकि जिस तरह समन्दर पानी से भरा है उसी तरह ज़मीन
ख़ुदावन्द के इरफ़ान से मा'मूर होगी।
10 और उस वक़्त यूँ होगा कि लोग यस्सी की उस जड़ के
तालिब होंगे, जो लोगों के लिए एक निशान है; और उसकी
आरामगाह जलाली होगी।
11 उस वक़्त यूँ होगा कि ख़ुदावन्द दूसरी मर्तबा अपना हाथ

बढ़ाएगा कि अपने लोगों का बक़िया या जो बच रहा हो, असूर
और मिस्र और फ़त्रूस और कूश और इलाम और सिन'आर और
हमात और समन्दर की अतराफ़ से वापस लाए।
12 और वह क़ौमों के लिए एक झंडा खड़ा करेगा और उन
इस्राईलियों को जो ख़ारिज किए गए हों जमा' करेगा; और सब
बनी यहूदाह को जो तितर बितर होंगे, ज़मीन के चारों तरफ़ से
इकट्ठा करेगा।
13 तब बनी इफ़्राईम में हसद न रहेगा और बनी यहूदाह के
दुश्मन काट डाले जाएँगे, बनी इफ़्राईम बनी यहूदाह पर हसद न
करेंगे और बनी यहूदाह बनी इफ़्राईम से कीना न रख्खेंगे।
14 और वह पश्चिम की तरफ़ फ़िलिस्तियों के कंधों पर झपटेंगे,
और वह मिलकर पूरब के बसनेवालों को लूटेंगे, और अदोम और
मोआब पर हाथ डालेंगे; और बनी 'अम्मोन उनके फ़रमाबरदार
होंगे।
15 तब ख़ुदावन्द बहर — ए — मिस्र की ख़लीज को बिल्कुल
हलाक कर देगा, और अपनी बाद — ए — समूम से दरिया —
ए — फ़रात पर हाथ चलाएगा और उसको सात नाले कर देगा,
ऐसा करेगा कि लोग जूते पहने हुऐ पार चले जाएँगे।
16 और उसके बाक़ी लोगों के लिए जो असूर में से बच रहेंगे,
एक ऐसी शाहराह होगी जैसी बनी — इस्राईल के लिए थी, जब
वह मुल्क — ए — मिस्र से निकले।

12

[illegible]

1 और उस वक़्त तू कहेगा, ऐ ख़ुदावन्द मैं तेरी तम्जीद करूँगा;
कि अगरचे तू मुझ से नाख़ुश था, तोभी तेरा क़हर टल गया और
तूने मुझे तसल्ली दी।

2 "देखो, ख़ुदा मेरी नजात है; मैं उस पर भरोसा करूँगा और न
डरूँगा, क्यूँकि याह — यहोवाह मेरा ज़ोर और मेरा सरोद है और
वह मेरी नजात हुआ है।"
3 फिर तुम ख़ुश होकर नजात के चश्मों से पानी भरोगे।
4 और उस वक़्त तुम कहोगे, ख़ुदावन्द की तम्जीद करो, उससे
दु'आ करो लोगों के बीच उसके कामों का बयान करो, और कहो
कि उसका नाम बुलन्द है।
5 "ख़ुदावन्द की मदह सराई करो; क्यूँकि उसने जलाली काम
किये जिनको तमाम दुनिया जानती है।
6 ऐ सिय्यून की बसनेवाली, तू चिल्ला और ललकार; क्यूँकि
तुझमें इस्राईल का क़ुद्दूस बुज़ुर्ग है।"

13

[illegible]

1 बाबुल के बारे में नबुव्वत जो यसा'याह — बिन — आमूस ने
ख़्वाब में पाया।
2 तुम नंगे पहाड़ पर एक झण्डा खड़ा करो, उनको बुलन्द
आवाज़ से पुकारो और हाथ से इशारा करो कि वह सरदारों के
दरवाज़ों के अन्दर जाएँ।
3 मैंने अपने मख़्सूस लोगों को हुक्म किया; मैंने अपने बहादुरों
को जो मेरी ख़ुदावन्दी से मसरूर हैं, बुलाया है कि वह मेरे क़हर
को अन्जाम दें।
4 पहाड़ों में एक हुजूम का शोर है, जैसे बड़े लश्कर का!
ममलुकत की क़ौमों के इजितमा'अ का ग़ोग़ा है। रब्ब — उल
— अफ़वाज जंग के लिए लश्कर जमा' करता है।
5 वह दूर मुल्क से आसमान की इन्तिहा से आते हैं, हाँ ख़ुदावन्द
और उसके क़हर के हथियार, ताकि तमाम मुल्क को बर्बाद करें।

6 अब तुम वावैला करो, क्यूँकि ख़ुदावन्द का दिन नज़दीक है;
वह क़ादिर — ए — मुतलक़ की तरफ़ से बड़ी हलाकत की तरह
आएगा।
7 इसलिए सब हाथ ढीले होंगे, और हर एक का दिल पिघल
जाएगा,
8 और वह परेशान होंगे जाँकनी और ग़मगीनी उनको आ लेगी
वह ऐसे दर्द में मुब्तिला होंगे जैसे औरत ज़िह की हालत में।
वह सरासीमा होकर एक दूसरे का मुँह देखेंगे, और उनके चहरे
शो'लानुमा होंगे।
9 देखो ख़ुदावन्द का वह दिन आता है जो ग़ज़ब में और क़हर
— ए — शदीद में सख़्त दुरुस्त हैं, ताकि मुल्क को वीरान करे और
गुनाहगारों को उस पर से बर्बाद — ओ — हलाक कर दे।
10 क्यूँकि आसमान के सितारे और कवाकिब बेनूर हो जायेंगे,
और सूरज तुलू' होते होते तारीक हो जाएगा और चाँद अपनी
रोशनी न देगा।
11 और मैं जहान को उसकी बुराई की वजह से, और शरीरों
को उनकी बदकिरदारी की सज़ा दूँगा; और मैं मग़रूरों का ग़ुरूर
हलाक और हैबतनाक लोगों का घमण्ड पस्त कर दूँगा।
12 मैं आदमी को ख़ालिस सोने से, बल्कि इंसान को ओफ़ीर के
कुन्दन से भी कमयाब बनाऊँगा।
13 इसलिए मैं आसमानों को लरज़ाऊँगा, और रब्ब — उल —
अफ़वाज के ग़ज़ब से और उसके क़हर — ए — शदीद के रोज़
ज़मीन अपनी जगह से झटकी जाएगी।
14 और यूँ होगा कि वह खदेड़े हुए आहू, और लावारिस भेड़ों
की तरह होंगे; उनमें से हर एक अपने लोगों की तरफ़ मुतवज्जिह
होगा, और हर एक अपने वतन को भागेगा।
15 हर एक जो मिल जाए आर — पार छेदा जाएगा, और हर
एक जो पकड़ा जाए तलवार से क़त्ल किया जाएगा।
16 और उनके बाल बच्चे उनकी आँखों के सामने पार — पारा

होंगे; उनके घर लूटे जाएँगे, और उनकी 'औरतों की बेहुरमती
होगी।
17 देखो मैं मादियों को उनके ख़िलाफ़ बरअंगेख़ता करूँगा, जो
चाँदी को ख़ातिर में नहीं लाते और सोने से ख़ुश नहीं होते।
18 उनकी कमानें जवानों को टुकड़े — टुकड़े कर डालेंगी और
वह शीरख़्वारों पर तरस न खाएँगे, और छोटे बच्चों पर रहम की
नज़र न करेंगे।
19 और बाबुल जो ममलुकतों की हशमत और कस्दियों की
बुज़ुर्गी की रोनक़ है सदूम और 'अमूरा की तरह हो जाएगा जिनको
ख़ुदा ने उलट दिया।
20 वह हमेशा तक आबाद न होगा और नसल — दर — नसल
उसमें कोई न बसेगा; हरगिज़ 'अरब ख़ेमें न लगाएँगे, वहाँ गड़रिये
गल्लों को न भटकायेंगे
21 लेकिन जंगल के जंगली दरिन्दे वहाँ बैठेगे और उनके घरों में
उल्लू भरे होंगे; वहाँ शुतरमुर्ग़ बसेंगे, और छुगमानस वहाँ नाचेंगे।
22 और गीदड़ उनके 'आलीशान मकानों में और भेड़िये उनके
रंगमहलों में चिल्लाएँगे; उसका वक़्त नज़दीक आ पहुँचा है, और
उसके दिनों को अब तूल नहीं होगा।

14

[illegible]

1 क्यूँकि ख़ुदावन्द या'क़ूब पर रहम फ़रमाएगा, बल्कि वह
इस्राईल को भी बरगुज़ीदा करेगा और उनको उनके मुल्क में फिर
क़ाईम करेगा और परदेसी उनके साथ मेल करेंगे और या'क़ूब के
घराने से मिल जाएँगे।
2 और लोग उनको लाकर उनके मुल्क में पहुंचाएगे और
इस्राईल का घराना ख़ुदावन्द की सरज़मीन में उनका मालिक
होकर उनको ग़ुलाम और लौंडियाँ बनाएगा क्यूँकि वह अपने

ग़ुलाम करने वालों को ग़ुलाम करेंगे, और अपने ज़ुल्म करने वालों
पर हुकूमत करेंगे।
3 और यूँ होगा कि जब ख़ुदावन्द तुझे तेरी मेहनत — ओ —
मशक़्क़त से, और सख़्त ख़िदमत से जो उन्होंने तुझ से कराई,
राहत बख़्शेगा,
4 तब तू शाह — ए — बाबुल के ख़िलाफ़ यह मसल लाएगा
और कहेगा, कि 'ज़ालिम कैसा हलाक हो गया, और ग़ासिब कैसा
हलाक हुआ।
5 ख़ुदावन्द ने शरीरों का लठ, या'नी बेइन्साफ़ हाकिमों का
'असा तोड़ डाला;
6 वही जो लोगों को क़हर से मारता रहा और क़ौमों पर ग़ज़ब
के साथ हुक्मरानी करता रहा, और कोई रोक न सका।
7 सारी ज़मीन पर आराम — ओ — आसाइश है, वह अचानक
गीत गाने लगते हैं।
8 हाँ, सनोबर के दरख़्त और लुबनान के देवदार तुझ पर यह
कहते हुए ख़ुशी करते हैं, कि 'जब से तू गिराया गया, तब से कोई
काटनेवाला हमारी तरफ़ नहीं आया।
9 पाताल नीचे से तेरी वजह से जुम्बिश खाता है कि तेरे आते
वक़्त तेरा इस्तक़बाल करे; वह तेरे लिए मुर्दों को या'नी ज़मीन के
सब सरदारों को जगाता है; वह क़ौमों के सब बादशाहों को उनके
तख़्तों पर से उठा खड़ा करता है।
10 वह सब तुझ से कहेंगे, क्या तू भी हमारी तरह 'आजिज़ हो
गया; तू ऐसा हो गया जैसे हम हैं?'
11 तेरी शान — ओ — शौकत और तेरे साज़ों की ख़ुश आवाज़ी
पाताल में उतारी गई; तेरे नीचे कीड़ों का फ़र्श हुआ, और कीड़े ही
तेरा बालापोश बने।
12 ऐ सुबह के सितारे, तू क्यूँकर आसमान से गिर पड़ा। ऐ क़ौमों
को पस्त करनेवाले, तू क्यूँकर ज़मीन पर पटका गया!

13 तू तो अपने दिल में कहता था, मैं आसमान पर चढ़ जाऊँगा;
मैं अपने तख़्त को ख़ुदा के सितारों से भी ऊँचा करूँगा, और मैं
उत्तरी अतराफ़ में जमा'अत के पहाड़ पर बैठूँगा;
14 मैं बादलों से भी ऊपर चढ़ जाऊँगा, मैं ख़ुदा त'आला की
तरह हूँगा।
15 लेकिन तू पाताल में गढ़े की तह में उतारा जाएगा।
16 और जिनकी नज़र तुझ पर पड़ेगी, तुझे ग़ौर से देखकर
कहेंगे, 'क्या यह वही शख़्स है जिसने ज़मीन को लरज़ाया और
ममलुकतों को हिला दिया;
17 जिसने जहान को वीरान किया और उसकी बस्तियाँ उजाड़
दीं, जिसने अपने ग़ुलामों को आज़ाद न किया कि घर की तरफ़
जाएँ?
18 क़ौमों के तमाम बादशाह सब के सब अपने अपने घर में
शौकत के साथ आराम करते हैं,
19 लेकिन तू अपनी क़ब्र से बाहर, निकम्मी शाख़ की तरह
निकाल फेंका गया; तू उन मक़तूलों के नीचे दबा है जो तलवार
से छेदे गए और गढ़े के पत्थरों पर गिरे हैं, उस लाश की तरह जो
पाँवों से लताड़ी गई हो।
20 तू उनके साथ कभी क़ब्र में दफ़न न किया जाएगा, क्यूँकि
तूने अपनी ममलुकत को वीरान किया और अपनी र'अय्यत को
क़त्ल किया, "बदकिरदारों की नस्ल का नाम बाक़ी न रहेगा।
21 उसके फ़र्ज़न्दों के लिए उनके बाप दादा के गुनाहों की वजह
से क़त्ल का सामान तैयार करो, ताकि वह फिर उठ कर मुल्क के
मालिक न हो जाएँ और इस ज़मीन को शहरों से मा'मूर न करें।"
22 क्यूँकि रब्ब — उल — अफ़्वाज फ़रमाता है, मैं उनकी
मुख़ालिफ़त को उठूँगा, और मैं बाबुल का नाम मिटाऊँगा और
उनको जो बाक़ी हैं, बेटों और पोतों के साथ काट डालूँगा; यह
ख़ुदावन्द का फ़रमान है।

23 रब्ब — उल — अफ़्वाज फरमाता है "मैं उसे ख़ार पुश्त की
मीरास और तालाब बना दूँगा और उसे फ़ना के झाड़ू से साफ़ कर
दूँगा।"

24 रब्ब — उल — अफ़्वाज क़सम खाकर फ़रमाता है, कि
यक़ीनन जैसा मैंने चाहा वैसा ही हो जाएगा; और जैसा मैंने
इरादा किया है, वही वजूद में आयेगा।

25 मैं अपने ही मुल्क में असूरी को शिकस्त दूँगा, और अपने
पहाड़ों पर उसे पाँव तले लताड़ूँगा; तब उसका जूआ उन पर से
उतरेगा, और उसका बोझ उनके कंधों पर से टलेगा।

26 सारी दुनिया के ज़रिए' यही है, और सब क़ौमों पर यही हाथ
बढ़ाया गया है।

27 क्यूँकि रब्ब — उल — अफ़्वाज ने इरादा किया है, कौन
उसे बातिल करेगा? और उसका हाथ बढ़ाया गया है, उसे कौन
रोकेगा?

28 जिस साल आख़ज़ बादशाह ने वफ़ात पाई उसी साल यह
बार — ए — नबुव्वत आया:

29 "ऐ कुल फ़िलिस्तीन, तू इस पर ख़ुश न हो कि तुझे मारने
वाला लठ टूट गया; क्यूँकि साँप की अस्ल से एक नाग निकलेगा,
और उसका फल एक उड़नेवाला आग का साँप होगा।

30 तब ग़रीबों के पहलौठे खाएँगे, और मोहताज आराम से
सोएँगे; लेकिन मैं तेरी जड़ काल से बर्बाद कर दूँगा, और तेरे
बाक़ी लोग क़त्ल किए जाएँगे।

31 ऐ फाटक, तू वावैला कर; ऐ शहर, तू चिल्ला; ऐ फ़िलिस्तीन,
तू बिल्कुल गुदाज़ हो गई! क्यूँकि उत्तर से एक धुंवा उठेगा और
उसके लश्करों में से कोई पीछे न रह जाएगा।"

32 उस वक़्त क़ौम के क़ासिदों को कोई क्या जवाब देगा? कि
'ख़ुदावन्द ने सिय्यून को ता'मीर किया है, और उसमें उसके ग़रीब
बन्दे पनाह लेंगे।

15

[illegible]

1 मुआब के बारे में नबुव्वत:एक ही रात में 'आर — ए —
मोआब ख़राब और हलाक हो गया; एक ही रात में क़ीर — ए
— मोआब ख़राब और हलाक हो गया।
2 बैत और दीबोन ऊँचे मक़ामों पर रोने के लिए चढ़ गए हैं; नबू
और मीदबा पर अहल — ए — मोआब वावैला करते हैं; उन सब
के सिर मुण्डाए गए और हर एक की दाढ़ी काटी गई।
3 वह अपनी राहों में टाट का कमरबन्द बाँधते हैं, और अपने
घरों की छतों पर और बाज़ारों में नौहा करते हुए सब के सब ज़ार
ज़ार रोते हैं।
4 हस्बोन और इली'आली वावैला करते हैं उनकी आवाज़ यहज़
तक सुनाई देती है; इस पर मोआब के मुसल्लह सिपाही चिल्ला
चिल्ला कर रोते हैं उसकी जान उसमें थरथराती है।
5 मेरा दिल मोआब के लिए फ़रियाद करता उसके भागने वाले
ज़ुग़र तक 'अजलत शलेशियाह तक पहुँचे हाँ वह लूहीत की
चढ़ाई पर रोते हुए चढ़ जाते, और होरोनायम की राह में हलाकत
पर वावैला करते हैं।
6 क्यूँकि निमरियम की नहरें ख़राब हो गईं क्यूँकि घास कुम्ला
गई और सब्ज़ा मुरझा गया और रोयदगी का नाम न रहा।
7 इसलिए वह फ़िरावान माल जो उन्होंने हासिल किया था,
और ज़ख़ीरा जो उन्होंने रख छोड़ा था, बेद की नदी के पार ले
जाएँगे।
8 क्यूँकि फ़रियाद मोआब की सरहदों तक और उनका नौहा
इजलाइम तक और उनका मातम बैर एलीम तक पहुँच गया है।
9 क्यूँकि दीमोन की नदियाँ ख़ून से भरी हैं मैं दीमोन पर ज़्यादा
मुसीबत लाऊँगा क्यूँकि उस पर जो मोआब में से बचकर भागेगा
और उस मुल्क के बाक़ी लोगों पर एक शेर — ए — बबर भेजूँगा।

16

1 सिला' से वीराने की राह दुख़्तर — ए — सिय्यून के पहाड़
पर मुल्क के हाकिम के पास बर्रे भेजो।
2 क्यूँकि अरनून के घाटों पर मोआब की बेटियाँ, आवारा
परिन्दों और उनके तितर बितर बच्चों की तरह होंगी।
3 सलाह दो, इन्साफ़ करो, अपना साया, दोपहर को रात की
तरह बनाओ; जिलावतनों को पनाह दो; फ़रारियों को हवाले न
करो।
4 मेरे जिलावतन तेरे साथ रहें, तू मोआब को ग़ारतगरों से
छिपा ले; क्यूँकि सितमगर ख़त्म होंगे और ग़ारतगरी तमाम हो
जाएगी और सब ज़ालिम मुल्क से फ़ना होंगे।
5 यूँ तख़्त रहमत से क़ाईम न होगा, और एक शख़्स रास्ती
से दाऊद के ख़ेमे में उस पर जुलूस फ़रमा कर 'अद्ल की पैरवी
करेगा, और रास्तबाज़ी पर मुस्त'इद रहेगा।
6 हम ने मोआब के घमण्ड के ज़रिए' सुना है कि वह बड़ा
घमण्डी है; उसका तकब्बुर और घमण्ड और क़हर भी सुना है,
उसकी शेख़ी हेच है।
7 इसलिए मोआब वावैला करेगा, मोआब के लिए हर एक
वावैला करेगा; क़ीर हिरासत की किशमिश की टिक्कियों पर तुम
सख़्त तबाह हाली में मातम करोगे।
8 क्यूँकि हस्बोन के खेत सूख गए, क़ौमों के सरदारों ने सिबमाह
की ताक की बहतरीन शाख़ों को तोड़ डाला; वह या'ज़ेर तक बढ़ीं,
वह जंगल में भी फैलीं; उसकी शाख़ें दूर तक फैल गईं, वह दरिया
पार गुज़री।
9 फिर मैं या'ज़ेर के आह — ओ — नाले से सिबमाह की ताक के
लिए ज़ारी करूँगा ऐ हस्बून ऐ इली'आली मैं तुझे अपने आँसुओं
से तर कर दूँगा, क्यूँकि तेरे दिनों गर्मी के मेवों और ग़ल्ले की फ़सल
को ग़ोग़ा — ए — जंग ने आ लिया;

10 और शादमानी छीन ली गई और हरे भरे खेतों की ख़ुशी
जाती रही; और ताकिस्तानों में गाना और ललकारना बन्द हो
जाएगा; पामाल करनेवाले अंगूरों को फिर हौज़ों में पामाल न
करेंगे; मैंने अंगूर की फ़सल के ग़ल्ले को ख़त्म कर दिया।
11 इसलिए मेरा अन्दरून मोआब पर और मेरा दिल कीर हारस
पर बरबत की तरह फ़ुग़ा खेज़ है।
12 और यूँ होगा कि जब मोआब हाज़िर हो और ऊँचे मक़ाम
पर अपने आपको थकाए बल्कि अपने मा'बद में जाकर दुआ करे,
उसे कुछ फ़ायदा न होगा।
13 यह वह कलाम है जो ख़ुदावन्द ने मोआब के हक़ में पिछले
ज़माने में फ़रमाया था
14 लेकिन अब ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तीन बरस के अन्दर
जो मज़दूरों के बरसों की तरह हों, मोआब की शौकत उसके तमाम
लश्करों के साथ हक़ीर हो जाएगी; और बहुत थोड़े बाक़ी बचेंगे,
और वह किसी हिसाब में न होंगे।

17

[illegible]

1 दमिश्क़ के बारे में बार — ए — नबुव्वत, "देखो दमिश्क़ अब
तो शहर न रहेगा, बल्कि खण्डर का ढेर होगा।
2 'अरो'ईर की बस्तियाँ वीरान हैं और ग़ल्लों की चरागाहें होंगी;
वह वहाँ बैठेंगे, और कोई उनके डराने को भी वहाँ न होगा।
3 और इफ़्राईम में कोई क़िला' न रहेगा, दमिश्क़ और अराम
के बक़िए से सल्तनत जाती रहेगी; रब्ब — उल — अफ़वाज
फ़रमाता है, जो हाल बनी — इस्राईल की शौकत का हुआ वही
उनका होगा।
4 और उस वक़्त यूँ होगा कि या'क़ूब की हश्मत घट जाएगी,
और उसका चर्बीदार बदन दुबला हो जाएगा।

5 यह ऐसा होगा जैसा कोई खड़े खेत काटकर ग़ल्ला जमा'
करे और अपने हाथ से बालें तोड़े; बल्कि ऐसा होगा जैसा कोई
रिफ़ाईम की वादी में ख़ोशाचीनी करे।
6 ख़ुदावन्द इस्राईल का ख़ुदा फ़रमाता है कि तब उसका बक़िया
बहुत ही थोड़ा होगा, जैसे ज़ैतून के दरख़्त का जब वह हिलाया
जाए, या'नी दो तीन दाने चोटी की शाख़ पर, चार पाँच फलवाले
दरख़्त की बैरूनी शाख़ों पर।
7 उस रोज़ इंसान अपने ख़ालिक़ की तरफ़ नज़र करेगा और
उसकी आँखें इस्राईल के क़ुद्दूस की तरफ़ देखेंगी;
8 और वह मज़बहों या'नी अपने हाथ के काम पर नज़र न
करेगा, और अपनी दस्तकारी या'नी यसीरतों और बुतों की परवा
न करेगा।
9 उस वक़्त उसके फ़सीलदार शहर उजड़े जंगल और पहाड़
की चोटी पर के मक़ामात की तरह होंगे; जो बनी — इस्राईल के
सामने उजड़ गए, और वहाँ वीरानी होगी।
10 चूँकि तूने अपने नजात देनेवाले ख़ुदा को फ़रामोश किया,
और अपनी तवानाई की चट्टान को याद न किया; इसलिए तू
ख़ूबसूरत पौधे लगाता और 'अजीब कलमें उसमें जमाता है।
11 लगाते वक़्त उसके चारों तरफ़ अहाता बनाता है, और सुबह
को उसमें फूल खिलते हैं; लेकिन उसका हासिल दुख और सख़्त
मुसीबत के वक़्त बेकार है।
12 आह! बहुत से लोगों का हंगामा है! जो समन्दर के शोर की
तरह शोर मचाते हैं, और उम्मतों का धावा बड़े सैलाब के रेले की
तरह है।
13 उम्मतें सैलाब — ए — 'अज़ीम की तरह आ पड़ेंगी; लेकिन
वह उनको डाँटेगा, और वह दूर भाग जाएँगी, और उस भूसे की
तरह जो टीलों के ऊपर आँधी से उड़ता फिरे और उस गर्द की तरह
जो बगोले में चक्कर खाए रगेदी जाएँगी।

14 शाम के वक़्त तो हैबत है! सुबह होने से पहले वह हलाक हैं!
ये हमारे ग़ारतगरों का हिस्सा और हम को लूटनेवालों का हिस्सा
है।

18

[illegible]

1 आह! परों के फड़फड़ाने की सर ज़मीन जो कूश की नदियों
के पार है।
2 जो दरिया की राह से बुर्दी की क़श्तियों में सतह — ए — आब
पर क़ासिद भेजती है! ऐ तेज़ रफ़्तार क़ासिदों, उस क़ौम के पास
जाओ जो ताक़तवर और ख़ूबसूरत है; उस क़ौम के पास जो शुरू'
से अब तक मुहीब है, ऐसी क़ौम जो ज़बरदस्त और फ़तहयाब है
जिसकी ज़मीन नदियों से मुन्क़सम है।
3 ऐ जहान के तमाम बाशिन्दो, और ऐ ज़मीन के रहनेवालो,
जब पहाड़ों पर झण्डा खड़ा किया जाए तो देखो और जब नरसिंगा
फूँका जाए तो सुनो।
4 क्यूँकि ख़ुदावन्द ने मुझ से यूँ फ़रमाया है: कि अपने घर में
ताबिश — ए — आफ़ताब की तरह और मौसिम — ए — दिरौ की
गर्मी में शबनम के बादल की तरह सुकून के साथ नज़र करूँगा।"
5 क्यूँकि फ़सल से पहले जब कली खिल चुके और फूल की
जगह अँगूर पकने पर हों, तो वह टहनियों को हसुवे से काट
डालेगा और फैली हुई शाख़ों को छाँट देगा।
6 और वह पहाड़ के शिकारी परिन्दों और मैदान के दरिन्दों के
लिए पड़ी रहेंगी; और शिकारी परिन्दे गर्मी के मौसम में उन पर
बैठेंगे, ज़मीन के सब दरिन्दे जाड़े के मौसम में उन पर लेटेंगे।
7 उस वक़्त रब्ब — उल — अफ़वाज के सामने उस क़ौम की
तरफ़ से जो ताक़तवर और ख़ूबसूरत है, गिरोह की तरफ़ से जो
शुरू' से आज तक मुहीब है, उस क़ौम से जो ज़बरदस्त और

ज़फ़रयाब है जिसकी ज़मीन नदियों से बँटी है एक हदिया रब्ब
— उल — अफ़वाज के नाम के मकान पर जो सिय्यून पहाड़ में
है पहुँचाया जाएगा।

19

?????? ?? ????? ?? ??????

1 मिस्र के बारे में नबुव्वत देखो ख़ुदावन्द एक तेज़ रू बादल
पर सवार होकर मिस्र में आता है, और मिस्र के बुत उसके सामने
लरज़ाँ होंगे और मिस्र का दिल पिघल जाएगा।
2 और मैं मिस्रियों को आपस में मुख़ालिफ़ कर दूँगा; उनमें हर
एक अपने भाई से और हर एक अपने पड़ोसी से लड़ेगा, शहर —
शहर से और सूबे — सूबे से;
3 और मिस्र की रूह अफ़सुर्दा हो जाएगी, और मैं उसके मन्सूबे
को फ़ना करूँगा; और वह बुतों और अफ़सूँगरों और जिन्नात के
यारों और जादूगरों की तलाश करेंगे।
4 लेकिन मैं मिस्रियों को एक सितमगर हाकिम के क़ाबू में
कर दूँगा, और ज़बरदस्त बादशाह उन पर सल्तनत करेगा; यह
ख़ुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज का फ़रमान है।
5 और दरिया का पानी सूख जाएगा, और नदी ख़ुश्क और
ख़ाली हो जाएगी।
6 और नाले बदबू हो जाएँगे, और मिस्र की नहरें ख़ाली होंगी
और सूख जाएँगी, और बेद और ने मुरझा जाएँगे।
7 दरिया-ए-नील के किनारे की चरागाहें और वह सब चीज़ें जो
उसके आस — पास बोई जाती हैं मुरझा जायेंगी और बिल्कुल
बर्बाद — ओ — हलाक हो जाएँगी।
8 तब माहीगीर मातम करेंगे, और वह सब जो दरिया-ए-नील
में शस्त डालते हैं ग़मगीन होंगे; और पानी में जाल डालने वाले
बहुत बेताब हो जाएँगे।

9 और सन झाड़ने और कतान बुननेवाले घबरा जाएँगे।
10 हाँ उसके अरकान शिकस्ता और तमाम मज़दूर रंजीदा
ख़ातिर होंगे
11 जुअन के शहज़ादे बिल्कुल बेवक़ूफ़ हैं फ़िर'औन के सबसे
'अक़्लमन्द सलाहकारों की मश्वरत वहशियाना ठहरी। फिर तुम
क्यूँकर फ़िर'औन से कहते हो, कि मैं 'अक़्लमन्दों का फ़र्ज़न्द और
शाहान — ए — क़दीम की नसल हूँ?
12 अब तेरे 'अक़्लमन्द कहाँ है? वह तुझे ख़बर दें, अगर वह
जानते होते कि रब्ब — उल — अफ़वाज ने मिस्र के हक़ में क्या
इरादा किया है।
13 जुअन के शहज़ादे बेवक़ूफ़ बन गए हैं, नूफ़ के शहज़ादों ने
धोखा खाया और जिन पर मिस्री क़बाइल का भरोसा था उन्हीं ने
उनको गुमराह किया।
14 ख़ुदावन्द ने कजरवी की रूह उनमें डाल दी है और उन्होंने
मिस्रियों को उनके सब कामों में उस मतवाले की तरह भटकाया
जो उलटी करते हुए डगमगाता है।
15 और मिस्रियों का कोई काम न होगा, जो सिर या दुम या
ख़ास — ओ — 'आम कर सके।
16 उस वक़्त रब्ब — उल — अफ़वाज के हाथ चलाने से जो
वह मिस्र पर चलाएगा, मिस्री 'औरतों की तरह हो जायेंगे, और
हैबतज़दह और परेशान होंगे।
17 तब यहूदाह का मुल्क मिस्र के लिए दहशत नाक होगा, हर
एक जिससे उसका ज़िक्र हो ख़ौफ़ खाएगा; उस इरादे की वजह से
जो रब्ब — उल — अफ़वाज ने उनके ख़िलाफ़ कर रखखा है।
18 उस रोज़ मुल्क — ए — मिस्र में पाँच शहर होंगे जो कना'नी
ज़बान बोलेंगे, और रब्ब — उल — अफ़वाज की क़सम खाएँगे;
उनमें से एक का नाम शहर — ए — आफ़ताब होगा।
19 उस वक़्त मुल्क — ए — मिस्र के वस्त में ख़ुदावन्द का एक

मज़बह और उसकी सरहद पर ख़ुदावन्द का एक सुतून होगा।
20 और वह मुल्क — ए — मिस्र में रब्ब — उल — अफ़वाज
के लिए निशान और गवाह होगा; इसलिए कि वह सितमगरों के
ज़ुल्म से ख़ुदावन्द से फ़रियाद करेंगे, और वह उनके लिए रिहाई
देने वाला और हामी भेजेगा, और वह उनको रिहाई देगा।
21 और ख़ुदावन्द अपने आपको मिस्रियों पर ज़ाहिर करेगा और
उस वक़्त मिस्री ख़ुदावन्द को पहचानेंगे, और ज़बीहे और हदिये
पेश करेंगे; हाँ, वह ख़ुदावन्द के लिए मिन्नत माँनेंगे और अदा
करेंगे।
22 और ख़ुदावन्द मिस्रियों को मारेगा, मारेगा और शिफ़ा
बख़्शेगा; और वह ख़ुदावन्द की तरफ़ रूजू' लाएँगे और वह उनकी
दुआ सुनेगा, और उनको सेहत बख़्शेगा।
23 उस वक़्त मिस्र से असूर तक एक शाह — ए — राह होगी
और असूरी मिस्र में आएँगें और मिस्री असूर को जाएँगे, मिस्री
असूरियों के साथ मिलकर इबादत करेंगे।
24 तब इस्राईल मिस्र और असूर के साथ तीसरा होगा, और
इस ज़मीन पर बरकत का ज़रिए' आ ठहरेगा।
25 क्यूँकि रब्ब — उल — अफ़वाज उनको बरकत बख़्शेगा
और फ़रमाएगा मुबारक हो मिस्री मेरी उम्मत असूर मेरे हाथ की
सन'अत और इस्राईल मेरी मीरास।

20

[illegible]

1 जिस साल सरजून शाह — ए — असूर ने तरतान को अशदूद
की तरफ़ भेजा, और उसने आकर अशदूद से लड़ाई की और उसे
फ़तह कर लिया;
2 उस वक़्त ख़ुदावन्द ने यसा'याह बिन आमूस के ज़रिए' यूँ
फ़रमाया, कि जा और टाट का लिबास अपनी कमर से खोल

डाल और अपने पाँवों से जूते उतार, तब उसने ऐसा ही किया,
वह बरहना और नंगे पाँव फिरा करता था।
3 तब ख़ुदावन्द ने फ़रमाया, जिस तरह मेरा बन्दा यसा'याह
तीन बरस तक बरहना और नंगे पाँव फिरा किया, ताकि मिस्रियों
और कूशियों के बारे में निशान और ता'अज्जुब हो।
4 उसी तरह शाह — ए — असूर मिस्री ग़ुलामों और कूशी
जिलावतनों को क्या बूढ़े क्या जवान बरहना और नंगे पाँव और
बेपर्दा सुरनियों के साथ मिस्रियों की रुस्वाई के लिए ले जाएगा।
5 तब वह परेशान होंगे और कूश से जो उनकी उम्मीदगाह थी,
और मिस्र से जो उनका घमण्ड था, शर्मिन्दा होंगे।
6 और उस वक़्त इस साहिल के बाशिन्दे कहेंगे देखो हमारी
उम्मीदगाह का यह हाल हुआ जिसमें हम मदद के लिए भागे
ताकि असूर के बादशाह से बच जाएँ फिर हम किस तरह रिहाई
पायें।

21

[illegible]

1 दश्त — ए — दरिया के बारे में नबुवत:जिस तरह दक्खिनी
हवा ज़ोर से चली आती है, उसी तरह वह दश्त से और मुहीब
सरज़मीन से नज़दीक आ रहा है।
2 एक हौलनाक ख़्वाब मुझे नज़र आया; दग़ाबाज़ दग़ाबाज़ी
करता है; और ग़ारतगर ग़ारत करता है ऐ ऐलाम, चढ़ाई कर; ऐ
मादै, मुहासिरा कर; मैं वह सब कराहना जो उसकी वजह से हुआ,
ख़त्म करता हूँ।
3 इसलिए मेरी कमर में सख़्त दर्द है, मैं जैसे दर्द — ए — ज़िह
में तड़पता हूँ, मैं ऐसा परेशान हूँ कि सुन नहीं सकता; मैं ऐसा
परेशान हूँ कि देख नहीं सकता।

4 मेरा दिल धड़कता है, और ख़ौफ़ अचानक मुझ पर ग़ालिब
आ गया; शफ़क़ — ए — शाम जिसका मैं आरज़ूमन्द था, मेरे
लिए ख़ौफ़नाक हो गई।
5 दस्तरख़्वान बिछाया गया, निगहबान खड़ा किया गया, वह
खाते हैं और पीते हैं; उठो ऐ सरदारो सिपर पर तेल मलो!
6 क्यूँकि ख़ुदावन्द ने मुझे यूँ फ़रमाया, कि "जा निगहबान
बिठा; वह जो कुछ देखे वही बताए।
7 उसने सवार देखे, जो दो — दो आते थे, और गधों और ऊँटों
पर सवार और उसने बड़े ग़ौर से सुना।"
8 तब उसने शेर की तरह आवाज़ से पुकारा, ऐ ख़ुदावन्द, मैं
अपनी दीदगाह पर तमाम दिन खड़ा रहा, और मैंने हर रात पहरे
की जगह पर काटी।
9 और देख, सिपाहियों के ग़ोल और उनके सवार दो — दो करके
आते हैं! "फिर उसने यूँ कहा, कि बाबुल गिर पड़ा, गिर पड़ा; और
उसके मा'बूदों की सब तराशी हुई मूरतें बिल्कुल टूटी पड़ी हैं।"
10 ऐ मेरे गाहे हुए और मेरे खलीहान के ग़ल्ले, जो कुछ मैंने
रब्ब — उल — अफ़वाज इस्राईल के ख़ुदा से सुना, तुमसे कह
दिया।
11 दूमा के बारे में नबुव्वत किसी ने मुझ को श'ईर से पुकारा
कि ऐ निगहबान, रात की क्या ख़बर है?
12 निगाहबान ने कहा, सुबह होती है और रात भी अगर तुम
पूछना चाहते हो तो पूछो तुम फिर आना?
13 'अरब के बारे में नबुव्वत ऐ ददानियों के क़ाफ़िलों, तुम 'अरब
के जंगल में रात काटोगे।
14 वह प्यासे के पास पानी लाए, तेमा की सरज़मीन के
बाशिन्दे, रोटी लेकर भागने वाले से मिलने को निकले।
15 क्यूँकि वह तलवारों के सामने से नंगी तलवार से, और खेंची
हुई कमान से, और जंग की शिद्दत से भागे हैं।
16 क्यूँकि ख़ुदावन्द ने मुझ से यूँ कहा कि मज़दूर के बरसों के

मुताबिक़, एक बरस के अन्दर अन्दर क़ीदार की सारी हशमत जाती रहेगी।

17 और तीर अन्दाज़ों की ता'दाद का बक़िया या'नी बनी क़ीदार के बहादुर थोड़े से होंगे; क्यूँकि इस्राईल के ख़ुदा ने यूँ फ़रमाया है।

22

[illegible]

1 ख़्वाब की वादी के बारे में नबुव्वत अब तुम को क्या हुआ कि तुम सब के सब कोठों पर चढ़ गए?

2 ऐ पुर शोर और ग़ौग़ाई शहर ऐ शादमान बस्ती तेरे मक़तूल न तलवार से क़त्ल हुए और न लड़ाई में मारे गए।

3 तेरे सब सरदार इकट्ठे भाग निकले, उनको तीर अन्दाज़ों ने ग़ुलाम कर लिया; जितने तुझ में पाए गए सब के सब, बल्कि वह भी जो दूर से भाग गए थे ग़ुलाम किए गए हैं।

4 इसीलिए मैंने कहा, मेरी तरफ़ मत देखो, क्यूँकि मैं ज़ार — ज़ार रोऊँगा मेरी तसल्ली की फ़िक्र मत करो, क्यूँकि मेरी दुख़्तर — ए — क़ौम बर्बाद हो गई।

5 क्यूँकि ख़ुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज की तरफ़ से ख़्वाब की वादी में, यह दुख और पामाली ओ — बेक़रारी और दीवारों को गिराने और पहाड़ों तक फ़रियाद पहुँचाने का दिन है।

6 क्यूँकि ऐलाम ने जंगी रथों और सवारों के साथ तरकश उठा लिया और क़ीर ने सिपर का ग़िलाफ़ उतार दिया।

7 और यूँ हुआ कि तेरी बेहतरीन वादियाँ जंगली रथों से मा'मूर हो गईं और सवारों ने फाटक पर सफ़आराई की;

8 और यहूदाह का नक़ाब उतारा गया। और तू अब दश्त — ए — महल के सिलाहख़ाने पर निगाह करता है,

9 और तुम ने दाऊद के शहर के रख़ने देखे कि बेशुमार हैं; और
तुम ने नीचे के हौज़ में पानी जमा' किया।
10 और तुम ने येरूशलेम के घरों को गिना और उनको गिराया
ताकि शहर पनाह को मज़बूत करो,
11 और तुम ने पुराने हौज़ के पानी के लिए दोनों दीवारों के बीच
एक और हौज़ बनाया; लेकिन तुम ने उसके पानी पर निगाह न की
और उसकी तरफ़ जिसने पहले से उसकी तदबीर की मुतवज्जह न
हुए।
12 और उस वक़्त ख़ुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज ने रोने
और मातम करने, और सिर मुन्डाने और टाट से कमर बाँधने का
हुक्म दिया था;
13 लेकिन देखो, ख़ुशी और शादमानी, गाय बैल को ज़बह
करना और भेड़ — बकरी को हलाल करना और गोश्त ख़्वारी
— ओ — मयनोशी कि आओ खाएँ और पियें क्यूँकि कल तो हम
मरेंगे।
14 और रब्ब — उल — अफ़्वाज ने मेरे कान में कहा, कि
तुम्हारी इस बदकिरदारी का कफ़्फ़ारा तुम्हारे मरने तक भी न हो
सकेगा यह ख़ुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज का फ़रमान है।
15 ख़ुदावन्द रब्ब — उल — अफ़वाज यह फ़रमाता है कि उस
ख़ज़ान्ची शबनाह के पास जो महल पर मु'अय्यन है, जा और
कह:
16 तू यहाँ क्या करता है? और तेरा यहाँ कौन है कि तू यहाँ
अपने लिए क़ब्र तराश्ता है? बुलन्दी पर अपनी क़ब्र तराश्ता है
और चट्टान में अपने लिए घर खुदवाता है।
17 देख, ऐ ज़बरदस्त, ख़ुदावन्द तुझ को ज़ोर से दूर फेंक देगा;
वह यक़ीनन तुझे पकड़ रख्खेगा।
18 वह बेशक तुझ को गेंद की तरह घुमा — घुमाकर बड़े मुल्क
में उछालेगा; वहाँ तू मरेगा और तेरी हश्मत के रथ वहीं रहेंगे, ऐ
अपने आक़ा के घर की रुस्वाई।

19 और मैं तुझे तेरे मन्सब से बरतरफ़ करूँगा, हाँ वह तुझे तेरी जगह से खींच उतारेगा।

20 और उस रोज़ यूँ होगा कि मैं अपने बन्दे इलियाक़ीम — बिन — ख़िलक़ियाह को बुलाऊँगा,

21 और मैं तेरा ख़िल'अत उसे पहनाऊँगा और तेरा पटका उस पर कसूँगा, और तेरी हुकूमत उसके हाथ में हवाले कर दूँगा; और वह अहल — ए — येरूशलेम का और बनी यहूदाह का बाप होगा।

22 और मैं दाऊद के घर की कुंजी उसके कन्धे पर रख्खूँगा, तब वह खोलेगा और कोई बन्द न करेगा; और वह बन्द करेगा और कोई न खोलेगा।

23 और मैं उसको खूँटी की तरह मज़बूत जगह में मुहकम करूँगा, और वह अपने बाप के घराने के लिए जलाली तख़्त होगा।

24 और उसके बाप के ख़ान्दान की सारी हशमत या'नी आल — ओ — औलाद और सब छोटे — बड़े बर्तन प्यालों से लेकर क़राबों तक सबको उसी से मन्सूब करेंगे।

25 रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है, उस वक़्त वह खूँटी जो मज़बूत जगह में लगाई गई थी हिलाई जाएगी, और वह काटी जाएगी और गिर जाएगी, और उस पर का बोझ गिर पड़ेगा; क्यूँकि ख़ुदावन्द ने यूँ फ़रमाया है।

23

□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□

1 सूर के बारे में नबुव्वत ऐ तरसीस के जहाज़ो, वावैला करो क्यूँकि वह उजड़ गया, वहाँ कोई घर और कोई दाख़िल होने की जगह नहीं! कित्तीम की ज़मीन से उनको ये ख़बर पहुँची है।

2 ऐ साहिल के बाशिन्दों, जिनको सैदानी सौदागरों ने जो
समन्दर के पार आते जाते हैं मालामाल कर दिया है, ख़ामोश
रहो।
3 समन्दर के पार से सीहोर' का ग़ल्ला और दरिया-ए-नील की
फ़सल उसकी आमदनी थी, तब वह क़ौमों की तिजारत — गाह
बना।
4 ऐ सैदा, तू शरमा, क्यूँकि समन्दर ने कहा है, "समन्दर की
गढ़ी ने कहा, मुझे दर्द — ए — ज़िह नहीं लगा, और मैंने बच्चे
नहीं जने; मैं जवानों को नहीं पालती, और कुँवारियों की परवरिश
नहीं करती हूँ।"
5 जब अहल — ए — मिस्र को यह ख़बर पहुँचेगी, तो वह सूर
की ख़बर से बहुत ग़मगीन होंगे।
6 ऐ साहिल के बाशिन्दो, तुम ज़ार — ज़ार रोते हुए तरसीस
को चले जाओ।
7 क्या यह तुम्हारी शादमान बस्ती है, जिसकी हस्ती पहले से
है? उसी के पाँव उसे दूर — दूर ले जाते हैं कि परदेस में रहे।
8 किसी ने यह मंसूबा सूर के ख़िलाफ़ बाँधा जो ताज बख़्श
है जिसके सौदागर 'उमरा और जिसके ताजिर दुनिया भर के
'इज़्ज़तदार हैं।
9 रब्ब — उल — अफ़वाज ने ये इरादा किया है कि सारी
हशमत के घमण्ड को हलाक करे और दुनिया भर के इज़्ज़तदारों
को ज़लील करे।
10 ऐ दूख़्तर — ए — तरसीस दरिया-ए-नील की तरह अपनी
सरज़मीन पर फैल जा अब कोई बन्द बाक़ी नहीं रहा।
11 उसने समन्दर पर अपना हाथ बढ़ाया, उसने ममलुकतों को
हिला दिया; ख़ुदावन्द ने कनान के हक़ में हुक्म किया है कि उसके
क़िले' मिस्मार किए जाएँ।
12 और उसने कहा, "ऐ मज़लूम कुँवारी, दुख़्तर — ए — सैदा,
तू फिर कभी घमण्ड न करेगी; उठ क़ित्तीम में चली जा, तुझे वहाँ

भी चैन न मिलेगा।”
13 कसदियों के मुल्क को देख! यह क़ौम मौजूद न थी; असूर ने
उसे वीरान के रहनेवालों का हिस्सा ठहराया। उन्होंने अपने बुर्ज
बनाए उन्होंने उसके महल ग़ारत किये और उसे वीरान किया।
14 ऐ तरसीस के जहाज़ों वावैला करो क्यूँकि तुम्हारा क़िला'
उजाड़ा गया।
15 और उस वक़्त यूँ होगा कि सूर किसी बादशाह के दिनों के
मुताबिक़, सत्तर बरस तक फ़रामोश हो जाएगा; और सत्तर बरस
के बाद सूर की हालत फ़ाहिशा के गीत के मुताबिक़ होगी।
16 ऐ फ़ाहिशा तू जो फ़रामोश हो गई है, बर्बत उठा ले और
शहर में फिरा कर राग को छेड़ और बहुत — सी ग़ज़लें गा कि
लोग तुझे याद करें।
17 और सत्तर बरस के बाद यूँ होगा कि ख़ुदावन्द सूर की ख़बर
लेगा, और वह उजरत पर जाएगी और इस ज़मीन पर की तमाम
ममलुकतों से बदकारी करेगी।
18 लेकिन उसकी तिजारत और उसकी उजरत ख़ुदावन्द के
लिए मुक़द्दस होगी और उसका माल न ज़ख़ीरा किया जाएगा
और न जमा' रहेगा बल्कि उसकी तिजारत का हासिल उनके लिए
होगा, जो ख़ुदावन्द के सामने रहते हैं कि खाकर सेर हों और
नफ़ीस पोशाक पहने।

24

[illegible]

1 देखो ख़ुदावन्द ज़मीन को ख़ाली और सरनगूँ करके वीरान
करता है और उसके बाशिन्दों को तितर — बितर कर देता है।
2 और यूँ होगा कि जैसा र'इयत का हाल, वैसा ही काहिन का;
जैसा नौकर का, वैसा ही उसके साहिब का; जैसा लौंडी का, वैसा
ही उसकी बीबी का; जैसा ख़रीदार का, वैसा ही बेचनेवाले का;

जैसा क़र्ज़ देनेवाले का, वैसा ही क़र्ज़ लेनेवाले का; जैसा सूद
देनेवाले का, वैसा ही सूद लेनेवाले का।
3 ज़मीन बिल्कुल ख़ाली की जाएगी, और बशिद्दत ग़ारत
होगी; क्यूँकि यह कलाम ख़ुदावन्द का है।
4 ज़मीन ग़मगीन होती और मुरझाती है, जहाँ बेताब और
पज़मुर्दा होता है, ज़मीन के 'आली क़द्र लोग नातवान होते हैं।
5 ज़मीन अपने बाशिन्दों से नापाक हुई, क्यूँकि उन्होंने
शरी'अत को 'उदूल किया, क़ानून से मुन्हरिफ़ हुए, हमेशा के
'अहद को तोड़ा।
6 इस वजह से ला'नत ने ज़मीन को निगल लिया और उसके
बाशिन्दे मुजरिम ठहरे, और इसीलिए ज़मीन के लोग भसम हुए
और थोड़े से आदमी बच गए।
7 मय ग़मज़दा, ताक पज़मुर्दा है; और सब जो दिलशाद थे आह
भरते हैं।
8 ढोलकों की ख़ुशी बन्द हो गई, ख़ुशी मनानेवालों का ग़ुल —
ओ — शोर तमाम हुआ, बरबत की शादमानी जाती रही।
9 वह फिर गीत के साथ मय नहीं पीते, पीनेवालों को शराब
तल्ख़ मा'लूम होगी।
10 सुनसान शहर वीरान हो गया, हर एक घर बन्द हो गया कि
कोई अन्दर न जा सके।
11 मय के लिए बाज़ारों में वावैला हो रहा है; सारी ख़ुशी पर
तारीकी छा गई, मुल्क की 'इश्रत जाती रही।
12 शहर में वीरानी ही वीरानी है, और फाटक तोड़ फोड़ दिए
गए।
13 क्यूँकि ज़मीन में लोगों के बीच यूँ होगा जैसा ज़ैतून का
दरख़्त झाड़ा जाए, जैसे अंगूर तोड़ने के बाद ख़ोशा — चीनी।
14 वह अपनी आवाज़ बलन्द करेंगे, वह गीत गाएँगे; ख़ुदावन्द
के जलाल की वजह से समन्दर से ललकारेंगे।

15 तुम पूरब में ख़ुदावन्द की और समन्दर के जज़ीरों में
ख़ुदावन्द के नाम की, जो इस्राईल का ख़ुदा है, तम्जीद करो।
16 इन्तिहा — ए — ज़मीन से नग़मों की आवाज़ हम को सुनाई
देती है, जलाल — ओ — 'अज़मत सादिक़ के लिए। लेकिन
मैंने कहा, मैं गुदाज़ हो गया, मैं हलाक हुआ; मुझ पर अफ़सोस!
दग़ाबाज़ों ने दग़ा की; हाँ, दग़ाबाज़ों ने बड़ी दग़ा की।
17 ऐ ज़मीन के बाशिन्दे, ख़ौफ़ और गढ़ा और दाम तुझ पर
मुसल्लित हैं।
18 और यूँ होगा कि जो ख़ौफ़नाक आवाज़ सुन कर भागे, गढ़े
में गिरेगा; और जो गढ़े से निकल आए, दाम में फँसेगा; क्यूँकि
आसमान की खिड़कियाँ खुल गईं, और ज़मीन की बुनियादें हिल
रही हैं।
19 ज़मीन बिल्कुल उजड़ गई, ज़मीन यकसर शिकस्ता हुई,
और शिद्दत से हिलाई गई।
20 वह मतवाले की तरह डगमगाएगी और झोपड़ी की तरह
आगे पीछे सरकाई जाएगी; क्यूँकि उसके गुनाह का बोझ उस पर
भारी हुआ, वह गिरेगी और फिर न उठेगी।
21 और उस वक़्त यूँ होगा कि ख़ुदावन्द आसमानी लश्कर को
आसमान पर और ज़मीन के बादशाहों को ज़मीन पर सज़ा देगा।
22 और वह उन क़ैदियों की तरह जो गढ़े में डाले जाएँ, जमा'
किए जाएँगे और वह क़ैदख़ाने में क़ैद किए जाएँगे, और बहुत
दिनों के बाद उनकी ख़बर ली जाएगी।
23 और जब रब्ब — उल — अफ़वाज सिय्यून पहाड़ पर
और येरूशलेम में अपने बुज़ुर्ग बन्दों के सामने हश्मत के साथ
सल्तनत करेगा, तो चाँद मुज़्तरिब' सूरज शर्मिन्दा होगा।

25

1 ऐ ख़ुदावन्द तू मेरा ख़ुदा है; मैं तेरी तम्जीद करूँगा; तेरे नाम
की इबादत करूँगा क्यूँकि तूने 'अजीब काम किए हैं, तेरी मसलहत
क़दीम से वफ़ादारी और सच्चाई हैं।
2 क्यूँकि तूने शहर को ख़ाक का ढेर किया; हाँ, फ़सीलदार शहर
को खण्डर बना दिया और परदेसियों के महल को भी, यहाँ तक
कि शहर न रहा; वह फिर ता'मीर न किया जाएगा।
3 इसलिए ज़बरदस्त लोग तेरी इबादत करेंगे और हैबतनाक
क़ौमों का शहर तुझ से डरेगा।
4 क्यूँकि तू ग़रीब के लिए क़िला' और मोहताज के लिए
परेशानी के वक़्त मल्जा और आँधी से पनाहगाह और गर्मी से
बचाने को साया हुआ, जिस वक़्त ज़ालिमों की साँस दिवारकन
तूफ़ान की तरह हो।
5 तू परदेसियों के शोर को ख़ुश्क मकान की गर्मी की तरह दूर
करेगा और जिस तरह अब्र के साये से गरमी हलाक होती है उसी
तरह ज़ालिमों का शादियाना बजाना ख़त्म होगा।
6 और रब्ब — उल — अफ़वाज इस पहाड़ पर सब क़ौमों
के लिए फ़रबा चीज़ों से एक ज़ियाफ़त तैयार करेगा बल्कि एक
ज़ियाफ़त तलछट पर से निथरी हुई मय से; हाँ फ़रबा चीज़ों से
जो पुरमग़ज़ हों और मय से जो तलछट पर से ख़ूब निथरी हुई हो।
7 और वह इस पहाड़ पर उस पर्दे को, जो तमाम लोगों पर पड़ा
है और उस नक़ाब को, जो सब क़ौमों पर लटक रहा है, दूर कर
देगा।
8 वह मौत को हमेशा के लिए हलाक करेगा और ख़ुदावन्द
ख़ुदा सब के चहरों से आँसू पोंछ डालेगा, और अपने लोगों की
रुस्वाई तमाम सरज़मीन पर से मिटा देगा; क्यूँकि ख़ुदावन्द ने
यह फ़रमाया है।
9 और उस वक़्त यूँ कहा जाएगा, लो, यह हमारा ख़ुदा है; हम
उसकी राह तकते थे और वही हम को बचाएगा। यह ख़ुदावन्द है,

हम उसके इन्तिज़ार में थे। हम उसकी नजात से ख़ुश — ओ — ख़ुर्रम होंगे।
10 क्यूँकि इस पहाड़ पर ख़ुदावन्द का हाथ बरक़रार रहेगा और मोआब अपनी ही जगह में ऐसा कुचला जाएगा जैसे मज़बले के पानी में घास कुचली जाती है।
11 और वह उसमें उसकी तरह जो तैरते हुए हाथ फैलाता है, अपने हाथ फैलाएगा; लेकिन वह उसके ग़ुरूर को उसके हाथों के फ़न — धोखे के साथ पस्त करेगा।
12 और वह तेरी फ़सील के ऊँचे बुर्जों को तोड़कर पस्त करेगा, और ज़मीन के बल्कि ख़ाक के बराबर कर देगा।

26

[illegible]

1 उस वक़्त यहूदाह के मुल्क में ये गीत गाया जाएगा:हमारा एक मुहकम शहर है, जिसकी फ़सील और नसलों की जगह वह नजात ही को मुक़र्रर करेगा।
2 तुम दरवाज़े खोलो ताकि सादिक़ क़ौम जो वफ़ादार रही दाख़िल हो।
3 जिसका दिल क़ाईम है तू उसे सलामत रख्खेगा क्यूँकि उसका भरोसा तुझ पर है।
4 हमेशा तक ख़ुदावन्द पर ऐ'तमाद रख्खो क्यूँकि ख़ुदावन्द यहूदाह हमेशा की चट्टान है।
5 क्यूँकि उसने बुलन्दी पर बसनेवालों को नीचे उतारा, बुलन्द शहर को ज़ेर किया, उसने उसे ज़ेर करके ख़ाक में मिलाया।
6 वह पाँव तले रौंदा जाएगा; हाँ, ग़रीबों के पाँव और मोहताजों के क़दमों से।
7 सादिक़ की राह रास्ती है; तू जो हक़ है, सादिक़ की रहबरी करता है।

8 हाँ तेरी 'अदालत की राह में, ऐ ख़ुदावन्द, हम तेरे मुन्तज़िर
रहे; हमारी जान का इश्तियाक़ तेरे नाम और तेरी याद की तरफ़
है।
9 रात को मेरी जान तेरी मुश्ताक़ है; हाँ, मेरी रूह तेरी जुस्तजू
में कोशाँ रहेगी; क्यूँकि जब तेरी 'अदालत ज़मीन पर जारी है, तो
दुनिया के बाशिन्दे सदाक़त सीखते हैं।
10 हर चन्द शरीर पर मेहरबानी की जाए, लेकिन वह सदाक़त
न सीखेगा; रास्ती के मुल्क में नारास्ती करेगा, और ख़ुदावन्द की
'अज़मत को न देखेगा।
11 ऐ ख़ुदावन्द, तेरा हाथ बुलन्द है लेकिन वह नहीं देखते,
लेकिन वह लोगों के लिए तेरी ग़ैरत को देखेंगे और शर्मसार होंगे,
बल्कि आग तेरे दुश्मनों को खा जाएगी।
12 ऐ ख़ुदावन्द, तू ही हम को सलामती बख़्शेगा; क्यूँकि तू ही
ने हमारे सब कामों को हमारे लिए अन्जाम दिया है।
13 ऐ ख़ुदावन्द हमारे ख़ुदा, तेरे अलावा दूसरे हाकिमों ने हम
पर हुकूमत की है; लेकिन तेरी मदद से हम सिर्फ़ तेरा ही नाम
लिया करेंगे।
14 वह मर गए, फिर ज़िन्दा न होंगे; वह रहलत कर गए, फिर
न उठेंगे; क्यूँकि तूने उन पर नज़र की और उनको हलाक किया,
और उनकी याद को भी मिटा दिया है।
15 ऐ ख़ुदावन्द तूने इस क़ौम को कसरत बख़्शी है; तूने इस
क़ौम को बढ़ाया है, तूही ज़ुल — जलाल है तूही ने मुल्क की हदों
को बढ़ा दिया है।
16 ऐ ख़ुदावन्द, वह मुसीबत में तेरे तालिब हुए जब तूने उनको
तादीब की तो उन्होंने गिरया — ओ — ज़ारी की।
17 ऐ ख़ुदावन्द तेरे सामने हम उस हामिला की तरह हैं, जिसकी
विलादत का वक़्त नज़दीक हो, जो दुख में है और अपने दर्द से
चिल्लाती है।

18 हम हामिला हुए, हम को दर्द — ए — ज़िह लगा, लेकिन
पैदा क्या हुआ? हवा! हम ने ज़मीन पर आज़ादी को क़ाईम नहीं
किया, और न दुनिया में बसनेवाले ही पैदा हुए।
19 तेरे मुर्दे जी उठेंगे, मेरी लाशें उठ खड़ी होंगी। तुम जो ख़ाक
में जा बसे हो, जागो और गाओ! क्यूँकि तेरी ओस उस ओस की
तरह है जो नबातात पर पड़ती है, और ज़मीन मुर्दों को उगल
देगी।
20 ऐ मेरे लोगो! अपने ख़िलवत ख़ानों में दाख़िल हो, और
अपने पीछे दरवाज़े बन्द कर लो और अपने आपको थोड़ी देर
तक छिपा रख्खो जब तक कि ग़ज़ब टल न जाए।
21 क्यूँकि देखो, ख़ुदावन्द अपने मक़ाम से चला आता है, ताकि
ज़मीन के बाशिन्दों को उनकी बदकिरदारी की सज़ा दे; और
ज़मीन उस ख़ून को ज़ाहिर करेगी जो उसमें है और अपने मक़तूलों
को हरगिज़ न छिपाएगी।

27

1 उस वक़्त ख़ुदावन्द अपनी सख़्त और बड़ी और मज़बूत
तलवार से अज़दहा या'नी तेज़रू साँप को और अज़दह या'नी
पेचीदा साँप को सज़ा देगा; और दरियाई अज़दहे को क़त्ल
करेगा।
2 उस वक़्त तुम ख़ुशनुमा ताकिस्तान का गीत गाना।
3 मैं ख़ुदावन्द उसकी हिफ़ाज़त करता हूँ, मैं उसे हर दम सींचता
रहूँगा। मैं दिन रात उसकी निगहबानी करूँगा कि उसे नुक़्सान न
पहुँचे।
4 मुझ में क़हर नहीं; तोभी काश के जंगगाह में झाड़ियाँ और
काँटे मेरे ख़िलाफ़ होते, मैं उन पर ख़ुरूज करता और उनको
बिल्कुल जला देता।
5 लेकिन अगर कोई मेरी ताक़त का दामन पकड़े तो मुझ से
सुलह करे; हाँ वह मुझ से सुलह करे।

6 अब आइन्दा दिनों में या'क़ूब जड़ पकड़ेगा, और इस्राईल
पनपेगा और फूलेगा और इस ज़मीन को मेवों से मालामाल
करेगा।
7 क्या उसने उसे मारा, जिस तरह उसने उसके मारनेवालों को
मारा है? या क्या वह क़त्ल हुआ, जिस तरह उसके क़ातिल क़त्ल
हुए?
8 तूने इन्साफ़ के साथ उसको निकालते वक़्त उससे हुज्जत की;
उसने पूरबी हवा के दिन अपने सख़्त तूफ़ान से उसको निकाल
दिया।
9 इसलिए इससे या'क़ूब के गुनाह का कफ़्फ़ारा होगा और
उसका गुनाह दूर करने का कुल नतीजा यही है; जिस वक़्त वह
मज़बह के सब पत्थरों को टूटे कंकरों की तरह टुकड़े — टुकड़े करे
कि यसीरतें और सूरज के बुत फिर क़ाईम न हों।
10 क्यूँकि फ़सीलदार शहर वीरान है, और वह बस्ती उजाड़ और
वीरान की तरह ख़ाली है; वहाँ बछड़ा चरेगा और वहीं लेट रहेगा
और उसकी डालियाँ बिलकुल काट खायेगा।
11 जब उसकी शाख़े मुरझा जायेंगी तो तोड़ी जायेंगी 'औरतें
आयेंगी और उनको जलाएँगी; क्यूँकि लोग अक़्ल से ख़ाली हैं,
इसलिए उनका ख़ालिक़ उन पर रहम नहीं करेगा और उनका
बनाने वाला उन पर तरस नहीं खाएगा।
12 और उस वक़्त यूँ होगा कि ख़ुदावन्द दरया — ए — फ़रात
की गुज़रगाह से रूद — ए — मिस्र तक झाड़ डालेगा; और तुम
ऐ बनी इस्राईल एक एक करके जमा' किए जाओगे।
13 और उस वक़्त यूँ होगा कि बड़ा नरसिंगा फूँका जाएगा, और
वह जो असूर के मुल्क में क़रीब — उल — मौत थे, और वह जो
मुल्क — ए — मिस्र में जिला वतन थे आएँगें और येरूशलेम के
मुक़द्दस पहाड़ पर ख़ुदावन्द की इबादत करेंगे।

28

[illegible]

1 अफ़सोस इफ़्राईम के मतवालों के घमण्ड के ताज पर और
उसकी शानदार शौकत के मुरझाये हुए फूल पर जो उन लोगों की
शादाब वादी के सिरे पर है जो मय के मग़लूब हैं।
2 देखो ख़ुदावन्द के पास एक ज़बरदस्त और ताक़तवर शख़्स
है, जो उस आँधी की तरह जिसके साथ ओले हों और बाद समूम
की तरह और सैलाब — ए — शदीद की तरह ज़मीन पर हाथ से
पटक देगा।
3 इफ़्राईम के मतवालों के घमण्ड का ताज पामाल किया
जाएगा;
4 और उस शानदार शौकत का मुरझाया हुआ फूल जो उस
शादाब वादी के सिरे पर है, पहले पक्के अंजीर की तरह होगा जो
गर्मी के दिनों से पहले लगे; जिस पर किसी की निगाह पड़े और
वह उसे देखते ही और हाथ में लेते ही निगल जाए।
5 उस वक़्त रब्ब — उल — अफ़वाज अपने लोगों के बक़िये के
लिए शौकत का अफ़सर और हुस्न का ताज होगा।
6 और 'अदालत की कुर्सी पर बैठने वाले के लिए इन्साफ़ की
रूह, और फाटकों से लड़ाई को दूर करने वालों के लिए ताक़त
होगा।
7 लेकिन यह भी मयख़्वारी से डगमगाते और नशे में लड़खड़ाते
हैं; काहिन और नबी भी नशे में चूर और मय में ग़र्क़ हैं, वह नशे
में झूमते हैं; वह रोया में ख़ता करते और 'अदालत में लगज़िश
खाते हैं।
8 क्यूँकि सब दस्तरख़्वान क़य और गन्दगी से भरे हैं कोई जगह
बाक़ी नहीं।
9 वह किसको अक़्ल सिखाएगा? किसको तक़रीर करके
समझाएगा? क्या उनको जिनका दूध छुड़ाया गया, जो छातियों
से जुदा किए गए?

10 क्यूँकि हुक्म पर हुक्म, हुक्म पर हुक्म; क़ानून पर क़ानून,
क़ानून पर क़ानून है; थोड़ा यहाँ थोड़ा वहाँ।
11 लेकिन वह बेगाना लबों और अजनबी ज़बान से इन लोगों
से कलाम करेगा।
12 जिनको उसने फ़रमाया, "यह आराम है, तुम थके मान्दों को
आराम दो, और यह ताज़गी है;" लेकिन वह सुनने वाले न हुए।
13 तब ख़ुदावन्द का कलाम उनके लिए हुक्म पर हुक्म, हुक्म
पर हुक्म, क़ानून पर क़ानून, क़ानून पर क़ानून, थोड़ा यहाँ, थोड़ा
वहाँ होगा; ताकि वह चले जाएँ और पीछे गिरें और सिकश्त खाएँ
और दाम में फसें और गिरफ़्तार हों।
14 इसलिए ऐ ठट्ठा करने वालो, जो येरूशलेम के इन बाशिन्दों
पर हुक्मरानी करते हो; ख़ुदावन्द का कलाम सुनो:
15 चूँकि तुम कहा करते हो, कि "हम ने मौत से 'अहद बाँधा,
और पाताल से पैमान कर लिया है; जब सज़ा का सैलाब आएगा
तो हम तक नहीं पहुँचेगा, क्यूँकि हम ने झूठ को अपनी पनाहगाह
बनाया है और दरोग़गोई की आड़ में छिप गए हैं;"
16 इसलिए ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है देखो मैं सिय्यून में
बुनियाद के लिए एक पत्थर रख्खूँगा, आज़मूदा पत्थर मुहकम
बुनियाद के लिए कोने के सिरे का क़ीमती पत्थर: जो कोई ईमान
लाता है क़ाईम रहेगा।
17 और मैं 'अदालत को सूत, सदाक़त को साहूल बनाऊँगा;
और ओले झूठ की पनाहगाह को साफ़ कर देंगे, और पानी छिपने
के मकान पर फैल जायेगा।
18 और तुम्हारा 'अहद जो मौत से हुआ मन्सूख़ हो जाएगा और
तुम्हारा पैमान जो पाताल से हुआ क़ाईम न रहेगा; जब सज़ा का
सैलाब आएगा, तो तुम को पामाल करेगा।
19 और गुज़रते वक़्त तुम को बहा ले जाएगा सुबह और शब
— ओ — रोज़ आएगा बल्कि उसका ज़िक्र सुनना भी ख़ौफ़नाक

होगा।

20 क्यूँकि पलंग ऐसा छोटा है कि आदमी उस पर दराज़ नहीं
हो सकता; और लिहाफ़ ऐसा तंग है कि वह अपने आपको उसमें
लपेट नहीं सकता।

21 क्यूँकि ख़ुदावन्द उठेगा जैसा कोह — ए — पराज़ीम में, और
वह ग़ज़बनाक होगा जैसा जिबा'ऊन की वादी में; ताकि अपना
काम बल्कि अपना 'अजीब काम करे और अपना काम, हाँ अपना
अनोखा, काम पूरा करे।

22 इसलिए अब तुम ठट्ठा न करो, ऐसा न हो कि तुम्हारे बंद
सख़्त हो जाएं क्यूँकि मैंने ख़ुदावन्द रब्ब — उल — अफ़्वाज से
सुना है कि उसने कामिल और मुसमम्म इरादा किया है कि सारी
सर ज़मीन को तबाह करे।

23 कान लगा कर मेरी आवाज़ सुनो, सुनने वाले होकर मेरी
बात पर दिल लगाओ।

24 क्या किसान बोने के लिए हर रोज़ हल चलाया करता है?
क्या वह हर वक़्त अपनी ज़मीन को खोदता और उसके ढेले फोड़ा
करता है?

25 जब उसको हमवार कर चुका, तो क्या वह अजवाइन को
नहीं छांटता, और ज़ीरे को डाल नहीं देता, और गेहूँ को कतारों
में नहीं बोता, और जौ को उसके मु'अय्यन मकान में, और कठिया
गेहूँ को उसकी ख़ास क्यारी में नहीं बोता?

26 क्यूँकि उसका ख़ुदा उसको तरबियत करके उसे सिखाता है।

27 कि अजवाइन को दावने के हेंगे से नहीं दावते, और ज़ीरे के
ऊपर गाड़ी के पहिये नहीं घुमाते; बल्कि अजवाइन को लाठी से
झाड़ते है और ज़ीरे को छड़ी से।

28 रोटी के ग़ल्ले पर दाँय चलाता है, लेकिन वह हमेशा उसे
कूटता नहीं रहता; और अपनी गाड़ी के पहिये और घोड़ों को उस
पर हमेशा फिराता नहीं उसे सरासर नहीं कुचलेगा।

29 यह भी रब्ब — उल — अफ़वाज से मुक़र्रर हुआ है, जिसकी
मसलहत 'अजीब और दानाई 'अज़ीम है।

29

[illegible]

1 अरीएल पर अफ़सोस अरीएल उस शहर पर जहाँ दाऊद
ख़ेमाज़न हुआ साल पर साल ज़्यादा करो, 'ईद पर 'ईद मनाई
जाए।
2 तोभी मैं अरीएल को दुख दूँगा, और वहाँ नौहा और मातम
होगा लेकिन मेरे लिए वह अरीएल ही ठहरेगा।
3 मैं तेरे ख़िलाफ़ चारों तरफ़ ख़ेमाज़न हूँगा और मोर्चा बंदी
करके तेरा मुहासरा करूँगा और तेरे ख़िलाफ़ दमदमा बाधूँगा।
4 और तू पस्त होगा, और ज़मीन पर से बोलेगा, और ख़ाक
पर से तेरी आवाज़ धीमी आयेगी तेरी सदा भूत की सी होगी जो
ज़मीन के अन्दर से निकलेगी, और तेरी बोली ख़ाक पर से चुरुगने
की आवाज़ मा'लूम होगी।
5 लेकिन तेरे दुश्मनों का ग़ोल बारीक गर्द की तरह होगा, और
उन ज़ालिमों के गिरोह उड़नेवाले भूसे की तरह होगी; और यह
अचानक एक दम में वाक़े' होगा
6 रब्ब — उल — अफ़वाज ख़ुद गरजने और ज़लज़ले के साथ,
और बड़ी आवाज़ और बड़ी आँधी और तूफ़ान और आग के
मुहलिक़ शो'ले के साथ तुझे सज़ा देने को आएगा।
7 और उन सब क़ौमों का गिरोह जो अरीएल से लड़ेगा, या'नी
वह सब जो उससे और उसके क़िले' से जंग करेंगे और उसे दुख
देंगे, ख़्वाब या रात के ख़्वाब की तरह हो जायेंगे।
8 जैसे भूका आदमी ख़्वाब में देखे कि खा रहा है, जाग उठे और
उसका जी न भरा हो; प्यासा आदमी ख़्वाब में देखे कि पानी पी
रहा है, जाग उठे और प्यास से बेताब हो' उसकी जान आसूदा न

हो; ऐसा ही उन सब क़ौमों के गिरोह का हाल होगा जो सिय्यून
पहाड़ से जंग करती हैं।
9 ठहर जाओ औरत'अज्जुब करो, ऐश — ओ — 'इशरत
करो और अन्धे हो जाओ, वह मस्त हैं लेकिन मय से नहीं, वह
लड़खड़ाते हैं लेकिन नशे में नहीं।
10 क्यूँकि ख़ुदावन्द ने तुम पर गहरी नींद की रूह भेजी है, और
तुम्हारी आँखों या'नी नबियों को नाबीना कर दिया; और तुम्हारे
सिरों या'नी ग़ैबबीनों पर हिजाब डाल दिया:
11 और सारी रोया तुम्हारे नज़दीक सरबमुहर किताब के
मज़मून की तरह होगी, जिसे लोग किसी पढ़े लिखे को दें और
कहें कि इसको पढ़ और वह कहे, पढ़ नहीं सकता, क्यूँकि यह सर
— ब — मुहर है।
12 और फिर वह किताब किसी नाख़्वान्दा को दें और कहें,
इसको पढ़ और वह कहे, मैं तो पढ़ना नहीं जानता।"
13 फिर ख़ुदावन्द फ़रमाता है, चूँकि यह लोग ज़बान से मेरी
नज़दीकी चाहते हैं और होठों से मेरी ता'ज़ीम करते हैं लेकिन
इनके दिल मुझसे दूर हैं मेरा ख़ौफ़ जो इनको हुआ सिर्फ़ आदियों
की ता'लीम सुनने से हुआ।
14 इसलिए मैं इन लोगों के साथ 'अजीब सुलूक करूँगा, जो
हैरत अंगेज़ और ता'अज्जुब ख़ेज़ होगा और इनके 'आक़िलों की
'अक़्ल ज़ायल हो जाएगी और इनके समझदारों की समझ जाती
रहेगी।
15 उन पर अफ़सोस जो अपनी मश्वरत ख़ुदावन्द से छिपाते
हैं', जिनका कारोबार अन्धेरे में होता है और कहते हैं, कौन हम को
देखता है? कौन हम को पहचानता है?
16 आह तुम कैसे टेढे हो! क्या कुम्हार मिट्टी के बराबर
गिना जाएगा या मसनू'अ अपने सानि'अ से कहेगा, कि मैं तेरी
सन'अत नहीं क्या मख़लूक़ अपने ख़ालिक़ से कहेगा, कि तू कुछ

नहीं जानता?
17 क्या थोड़ा ही 'अरसा बाक़ी नहीं कि लुबनान शादाब मैदान
हो जाएगा, शादाब मैदान जंगल गिना जाएगा?
18 और उस वक़्त बहरे किताब की बातें सुनेंगे और अंधों की
आँखें तारीकी और अन्धेरे में से देखेंगी।
19 तब ग़रीब ख़ुदावन्द में ज़्यादा ख़ुश होंगे और ग़रीब
मोहताज इस्राईल के क़ुद्दूस में शादमान होंगे।
20 क्यूँकि ज़ालिम फ़ना हो जाएगा, और ठट्ठा करनेवाला
हलाक होगा; और सब जो बदकिरदारी के लिए बेदार रहते हैं,
काट डाले जाएँगे;
21 या'नी जो आदमी को उसके मुक़द्दमे में मुजरिम ठहराते, और
उसके लिए जिसने 'अदालत से फाटक पर मुक़द्दमा फ़ैसल किया
फंदा लगाते और रास्तबाज़ को बेवजह बरगश्ता करते हैं।
22 इसलिए ख़ुदावन्द जो अब्रहाम का नजात देनेवाला है,
या'क़ूब के ख़ान्दान के हक़ में यूँ फ़रमाता है, "कि या'क़ूब अब
शर्मिन्दा न होगा, वह हरगिज़ ज़र्द रू न होगा।
23 बल्कि उसके फ़र्ज़न्द अपने बीच मेरी दस्तकारी देख कर मेरे
नाम की तक़दीस करेंगे; हाँ या'क़ूब के क़ुद्दूस की तक़्दीस करेंगे
और इस्राईल के ख़ुदा से डरेंगे।
24 और वह भी जो रूह में गुमराह हैं, फ़हम हासिल करेंगे और
बुड़बुड़ाने वाले ता'लीम पज़ीर होंगे।"

30

[illegible]

1 ख़ुदावन्द फ़रमाता है, "उन बाग़ी लड़कों पर अफ़सोस जो
ऐसी तदबीर करते हैं जो मेरी तरफ़ से नहीं, और 'अहद — ओ —
पेमान करते हैं जो मेरी रूह की हिदायत से नहीं; ताकि गुनाह पर
गुनाह करें।

2 वह मुझ से पू छे बग़ैर मिस्र को जाते हैं ताकि फ़िर'औन के
पास पनाह लें और मिस्र के साये में अम्न से रहें।
3 लेकिन फ़िर'औन की हिमायत तुम्हारे लिए ख़जालत होगी
और मिस्र के साये में पनाह लेना तुम्हारे वास्ते रुस्वाई होगा।
4 क्यूँकि उसके सरदार जुअन में हैं और उसके कासिद हनीस में
जा पहुँचे।
5 वह उस क़ौम से जो उनको कुछ फ़ाइदा न पहुँचा सके, और
मदद ओयारी नहीं बल्कि खजालत और मलामत का ज़रि'आ हो
शर्मिन्दा होंगे।"
6 दक्खिन के जानवरों के बारे में दुख और मुसीबत की सरज़मीन
में, जहाँ से नर — ओ — मादा शेर — ए — बबर और अफ़'ई और
उड़नेवाले आग के साँप आते हैं वह अपनी दौलत गधों की पीठ
पर, और अपने ख़ज़ाने ऊँटों के कोहान पर लाद कर उस क़ौम के
पास ले जाते हैं जिससे उनको कुछ फ़ायदा न पहुँचेगा।
7 क्यूँकि मिस्रियों की मदद बातिल और बेफ़ायदा होगी, इसी
वजह से मैंने उसे, राहब कहा जो सुस्त बैठी है।
8 अब जाकर उनके सामने इसे तख़्ती पर लिख और किताब में
लिख ताकि आइन्दा हमेशा से हमेशा तक क़ाईम रहे।
9 क्यूँकि यह बाग़ी लोग और झूठे फ़र्ज़न्द हैं, जो ख़ुदावन्द की
शरी'अत को सुनने से इन्कार करते हैं;
10 जो ग़ैबबीनों से कहते हैं, ग़ैबबीनी न करो, और नबियों से,
कि "हम पर सच्ची नबुव्वतें ज़ाहिर न करो, हम को ख़ुशगवार
बातें सुनाओ, और हम से झूठी नबुव्वत करो,
11 रास्ते से बाहर जाओ, रास्ते से बरगश्ता हो, और इस्राईल
के क़ुद्दूस को हमारे बीच से ख़त्म करो।"
12 फिर इस्राईल का क़ुददूस यूँ फ़रमाता है, "चूँकि तुम इस
कलाम को हक़ीर जानते, और ज़ुल्म और कजरवी पर भरोसा
रखते, और उसी पर क़ाईम हो;

13 इसलिए यह बदकिरदारी तुम्हारे लिए ऐसी होगी जैसे फटी
हुई दीवार जो गिरना चाहती है ऊँची उभरी हुई दीवार जिसका
गिरना अचानक एक दम में हो।
14 वह इसे कुम्हार के बर्तन की तरह तोड़ डालेगा, इसे बे
दरेग़ चकनाचूर करेगा; चुनाँचे इसके टुकड़ों में एक ठीकरा भी
न मिलेगा जिसमें चूल्हे पर से आग उठाई जाए, या होज़ से पानी
लिया जाए।"
15 क्यूँकि ख़ुदावन्द यहोवाह, इस्राईल का क़ुददूस यूँ फ़रमाता
है, कि वापस आने और ख़ामोश बैठने में तुम्हारी सलामती है;
ख़ामोशी और भरोसे में तुम्हारी ताक़त है।" लेकिन तुम ने यह न
चाहा।
16 तुम ने कहा, नहीं, हम तो घोड़ों पर चढ़ के भागेंगे; इसलिए
तुम भागोगे; और कहा, हम तेज़ रफ़्तार जानवरों पर सवार होंगे;
फिर तुम्हारा पीछा करनेवाले तेज़ रफ़्तार होंगे।
17 एक की झिड़की से एक हज़ार भागेंगे पाँच की झिडकी से
तुम ऐसा भागोगे कि तुम उस 'अलामत की तरह जो पहाड़ की
चोटी पर और उस निशान की तरह जो कोह पर नसब किया गया
हो रह जाओगे।
18 तोभी ख़ुदावन्द तुम पर मेहरबानी करने के लिए इन्तिज़ार
करेगा, और तुम पर रहम करने के लिए बुलन्द होगा। क्यूँकि
ख़ुदावन्द इन्साफ़ करने वाला ख़ुदा है, मुबारक हैं वह सब जो
उसका इन्तिज़ार करते हैं।
19 क्यूँकि ऐ सिय्यूनी क़ौम, जो येरूशलेम में बसेगी, तो फिर
न रोएगी; वह तेरी फ़रियाद की आवाज़ सुन कर यक़ीनन तुझ पर
रहम फ़रमाएगा; वह सुनते ही तुझे जवाब देगा।
20 और अगरचे ख़ुदावन्द तुझ को तंगी की रोटी और मुसीबत
का पानी देता है, तोभी तेरा मु'अल्लिम फिर तुझ से रूपोश न
होगा; बल्कि तेरी आँखें उसको देखेंगी।

21 और जब तू दहनी या बाँई तरफ़ मुड़े, तो तेरे कान तेरे पीछे
से यह आवाज़ सुनेंगे, कि "राह यही है, इस पर चल।"
22 उस वक़्त तू अपनी खोदी हुई मूरतों पर मढ़ी हुई चाँदी, और
ढाले हुए बुतों पर चढ़े हुए सोने को नापाक करेगा। तू उसे हैज़ के
लते की तरह फेंक देगा तू उसे कहेगा, निकल दूर हो।
23 तब वह तेरे बीज के लिए जो तू ज़मीन में बोए, बारिश
भेजेगा; और ज़मीन की अफ़ज़ाइश की रोटी का ग़ल्ला, 'उम्दा
और कसरत से होगा। उस वक़्त तेरे जानवर वसी' चरागाहों में
चरेंगे।
24 और बैल और जवान गधे जिनसे ज़मीन जोती जाती है,
लज़ीज़ चारा खाएँगे जो बेल्चे और छाज से फटका गया हो।
25 और जब बुर्ज गिर जाएँगे और बड़ी ख़ूँरेज़ी होगी, तो हर
एक ऊँचे पहाड़ और बुलन्द टीले पर चश्मे और पानी की नदियाँ
होंगी।
26 और जिस वक़्त ख़ुदावन्द अपने लोगों की शिकस्तगी को
दुरुस्त करेगा और उनके ज़ख़्मों को अच्छा करेगा; तो चाँद की
चाँदनी ऐसी होगी जैसी सूरज की रोशनी, और सूरज की रोशनी
सात गुनी बल्कि सात दिन की रोशनी के बराबर होगी।
27 देखो ख़ुदावन्द दूर से चला आता है, उसका ग़ज़ब भड़का
और धुंवें का बादल उठा उसके लब क़हर आलूदा और उसकी
ज़बान भसम करने वाली आग की तरह है।
28 उसका दम नदी के सैलाब की तरह है, जो गर्दन तक पहुँच
जाए; वह क़ौमों को हलाकत के छाज में फटकेगा और लोगों के
जबड़ों में लगाम डालेगा, ताकि उनको गुमराह करे।
29 तब तुम गीत गाओगे, जैसे उस रात गाते हो जब मुक़द्दस
'ईद मनाते हो; और दिल की ऐसी ख़ुशी होगी जैसी उस शख़्स
की जो बाँसुरी लिए हुए खिरामान हो कि ख़ुदावन्द के पहाड़ में
इस्राईल की चट्टान के पास जाए।

30 क्यूँकि ख़ुदावन्द अपनी जलाली आवाज़ सुनाएगा, और
अपने क़हर की शिद्दत और आतिश — ए — सोज़ान के शो'ले,
और सैलाब और आँधी और ओलों के साथ अपना बाज़ू नीचे
लाएगा।
31 हाँ ख़ुदावन्द की आवाज़ ही से असूर तबाह हो जाएगा वह
उसे लठ से मारेगा।
32 और उस क़ज़ा के लठ की हर एक ज़र्ब जो ख़ुदावन्द उस पर
लगाएगा, दफ़ और बरबत के साथ होगी और वह उससे सख़्त
लड़ाई लड़ेगा।
33 क्यूँकि तूफ़त मुद्दत से तैयार किया गया है; हाँ, वह बादशाह
के लिए गहरा और वसी' बनाया गया है; उसका ढेर आग और
बहुत सा ईंधन है, और ख़ुदावन्द की साँस गन्धक के सैलाब की
तरह उसको सुलगाती है।

31

[illegible]

1 उसपर अफ़सोस, जो मदद के लिए मिस्र को जाते और घोड़ों
पर एतमाद करते हैं और रथों पर भरोसा रखते हैं इसलिए कि
वह बहुत हैं, और सवारों पर इसलिए कि वह बहुत ताक़तवर हैं;
लेकिन इस्राईल के क़ुददूस पर निगाह नहीं करते और ख़ुदावन्द
के तालिब नहीं होते।
2 लेकिन वह भी तो 'अक़्लमन्द है और बला नाज़िल करेगा,
और अपने कलाम को बातिल न होने देगा वह शरीरों के घराने पर
और उन पर जो बदकिरदारों की हिमायत करते हैं चढ़ाई करेगा।
3 क्यूँकि मिस्री तो इंसान हैं ख़ुदा नहीं। और उनके घोड़े गोश्त
हैं रूह नहीं सो जब ख़ुदावन्द अपना हाथ बढ़ाएगा तो हिमायती
गिर जाएगा, और वह जिसकी हिमायत की गई पस्त हो जाएगा,
और वह सब के सब इकट्ठे हलाक हो जायेंगे।

4 क्यूँकि ख़ुदावन्द ने मुझ से यूँ फ़रमाया है कि जिस तरह
शेर बबर हाँ जवान शेर बबर अपने शिकार पर से ग़ुर्राता है और
अगर बहुत से गड़रिये उसके मुक़ाबिले को बुलाए जाएँ तो उनकी
ललकार से नहीं डरता, और उनके हुजूम से दब नहीं जाता; उसी
तरह रब्ब — उल — अफ़वाज सिय्यून पहाड़ और उसके टीले पर
लड़ने को उतरेगा।
5 मंडलाते हुए परिन्दे की तरह रब्ब — उल — अफ़्वाज
येरूशलेम की हिमायत करेगा; वह हिमायत करेगा और रिहाई
बख़्शेगा, रहम करेगा और बचा लेगा।
6 ऐ बनी इस्राईल तुम उसकी तरफ़ फिरो जिससे तुम ने सख़्त
बग़ावत की है।
7 क्यूँकि उस वक़्त उनमें से हर एक अपने चाँदी के बुत और
अपनी सोने की मूरतें, जिनको तुम्हारे हाथों ने ख़ताकारी के लिए
बनाया, निकाल फेंकेगा
8 तब असूर उसी तलवार से गिर जाएगा जो इंसान की नहीं,
और वही तलवार जो आदमी की नहीं उसे हलाक करेगी; वह
तलवार के सामने से भागेगा और उसके जवान मर्द ख़िराज गुज़ार
बनेंगे।
9 और वह ख़ौफ़ की वजह से अपने हसीन मकान से गुज़र
जाएगा, और उसके सरदार झण्डे से ख़ौफ़ज़दह हो जाएँगे,
ये ख़ुदावन्द फ़रमाता है, जिसकी आग सिय्यून में और भट्टी
येरूशलेम में है।

32

[illegible]

1 देख एक बादशाह सदाक़त से सल्तनत करेगा और शहज़ादे
'अदालत से हुक्मरानी करेंगे।
2 और एक शख़्स आँधी से पनाहगाह की तरह होगा, और
तूफ़ान से छिपने की जगह; और ख़ुश्क ज़मीन में पानी की नदियों

की तरह और मान्दिगी की ज़मीन में बड़ी चट्टान के साये की तरह
होगा
3 उस वक़्त देखनेवालों की आँखें धुन्धली न होंगी, और
सुननेवालों के कान सुनने वाले होंगे।
4 जल्दबाज़ का दिल इरफ़ान हासिल करेगा, और लुकनती की
ज़बान साफ़ बोलने में मुस्त'इद होगी।
5 तब बेवक़ूफ़ बा — मुरव्वत न कहलाएगा और बख़ील को
कोई सख़ी न कहेगा।
6 क्यूँकि बेवक़ूफ़ हिमाक़त की बातें करेगा और उसका दिल
बदी का मंसूबा बाँधेगा कि बेदीनी करे और ख़ुदावन्द के ख़िलाफ़
दरोग़गोई करे और भूके के पेट को ख़ाली करे और प्यासे को पानी
से महरूम रक्खे
7 और बख़ील के हथियार ज़बून हैं; वह बुरे मंसूबे बाँधा करता
है ताकि झूटी बातों से ग़रीब को और मोहताज को, जब कि वह
हक़ बयान करता हो, हलाक करे।
8 लेकिन साहब — ए — मुरव्वत सख़ावत की बातें सोचता है,
और वह सख़ावत के कामों में साबित क़दम रहेगा।
9 ऐ 'औरतों तुम जो आराम में हो, उठो मेरी आवाज़ सुनो; ऐ
बे परवा बेटियो, मेरी बातों पर कान लगाओ।
10 ऐ बे परवाह 'औरतो, साल से कुछ ज़्यादा 'अर्से में तुम
बेआराम हो जाओगी; क्यूँकि अंगूर की फ़स्ल जाती रहेगी फल
जमा' करने की नौबत न आयेगी।
11 ऐ 'औरतों तुम जो आराम में हो थरथराओ, ऐ बेपर्वाओ
मुज़्तरिब हो कपड़े उतार कर बरहना हो जाओ, कमर पर टाट
बाँधो।
12 वह दिल पज़ीर खेतों और मेवादार ताकों के लिए छाती
पीटेंगी।
13 मेरे लोगों की सर ज़मीन में काँटे और झाड़ियाँ होंगी बल्कि
ख़ुशवक़्त शहर के तमाम ख़ुश घरों में भी।

14 क्यूँकि क़स्र ख़ाली हो जाएगा, और आबाद शहर तर्क किया जाएगा; 'ओफल और दीद बानी का बुर्ज हमेशा तक मांद बनकर गोख़रों की आरामगाहें और गल्लों की चरागाहें होंगे।
15 ता वक़्त ये कि आलम — ए — बाला से हम पर रूह नाज़िल न हो और वीरान शादाब मैदान न बने, और शादाब मैदान जंगल न गिना जाए।
16 तब वीरान में 'अद्ल बसेगा और सदाक़त शादाब मैदान में रहा करेगी।
17 और सदाक़त का अंजाम सुलह होगा, और सदाक़त का फल हमेशा आराम — ओ — इत्मीनान होगा
18 और मेरे लोग सलामती के मकानों में और बेख़तर घरों में, और आसूदगी और आसाइश के काशानों में रहेंगे।
19 लेकिन जंगल की बर्बादी के वक़्त ओले पड़ेंगे औए शहर बिलकुल पस्त हो जायेगा।
20 तुम ख़ुशनसीब हो, जो सब नहरों के आसपास बोते हो और बैलों और गधों को उधर ले जाते हो।

33

[illegible]

1 तुझ पर अफ़सोस कि तू ग़ारत करता है, और ग़ारत न किया गया था! तू दगाबाज़ी करता है और किसी ने तुझ से दग़ाबाज़ी न की थी? जब तू ग़ारत कर चुकेगा तो तू ग़ारत किया जाएगा; और जब तू दग़ाबाज़ी कर चुकेगा, तो और लोग तुझ से दग़ाबाज़ी करेंगे।
2 ऐ ख़ुदावन्द हम पर रहम कर; क्यूँकि हम तेरे मुन्तज़िर हैं। तू हर सुबह उनका बाज़ू हो और मुसीबत के वक़्त हमारी नजात।
3 हंगामे की आवाज़ सुनते ही लोग भाग गए, तेरे उठते ही क़ौमें तितर — बितर हो गईं।

4 और तुम्हारी लूट का माल इसी तरह बटोरा जायेगा जिस
तरह कीड़े बटोर लेते हैं, लोग उस पर टिड्डी की तरह टूट पड़ेंगे।
5 ख़ुदावन्द सरफ़राज़ है, क्यूँकि वह बलन्दी पर रहता है; उसने
'अदालत और सदाक़त से सिय्यून को मा'मूर कर दिया है।
6 और तेरे ज़माने में अमन होगा नजात व हिकमत और 'अक़्ल
की फ़िरावानी होगी; ख़ुदावन्द का ख़ौफ़ उसका ख़ज़ाना है।
7 देख उनके बहादुर बाहर फ़रियाद करते हैं और सुलह के
क़ासिद फूट — फूटकर रोते हैं।
8 शाहराहें सुनसान हैं, कोई चलनेवाला न रहा; उसने 'अहद
शिकनी की शहरों को हक़ीर जाना, और इंसान को हिसाब में नहीं
लाता।
9 ज़मीन कुढ़ती और मुरझाती है। लुबनान रुस्वा हुआ और
मुरझा गया, शादून वीराने की तरह है; बसन और कर्मिल बे —
बर्ग हो गए।
10 ख़ुदावन्द फ़रमाता है, अब मैं उठूँगा; अब मैं सरफ़राज़ हूँगा;
अब मैं सर बलन्द हूँगा।
11 तुम भूसे से बारदार होगे, फूस तुम से पैदा होगा; तुम्हारा
दम आग की तरह तुम को भसम करेगा।
12 और लोग जले चूने की तरह होंगे; वह उन काँटों की तरह
होंगे, जो काटकर आग में जलाए जाएँ।
13 तुम जो दूर हो, सुनो कि मैंने क्या किया; और तुम जो
नज़दीक हो, मेरी क़ुदरत का इक़रार करो।
14 वह गुनाहगार जो सिय्यून में हैं डर गए; कपकपी ने बेदीनों
को आ दबाया है: 'कौन हम में से उस मुहलिक़ आग में रह सकता
है? और कौन हम में से हमेशा के शो'लों के बीच बस सकता है?
15 जो रास्तरफ़्तार और दुरुस्तगुफ़्तार हैं जो ज़ुल्म के नफ़े'
हक़ीर जानता है, जो रिश्वत से दस्तबरदार है, जो अपने कान
बन्द करता है ताकि ख़ूँरेज़ी के मज़मून न सुने, और आँखें मून्दता

है ताकि बुराई न देखे।
16 वह बुलन्दी पर रहेगा, उसकी पनाहगाह पहाड़ का क़िला'
होगी, उसको रोटी दी जाएगी, उसका पानी मुक़र्रर होगा।
17 तेरी आँखें बादशाह का जमाल देखेंगी:वह बहुत दूर तक
वसी' मुल्क पर नज़र करेंगी।
18 तेरा दिल उस दहशत पर सोचेगा कहाँ है वह गिनने वाला
कहाँ हैं वह तोलनेवाला? कहाँ है वह जो बुर्जों को गिनता था?
19 तू फिर उन तुन्दख़ू लोगों को न देखेगा जिनकी बोली तू
समझ नहीं सकता उनकी ज़बान बेगाना है जो तेरी समझ में नहीं
आती।
20 हमारी ईदगाह सिय्यून पर नज़र कर; तेरी आँखें येरूशलेम
को देखेंगी जो सलामती का मक़ाम है, बल्कि ऐसा ख़ेमा जो
हिलाया न जाएगा, जिसकी मेख़ों में से एक भी उखाड़ी न जाएगी,
और उसकी डोरियों में से एक भी तोड़ी न जाएगी।
21 बल्कि वहाँ ज़ुलजलाल ख़ुदावन्द, बड़ी नदियों और नहरों
के बदले हमारी गुन्जाइश के लिए आप मौजूद होगा कि वहाँ डॉंड
की कोई नाव न जाएगी, और न शानदार जहाज़ों का गुज़र उसमें
होगा।
22 क्यूँकि ख़ुदावन्द हमारा हाकिम है, ख़ुदावन्द हमारा
शरी'अत देने वाला है ख़ुदावन्द हमारा बादशाह है वही हम को
बचाएगा।
23 तेरी रस्सियाँ ढीली हैं; लोग मस्तूल की चूल को मज़बूत
न कर सके, वह बादबान न फैला सके; सो लूट का वाफ़िर माल
तक़सीम किया गया, लंगड़े भी ग़नीमत पर क़ाबिज़ हो गए।
24 वहाँ के बाशिन्दों में भी कोई न कहेगा, कि मैं बीमार हूँ; और
उनके गुनाह बख़्शे जाएँगे।

34

1 ऐ क़ौमों नज़दीक आकर सुनो, ऐ उम्मतों कान लगाओ!
ज़मीन और उसकी मा'मूरी, दुनिया और सब चीजें जो उसमें हैं
सुने,
2 क्यूँकि ख़ुदावन्द का क़हर तमाम क़ौमों पर और उसका ग़ज़ब
उनकी सब फ़ौजों पर है; उसने उनको हलाक कर दिया, उसने
उनको ज़बह होने के लिए हवाले किया।
3 और उनके मक़तूल फेंक दिए जायेंगे बल्कि उनकी लाशों से
बदबू उठेगी और पहाड़ उनके ख़ून से बह जाएँगे।
4 और तमाम अजराम — ए — फ़लक गुदाज़ हो जायेंगे
और आसमान तूमार की तरह लपेटे जाएँगे; और उनकी तमाम
अफ़्वाज ताक और अंजीर के मुरझाये हुए पत्तों की तरह गिर
जाएँगी।
5 क्यूँकि मेरी तलवार आसमान में मस्त हो गई है; देखो, वह
अदोम पर और उन लोगों पर जिनको मैंने मल'ऊन किया है सज़ा
देने को नाज़िल होगी।
6 ख़ुदावन्द की तलवार ख़ून आलूदा है; वह चर्बी और बर्रों और
बकरों के ख़ून से, और मेंढों के गुर्दों की चर्बी से चिकना गई। क्यूँकि
ख़ुदावन्द के लिए बुसराह में एक क़ुर्बानी और अदोम के मुल्क में
बड़ी ख़ूँरेज़ी है।
7 और उनके साथ जंगली साँड और बछड़े और बैल ज़बह होंगे
और उनका मुल्क ख़ून से सेराब हो जाएगा और उनकी गर्द चर्बी
से चिकना जाएगी।
8 क्यूँकि ये ख़ुदावन्द का इन्तक़ाम लेने का दिन और बदला लेने
का साल है, जिसमें वह सिय्यून का इन्साफ़ करेगा।
9 और उसकी नदियाँ राल होजाएगी और उसकी ख़ाक गंधक
और उसकी ज़मीन जलती हुई राल होगी।
10 जो शब — ओ — रोज़ कभी न बुझेगी; उससे हमेशा तक
धुँवा उठता रहेगा। नस्ल — दर — नस्ल वह उजाड़ रहेगी,

हमेशा से हमेशा तक कोई उधर से न गुज़रेगा।
11 लेकिन हवासिल और ख़ारपुश्त उसके मालिक होंगे उल्लू
और कौवे उसमें बसेंगे; और उस पर वीरानी का सूत' पड़ेगा, और
सुनसानी का साहूल डाला जाएगा।
12 उसके अशराफ़ में से कोई न होगा जिसे वह बुलाएँ कि
हुक्मरानी करे और उसके सब सरदार नाचीज़ होंगे।
13 और उसके क़स्रों में काँटे और उसके क़िलों' में बिच्छू बूटी
और ऊँट कटारे उगेंगे और वह गीदड़ों की माँदें और शुतरमुर्ग़ के
रहने का मक़ाम होगा।
14 और दश्ती दरिन्दे भेड़ियों से मुलाक़ात करेंगे और छगमास
अपने साथी को पुकारेगा; हाँ इफ़रात — ए — शब वहाँ आराम
करेगा और अपने टिकने की जगह पायेगा।
15 वहाँ उड़नेवाले साँप का आशियाना होगा और अंडे देना
और सैना और अपने साए में जमा' करना होगा वहाँ गिद्ध जमा'
होंगे और हर एक के साथ उसकी मादा होगी।
16 तुम ख़ुदावन्द की किताब में ढूंडो और पढ़ो:इनमें से एक भी
कम न होगा, और कोई बेजुफ़्त न होगा; क्यूँकि मेरे मुँह ने यही
हुक्म किया है और उसकी रूह ने इनको जमा' किया है।
17 और उसने इनके लिए पर्ची डाली और उसके हाथ ने इनके
लिए उसको जरीब से तक़सीम किया। इसलिए वह हमेशा तक
उसके मालिक होंगे और नसल दर नसल उसमें बसेगे।

35

[illegible]

1 जंगल और वीराना शादमान होंगे दश्त ख़ुशी करेगा और
नरगिस की तरह शगुफ़्ता होगा।
2 उसमें कसरत से कलियाँ निकलेंगी, वह शादमानी से गा कर
ख़ुशी करेगा। लुबनान की शौकत और कर्मिल और शारून की

ज़ीनत उसे दी जाएगी; वह ख़ुदावन्द का जलाल और हमारे ख़ुदा
की हश्मत देखेंगे।
3 कमज़ोर हाथों को ताक़त और नातवान घुटनों को तवानाई
दो।
4 उनको जो घबराने वाले हैं कहो, हिम्मत बांधो मत डरो देखो
तुम्हारा ख़ुदा सज़ा और जज़ा लिए आता है। हाँ, ख़ुदा ही आएगा
और तुम को बचाएगा।
5 उस वक़्त अन्धों की आँखें खोली जायेगी और बहरों के कान
खोले जाएँगे।
6 तब लंगड़े हिरन की तरह चौकड़ियाँ भरेंगे और गूँगे की ज़बान
गाएगी क्यूँकि वीरान में पानी और दश्त में नदियाँ फूट निकलेंगी।
7 बल्कि सराब तालाब हो जाएगा और प्यासी ज़मीन चश्मा
बन जाएगी; गीदड़ों की मान्दों में जहाँ वह पड़े थे ने और नल का
ठिकाना होगा।
8 और वहाँ एक शाहराह और गुज़रगाह होगी जो पाक राह
कहलाएगी; जिससे कोई नापाक गुज़र न करेगा लेकिन ये
मुसाफ़िरों के लिए होगी, बेवक़ूफ़ भी उसमें गुमराह न होंगे।
9 वहाँ शेर बबर न होगा और न कोई दरिन्दा उस पर चढ़ेगा न
वहाँ पाया जाएगा; लेकिन जिनका फ़िदया दिया गया वहाँ सैर
करेंगे।
10 और जिनको ख़ुदावन्द ने मख़लसी बख़्शी लौटेंगे और
सिय्यून में गाते हुए आएँगे, और हमेशा सुरूर उनके सिरों पर
होगा वह ख़ुशी और शादमानी हासिल करेंगे, और ग़म व अंदोह
काफ़ूर हो जाएँगे।

36

1 और हिज़क़ियाह बादशाह की सल्तनत के चौदहवें बरस
यूँ हुआ कि शाह — ए — असूर सनहेरिब ने यहूदाह के सब
फ़सीलदार शहरों पर चढ़ाई की और उनको ले लिया।
2 और शाह — ए — असूर ने रबशाक़ी को एक बड़े लश्कर
के साथ लकीस से हिज़क़ियाह के पास येरूशलेम को भेजा, और
उसने ऊपर के तालाब की नाली पर धोबियों के मैदान की राह में
मक़ाम किया।
3 तब इलियाक़ीम बिन ख़िलक़ियाह जो घर का दीवान था, और
शबनाह मुंशी और मुहर्रिर यूआख़ बिन आसिफ़ निकल कर उसके
पास आए।
4 और रबशाक़ी ने उनसे कहा, तुम हिज़क़ियाह से कहो: कि
मलिक — ए — मु'अज़म शाह — ए — असूर यूँ फ़रमाता है कि
तू क्या एतमाद किए बैठा है?
5 क्या मशवरत और जंग की ताक़त मुँह की बातें ही हैं आख़िर
किस के भरोसे पर तूने मुझ से सरकशी की है?
6 देख, तुझे उस मसले हुए सरकंडे के 'असा या'नी मिस्र पर
भरोसा है; उस पर अगर कोई टेक लगाए, तो वह उसके हाथ में
गड़ जाएगा और उसे छेद देगा। शाह — ए — मिस्र फ़िर'औन
उन सब के लिए, जो उस पर भरोसा करते हैं ऐसा ही है।
7 फ़िर अगर तू मुझ से यूँ कहे कि हमारा तवक्कुल ख़ुदावन्द
हमारे ख़ुदा पर है, तो क्या वह वही नहीं है जिसके ऊँचे मक़ामों
और मज़बहों को ढाकर हिज़क़ियाह ने यहूदाह और येरूशलेम से
कहा है कि तुम इस मज़बह के आगे सिज्दा किया करो।
8 इसलिए अब ज़रा मेरे आक़ा शाह — ए — असूर के साथ
शर्त बाँध और मैं तुझे दो हज़ार घोड़े दूँगा, बशर्ते कि तू अपनी
तरफ़ से उन पर सवार चढ़ा सके।
9 भला तू क्यूँकर मेरे आक़ा के कमतरीन मुलाज़िमों में से एक
सरदार का भी मुँह फेर सकता है? और तू रथों और सवारों के लिए

मिस्र पर भरोसा करता है?
10 और क्या अब मैंने ख़ुदावन्द के बे कहे ही इस मक़ाम को
ग़ारत करने के लिए इस पर चढ़ाई की है? ख़ुदावन्द ही ने तो
मुझ से कहा कि इस मुल्क पर चढ़ाई कर और इसे ग़ारत करदे
11 तब इलियाक़ीम और शबनाह और यूआख़ ने रबशाक़ी से
'अर्ज़ की कि अपने ख़ादिमों से अरामी ज़बान में बात कर, क्यूँकि
हम उसे समझते हैं, और दीवार पर के लोगों के सुनते हुए यहूदियों
की ज़बान में हम से बात न कर।
12 लेकिन रबशाक़ी ने कहा, क्या मेरे आक़ा ने मुझे ये बातें
कहने को तेरे आक़ा के पास या तेरे पास भेजा है? क्या उसने मुझे
उन लोगों के पास नहीं भेजा, जो तुम्हारे साथ अपनी ही नजासत
खाने और अपना ही क़ारूरा पीने को दीवार पर बैठे हैं?
13 फिर रबशाक़ी खड़ा हो गया और यहूदियों की ज़बान में
बलन्द आवाज़ से यूँ कहने लगा, कि मुल्क — ए — मु'अज़म
शाह — ए — असूर का कलाम सुनो!
14 बादशाह यूँ फ़रमाता है: कि हिज़क़ियाह तुम को धोखा न
दे, क्यूँकि वह तुम को छुड़ा नहीं सकेगा।
15 और न वह ये कह कर तुम से ख़ुदावन्द पर भरोसा कराए कि
ख़ुदावन्द ज़रूर हम को छुड़ाएगा, और ये शहर शाह — ए —
असूर के हवाले न किया जाएगा।
16 हिज़क़ियाह की न सुनो; क्यूँकि शाह — ए — असूर यूँ
फ़रमाता है कि तुम मुझ से सुलह कर लो, और निकलकर मेरे
पास आओ; तुम में से हर एक अपनी ताक और अपने अंजीर के
दरख़्त का मेवा खाता और अपने हौज़ का पानी पीता रहे।
17 जब तक कि मैं आकर तुम को ऐसे मुल्क में न ले जाऊँ,
जो तुम्हारे मुल्क की तरह ग़ल्ला और मय का मुल्क, रोटी और
ताकिस्तानों का मुल्क है।
18 ख़बरदार ऐसा न हो कि हिज़क़ियाह तुम को ये कह कर

तरग़ीब दे, कि ख़ुदावन्द हम को छुड़ाएगा। क्या क़ौमों के मा'बूदों
में से किसी ने भी अपने मुल्क को शाह — ए — असूर के हाथ से
छुड़ाया है?
19 हमात और अरफ़ाद के मा'बूद कहाँ हैं? सिफ़वाइम के
मा'बूद कहाँ हैं? क्या उन्होंने सामरिया को मेरे हाथ से बचा
लिया?
20 इन मुल्कों के तमाम मा'बूदों में से किस किस ने अपना मुल्क
मेरे हाथ से छुड़ा लिया, जो ख़ुदावन्द भी येरूशलेम को मेरे हाथ
से छुड़ा लेगा?
21 लेकिन वह ख़ामोश रहे और उसके जवाब में उन्होंने एक
बात भी न कही; क्यूँकि बादशाह का हुक्म ये था कि उसे जवाब
न देना।
22 और इलियाक़ीम — बिन — ख़िलक़ियाह जो घर का
दीवान था, और शबनाह मुंशी और यूआख़ — बिन — आसफ़
मुहर्रिर अपने कपड़े चाक किए हुए हिज़क़ियाह के पास आए और
रबशाक़ी की बातें उसे सुनाई।

37

[illegible]

1 जब हिज़क़ियाह बादशाह ने ये सुना तो अपने कपड़े फाड़े
और टाट ओढ़कर ख़ुदावन्द के घर में गया।
2 और उसने घर के दीवान इलियाक़ीम और शबनाह मुंशी और
काहिनों के बुज़ुर्गों को टाट उढ़ा कर आमूस के बेटे यसा'याह नबी
के पास भेजा।
3 और उनहोंने उससे कहा कि हिज़क़ियाह यूँ कहता है कि आज
का दिन दुख और मलामत और तौहीन का दिन है क्यूँकि बच्चे पैदा
होने पर हैं और विलादत की ताक़त नहीं।
4 शायद ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा रबशाक़ी की बातें सुनेगा जिसे
उसके आक़ा शाह — ए — असूर ने भेजा है कि ज़िन्दा ख़ुदा की

तौहीन करे; और जो बातें ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने सुनीं, उनपर वह
मलामत करेगा। फिर तू उस बक़िये के लिए जो मौजूद है दूआ
कर।
5 तब हिज़क़ियाह बादशाह के मुलाज़िम यसा'याह के पास
आए।
6 और यसा'याह ने उनसे कहा, तुम अपने आक़ा से यूँ कहना,
ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तू उन बातों से जो तूने सुनी हैं, जिनसे
शाह — ए — असूर के मुलाज़िमों ने मेरी तकफ़ीर की है, परेशान
न हो।
7 देख मैं उसमें एक रूह डाल दूँगा, और वह एक अफ़वाह
सुनकर अपने मुल्क को लौट जाएगा, मैं उसे उसी के मुल्क में
तलवार से मरवा डालूँगा।
8 इसलिए रबशाक़ी लौट गया और उसने शाह — ए — असूर
को लिबनाह से लड़ते पाया, क्यूँकि उसने सुना था कि वह लकीस
से चला गया है।
9 और उसने कूश के बादशाह तिरहाक़ा के ज़रिए' सुना कि
वह तुझ से लड़ने को निकला है; और जब उसने ये सुना, तो
हिज़क़ियाह के पास क़ासिद भेजे और कहा,
10 शाह — ए — यहूदाह हिज़क़ियाह से यूँ कहना, कि तेरा
ख़ुदा जिस पर तेरा यक़ीन है, तुझे ये कह कर धोखा न दे कि
येरूशलेम शाह — ए — असूर के क़ब्ज़े में न किया जाएगा।
11 देख तूने सुना है कि असूर के बादशाहों ने तमाम मुल्कों को
बिलकुल ग़ारत करके उनका क्या हाल बनाया है; इसलिए क्या
तू बचा रहेगा?
12 क्या उन क़ौमों के मा'बूदों ने उनको, या'नी जूज़ान और
हारान और रसफ़ और बनी अदन को जो तिलसार में थे, जिनको
हमारे बाप — दादा ने हलाक किया, छुड़ाया।
13 हमात का बादशाह, और अरफ़ाद का बादशाह, और शहर

सिफ़वाइम और हेना' और 'इवाह का बादशाह कहाँ है।
14 हिज़क़ियाह ने क़ासिदों के हाथ से ख़त लिया और उसे
पढ़ा और हिज़क़ियाह ने ख़ुदावन्द के घर जाकर उसे ख़ुदावन्द
के सामने फैला दिया।
15 और हिज़क़ियाह ने ख़ुदावन्द से यूँ दुआ की,
16 ऐ रब्ब — उल — अफ़वाज, इस्राईल के ख़ुदा करूबियों के
ऊपर बैठनेवाले; तू ही अकेला ज़मीन की सब सल्तनतों का ख़ुदा
है, तू ही ने आसमान और ज़मीन को पैदा किया।
17 ऐ ख़ुदावन्द कान लगा और सुन; ऐ ख़ुदावन्द अपनी आँखें
खोल और देख; और सनहेरिब की इन सब बातों को जो उसने
ज़िन्दा ख़ुदा की तौहीन करने के लिए कहला भेजी हैं, सुनले
18 ऐ ख़ुदावन्द, दर — हक़ीक़त असूर के बादशाहों ने सब क़ौमों
को उनके मुल्कों के साथ तबाह किया,
19 और उनके मा'बूदों को आग में डाला, क्यूँकि वह ख़ुदा न थे
बल्कि आदमियों की दस्तकारी थे, लकड़ी और पत्थर; इसलिए
उन्होंने उनको हलाक किया है।
20 इसलिए अब ऐ ख़ुदावन्द हमारे ख़ुदा, हम को उसके हाथ से
बचा ले, ताकि ज़मीन की सब सल्तनतें जान लें कि तू ही अकेला
ख़ुदावन्द है।
21 तब यसा'याह बिन आमूस ने हिज़क़ियाह को कहला भेजा,
कि ख़ुदावन्द इस्राईल का ख़ुदा यूँ फ़रमाता है चूँकि तूने शाह —
ए — असूर सनहेरिब के ख़िलाफ़ मुझ से दुआ की है,
22 इसलिए ख़ुदावन्द ने उसके हक़ में यूँ फ़रमाया है, कि 'कुँवारी
दुख़्तर — ए — सिय्यून ने तेरी तहक़ीर की और तेरा मज़ाक़
उड़ाया है। येरूशलेम की बेटी ने तुझ पर सिर हिलाया है।
23 तूने किस की तौहीन — ओ — तक्फ़ीर की है? तूने किसके
ख़िलाफ़ अपनी आवाज़ बलन्द की और अपनी आँखें ऊपर उठाईं?
इस्राईल के क़ुददूस के ख़िलाफ़।

24 तूने अपने ख़ादिमों के ज़रीए से ख़ुदावन्द की तौहीन की और
कहा कि मैं अपने बहुत से रथों को साथ लेकर पहाड़ों की चोटियों
पर बल्कि लुबनान के बीच हिस्सों तक चढ़ आया हूँ, और मैं उसके
ऊँचे ऊँचे देवदारों और अच्छे से अच्छे सनोबर के दरख़्तों को काट
डालूँगा, और मैं उसके चोटी पर के ज़रख़ेज़ जंगल में जा घुसूंगा।
25 मैंने खोद खोद कर पानी पिया है और मैं अपने पाँव के तल्वे
से मिस्र की सब नदियाँ सुखा डालूँगा।
26 क्या तूने नहीं सुना कि मुझे ये किए हुए मुद्दत हुई; और मैंने
पिछले दिनों से ठहरा दिया था? अब मैंने उसी को पूरा किया है
कि तू फ़सीलदार शहरों को उजाड़ कर खण्डर बना देने के लिए
खड़ा हो।
27 इसी वजह से उनके बाशिन्दे कमज़ोर हुए और घबरा गए,
और शर्मिन्दा हुए; और मैदान की घास और पौध, छतों पर की
घास, खेत के अनाज की तरह हो गए जो अभी बढ़ा न हो।
28 मैं तेरी निशस्त और आमद — ओ — रफ़्त और तेरा मुझ
पर झुंझलाना जानता हूँ।
29 तेरे मुझ पर झुंझलाने की वजह से और इसलिए कि तेरा
घमण्ड मेरे कानों तक पहुँचा है, मैं अपनी नकेल तेरी नाक में और
अपनी लगाम तेरे मुँह में डालूँगा, और तू जिस राह से आया है मैं
तुझे उसी राह से वापस लौटा दूँगा।
30 और तेरे लिए ये निशान होगा कि तुम इस साल वह चीज़ें
जो अज़ — ख़ुद उगती हैं, और दूसरे साल वह चीज़ें जो उनसे
पैदा हों खाओगे; और तीसरे साल तुम बोना और काटना और
बाग़ लगा कर उनका फल खाना।
31 और वह बक़िया जो यहूदाह के घराने से बच रहा है, फिर
नीचे की तरफ जड़ पकड़ेगा और ऊपर की तरफ़ फल लाएगा;
32 क्यूँकि एक बक़िया येरूशलेम में से और वह जो बच रहे हैं।
सिय्यून पहाड़ से निकलेंगे; रब्ब — उल — अफ़वाज की ग़य्यूरी

ये कर दिखाएगी।
33 “इसलिए ख़ुदावन्द शाह — ए — असूर के हक़ में यूँ
फ़रमाता है कि वह इस शहर में आने या यहाँ तीर चलाने न
पाएगा; वह न तो सिपर लेकर उसके सामने आने और न उसके
सामने दमदमा बाँधने पाएगा।
34 बल्कि ख़ुदावन्द फ़रमाता है कि जिस रास्ते से वह आया
उसी रास्ते से लौट जाएगा, और इस शहर में आने न पाएगा।
35 क्यूँकि मैं अपनी ख़ातिर और अपने बन्दे दाऊद की ख़ातिर,
इस शहर की हिमायत करके इसे बचाऊँगा।”
36 फिर ख़ुदावन्द के फ़रिश्ते ने असूरियों की लश्करगाह में
जाकर एक लाख पिच्चासी हज़ार आदमी जान से मार डाले; और
सुबह को जब लोग सवेरे उठे, तो देखा कि वह सब पड़े हैं।
37 तब शाह — ए — असूर सनहेरिब रवानगी करके वहाँ से
चला गया और लौटकर नीनवाह में रहने लगा।
38 और जब वह अपने मा'बूद निसरूक के मंदिर में इबादत कर
रहा था तो अदरम्मलिक और शराज़र, उसके बेटों ने उसे तलवार
से क़त्ल किया और अरारात की सर ज़मीन को भाग गए। और
उसका असरहद्दून उसकी जगह बादशाह हुआ।

38

[illegible]

1 उन ही दिनों में हिज़क़ियाह ऐसा बीमार पड़ा कि मरने के
क़रीब हो गया और यसा'याह नबी आमूस के बेटे ने उसके पास
आकर उससे कहा कि ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है कि तू अपने घर का
इन्तिज़ाम करदे क्यूँकि तू मर जाएगा और बचने का नहीं।
2 तब हिज़क़ियाह ने अपना मुँह दीवार की तरफ़ किया और
ख़ुदावन्द से दुआ की।

3 और कहा ऐ ख़ुदावन्द मैं तेरी मिन्नत करता हूँ याद फ़रमा कि
मैं तेरे सामने सच्चाई और पूरे दिल से चलता रहा हूँ, और जो तेरी
नज़र में अच्छा है वही किया है और हिज़क़ियाह ज़ार — ज़ार
रोया।
4 तब ख़ुदावन्द का ये कलाम यसायाह पर नाज़िल हुआ
5 कि जा और हिज़क़ियाह से कह कि ख़ुदावन्द तेरे बाप दाऊद
का ख़ुदा यूँ फ़रमाता है कि मैंने तेरी दू'आ सुनी, मैंने तेरे आँसू देखे
इसलिए देख मैं तेरी उम्र पन्द्रह बरस और बढ़ा दूँगा।
6 और मैं तुझ को और इस शहर को शाह — ए — असूर के
हाथ से बचा लूँगा; और मैं इस शहर की हिमायत करूँगा।
7 और ख़ुदावन्द की तरफ़ से तेरे लिए ये निशान होगा कि
ख़ुदावन्द इस बात को जो उसने फ़रमाई पूरा करेगा।
8 देख मैं आफ़ताब के ढले हुए साए के दर्जों में से आख़ज़ की धूप
घड़ी के मुताबिक़ दस दर्जे पीछे को लौटा दूँगा चुनाँचे आफ़ताब
जिन दर्जों से ढल गया था उनमें के दस दर्जे फिर लौट गया।
9 शाह — ए — यहूदाह हिज़क़ियाह की तहरीर, जब वह
बीमार था और अपनी बीमारी से शिफ़ायाब हुआ।
10 मैंने कहा मैं अपनी आधी उम्र में पाताल के फाटकों में
दाख़िल हूँगा, मेरी ज़िन्दगी के बाक़ी बरस मुझसे छीन लिए गए।
11 मैंने कहा मैं ख़ुदावन्द को हाँ ख़ुदावन्द को ज़िन्दों की ज़मीन
में फिर न देखूँगा, इंसान और दुनिया के बाशिन्दे मुझे फिर दिखाई
न देंगे।
12 मेरा घर उजड़ गया है और गडरिए के ख़ेमा की तरह मुझसे
दूर किया गया मैंने जुलाहे की तरह अपनी ज़िन्दगानी को लपेट
लिया है वह मुझको तांत से काट डालेगा सुबह से शाम तक तू
मुझको तमाम कर डालता है।
13 मैंने सुबह तक तहम्मुल किया; तब वह शेर बबर की तरह
मेरी सब हड्डियाँ चूर कर डालता है सुबह से शाम तक तू मुझे

तमाम कर डालता है।
14 मैं अबाबील और सारस की तरह चीं — चीं करता रहा;
मैं कबूतर की तरह कुढ़ता रहा; मेरी आँखें ऊपर देखते — देखते
पथरा गईं ऐ ख़ुदावन्द, मैं बे — कस हूँ, तू मेरा कफ़ील हो।
15 मैं क्या कहूँ? उसने तो मुझ से वा'दा किया, और उसी ने उसे
पूरा किया; मैं अपनी बाक़ी उम्र अपनी जान की तल्ख़ी की वजह
से आहिस्ता आहिस्ता बसर करूँगा।
16 ऐ ख़ुदावन्द, इन्हीं चीज़ों से इंसान की ज़िन्दगी है, और इन्ही
में मेरी रूह की हयात है; इसलिए तू ही शिफ़ा बख़्श और मुझे
ज़िन्दा रख।
17 देख, मेरा सख़्त रन्ज राहत से तब्दील हुआ; और मेरी जान
पर मेहरबान होकर तूने उसे हलाकी के गढे से रिहाई दी; क्यूँकि
तूने मेरे सब गुनाहों को अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया।
18 इसलिए कि पाताल तेरी इबादत नहीं कर सकता; और मौत
से तेरी हम्द नहीं हो सकती। वह जो क़ब्र में उतरने वाले हैं तेरी
सच्चाई के उम्मीदवार नहीं हो सकते।
19 ज़िन्दा,' हाँ, ज़िन्दा ही तेरी तम्जीद करेगा जैसा आज के
दिन मैं करता हूँ, बाप अपनी औलाद को तेरी सच्चाई की ख़बर
देगा।
20 ख़ुदावन्द मुझे बचाने को तैयार है; इसलिए हम अपने
तारदार साज़ों के साथ उम्र भर ख़ुदावन्द के घर में सरोदख़्वानी
करते रहेंगे।
21 यसा'याह ने कहा था, कि'अंजीर की टिकिया लेकर फोड़े पर
बाँधे, और वह शिफ़ा पाएगा।
22 और हिज़क़ियाह ने कहा था, इसका क्या निशान है कि मैं
ख़ुदावन्द के घर में जाऊँगा।

39

1 उस वक़्त मरूदक बल्दान — बिन — बल्दान, शाह — ए
— बाबुल ने हिज़क़ियाह के लिए नामे और तहाइफ़ भेजे; क्यूँकि
उसने सुना था कि वह बीमार था और शिफ़ायाब हुआ।

2 और हिज़क़ियाह उनसे बहुत ख़ुश हुआ और अपने ख़ज़ाने,
या'नी चाँदी और सोना और मसालेह और बेश क़ीमत 'इत्र और
तमाम सिलाह ख़ाना, और जो कुछ उसके ख़ज़ानों में मौजूद था
उनको दिखाया। उसके घर में और उसकी सारी ममलुकत में ऐसी
कोई चीज़ न थी, जो हिज़क़ियाह ने उनको न दिखाई।

3 तब यसा'याह नबी ने हिज़क़ियाह बादशाह के पास आकर
उससे कहा, कि "ये लोग क्या कहते थे, और ये कहाँ से तेरे पास
आए?" हिज़क़ियाह ने जवाब दिया, कि "ये एक दूर के मुल्क,
या'नी बाबुल से मेरे पास आए हैं।"

4 तब उसने पूछा, कि "उन्होंने तेरे घर में क्या — क्या देखा?"
हिज़क़ियाह ने जवाब दिया, "सब कुछ जो मेरे घर में है, उन्होंने
देखा: मेरे ख़ज़ानों में ऐसी कोई चीज़ नहीं जो मैंने उनको दिखाई
न हो।"

5 तब यसा'याह ने हिज़क़ियाह से कहा, 'रब्ब — उल —
अफ़वाज का कलाम सुन ले:

6 देख, वह दिन आते हैं कि सब कुछ जो तेरे घर में है, और जो
कुछ तेरे बाप दादा ने आज के दिन तक जमा' कर रख्खा है बाबुल
को ले जायेंगे; ख़ुदावन्द फ़रमाता है, कुछ भी बाक़ी न रहेगा।

7 और वह तेरे बेटों में से जो तुझ से पैदा होंगे और जिनका बाप
तू ही होगा, कितनों को ले जाएँगे; और वह शाह — ए — बाबुल
के महल में ख्वाजासरा होंगे।

8 तब हिज़क़ियाह ने यसा'याह से कहा, 'ख़ुदावन्द का कलाम
जो तूने सुनाया भला है। और उसने ये भी कहा, मेरे दिनों में तो
सलामती और अम्न होगा।

40

[illegible]

1 तसल्ली दो तुम मेरे लोगों को तसल्ली दो; तुम्हारा ख़ुदा
फ़रमाता है।
2 येरूशलेम को दिलासा दो; और उसे पुकार कर कहो कि उसकी
मुसीबत के दिन जो जंग — ओ — जदल के थे गुज़र गए, उसके
गुनाह का कफ़्फ़ारा हुआ; और उसने ख़ुदावन्द के हाथ से अपने
सब गुनाहों का बदला दो चन्द पाया।
3 पुकारनेवाले की आवाज़: वीरान में ख़ुदावन्द की राह दुरुस्त
करो, सहरा में हमारे ख़ुदा के लिए शाहराह हमवार करो।
4 हर एक नशेब ऊँचा किया जाए, और हर एक पहाड़ और
टीला पस्त किया जाए; और हर एक टेढ़ी चीज़ सीधी और हर
एक नाहमवार जगह हमवार की जाए।
5 और ख़ुदावन्द का जलाल आशकारा होगा और तमाम बशर
उसको देखेगा क्यूँकि ख़ुदावन्द ने अपने मुँह से फ़रमाया है।
6 एक आवाज़ आई कि 'ऐलान कर, और मैंने कहा मैं क्या
'ऐलान करूँ, हर बशर घास की तरह है और उसकी सारी रौनक़
मैदान के फूल की तरह।
7 घास मुरझाती है, फूल कुमलाता है; क्यूँकि ख़ुदावन्द की हवा
उस पर चलती है; यक़ीनन लोग घास हैं।
8 हाँ, घास मुरझाती है, फूल कुमलाता है; लेकिन हमारे ख़ुदा
का कलाम हमेशा तक क़ाईम है।
9 ऐ सिय्यून को ख़ुशख़बरी सुनाने वाली, ऊँचे पहाड़ पर चढ़
जा; और ऐ येरूशलेम को बशारत देनेवाली, ज़ोर से अपनी
आवाज़ बलन्द कर, ख़ूब पुकार, और मत डर; यहूदाह की बस्तियों
से कह, 'देखो, अपना ख़ुदा!

10 देखो, ख़ुदावन्द ख़ुदा बड़ी क़ुदरत के साथ आएगा, और
उसका बाज़ू उसके लिए सल्तनत करेगा; देखो, उसका सिला
उसके साथ है, और उसका अज्र उसके सामने।
11 वह चौपान की तरह अपना गल्ला चराएगा, वह बर्रों को
अपने बाज़ूओं में जमा' करेगा और अपनी बग़ल में लेकर चलेगा,
और उनको जो दूध पिलाती हैं आहिस्ता आहिस्ता ले जाएगा।
12 किसने समन्दर को चुल्लू से नापा और आसमान की पैमाइश
बालिश्त से की, और ज़मीन की गर्द को पैमाने में भरा, और पहाड़ों
को पलड़ों में वज़न किया और टीलों को तराज़ू में तोला।
13 किसने ख़ुदावन्द की रूह की हिदायत की, या उसका
सलाहकार होकर उसे सिखाया?
14 उसने किससे मश्वरत ली है जो उसे ता'लीम दे, और उसे
'अदालत की राह सुझाए और उसे मा'रिफ़त की बात बताए, और
उसे हिकमत की राह से आगाह करे?
15 देख, क़ौमें डोल की एक बूँद की तरह हैं, और तराज़ू की
बारीक गर्द की तरह गिनी जाती हैं; देख, वह जज़ीरों को एक ज़र्रे
की तरह उठा लेता है।
16 लुबनान ईंधन के लिए काफ़ी नहीं और उसके जानवर
सोख्तनी क़ुर्बानी के लिए बस नहीं।
17 इसलिए सब क़ौमें उसकी नज़र में हेच हैं, बल्कि वह उसके
नज़दीक बतालत और नाचीज़ से भी कमतर गिनी जाती हैं।
18 तुम ख़ुदा को किससे तशबीह दोगे और कौन सी चीज़ उससे
मुशाबह ठहराओगे?
19 तराशी हुई मूरत! कारीगर ने उसे ढाला, और सुनार उस पर
सोना मढ़ता है और उसके लिए चाँदी की जज़ीरें बनाता है।
20 और जो ऐसा तहीदस्त है कि उसके पास नजर गुज़रानने को
कुछ नहीं, वह ऐसी लकड़ी चुन लेता है जो सड़ने वाली न हो; वह
होशियार कारीगर की तलाश करता है, ताकि ऐसी मूरत बनाए

जो क़ाईम रह सके।

21 क्या तुम नहीं जानते? क्या तुम ने नहीं सुना? क्या ये बात
इब्तिदा ही से तुम को बताई नहीं गई? क्या तुम बिना — ए —
'आलम से नहीं समझे?

22 वह मुहीत — ए — ज़मीन पर बैठा है, और उसके बाशिन्दे
टिड्डों की तरह हैं; वह आसमान को पर्दे की तरह तानता है, और
उसको सुकूनत के लिए ख़ेमे की तरह फैलाता है।

23 जो शहज़ादों को नाचीज़ कर डालता, और दुनिया के
हाकिमों को हेच ठहराता है।

24 वह अभी लगाए न गए, वह अभी बोए न गए; उनका तना
अभी ज़मीन में जड़ न पकड़ चुका कि वह सिर्फ़ उन पर फूँक मारता
है और वह ख़ुश्क हो जाते है और हवा का झोंका उनको भूसे की
तरह उड़ा ले जाता है।

25 वह क़ुद्दूस फ़रमाता है तुम मुझे किससे तशबीह दोगे और मैं
किस चीज़ से मशाबह हूँगा।

26 अपनी आँखें ऊपर उठाओ और देखो कि इन सबका ख़ालिक़
कौन है? वही जो इनके लश्कर को शुमार करके निकालता है,
और उन सबको नाम — ब — नाम बुलाता है। उसकी क़ुदरत की
'अज़मत और उसके बाज़ू की तवानाई की वजह से एक भी ग़ैर
हाज़िर नहीं रहता।

27 तब ऐ या'क़ूब! तू क्यूँ यूँ कहता है; और ऐ इस्राईल! तू किस
लिए ऐसी बात करता है, कि "मेरी राह ख़ुदावन्द से पोशीदा है
और मेरी 'अदालत मेरे ख़ुदा से गुज़र गई?"

28 क्या तू नहीं जानता, क्या तूने नहीं सुना? कि ख़ुदावन्द
हमेशा का ख़ुदा व तमाम ज़मीन का ख़ालिक़ थकता नहीं और
मांदा नहीं होता उसकी हिकमत इदराक से बाहर है।

29 वह थके हुए को ज़ोर बख़्शता है और नातवान की तवानाई
को ज़्यादा करता है।

30 नौजवान भी थक जाएँगे, और मान्दा होंगे और सूर्मा
बिल्कुल गिर पड़ेंगे;
31 लेकिन ख़ुदावन्द का इन्तिज़ार करने वाले, अज़ — सर —
ए — नौ ज़ोर हासिल करेंगे; वह उक़ाबों की तरह बाल — ओ —
पर से उड़ेंगे, वह दौड़ेंगे और न थकेंगे, वह चलेंगे और मान्दा न
होंगे।

41

[illegible]

1 ऐ जज़ीरो, मेरे सामने ख़ामोश रहो; और उम्मतें अज़ — सर
— ए — नौ — ज़ोर हासिल करें; वह नज़दीक आकर 'अर्ज़ करें;
आओ, हम मिलकर 'अदालत के लिए नज़दीक हों।
2 किसने पूरब से उसको खड़ा किया, जिसको वह सदाक़त से
अपने क़दमों में बुलाता है? वह क़ौमों को उसके हवाले करता
और उसे बादशाहों पर मुसल्लित करता है; और उनको ख़ाक की
तरह उसकी तलवार की तरफ़ उड़ती हुई भूसी की तरह उसकी
कमान के हवाले करता है,
3 वह उनका पीछा करता और उस राह से जिस पर पहले क़दम
न रख्खा था, सलामत गुज़रता है।
4 ये किसने किया और इब्तिदाई नस्लों को तलब करके अन्जाम
दिया? मैं ख़ुदावन्द ने, जो अव्वल — ओ — आख़िर हूँ, वह मैं ही
हूँ।
5 ज़मीन के किनारे थर्रा गए वह नज़दीक आते गए।
6 उनमें से हर एक ने अपने पड़ौसी की मदद की और अपने भाई
से कहा, हौसला रख!
7 बढ़ई ने सुनार की और उसने जो हथौड़ी से साफ़ करता है
उसकी जो निहाई पर पीटता है, हिम्मत बढ़ाई और कहा जोड़ तो
अच्छा है, इसलिए उनहोंने उसको मैंख़ों से मज़बूत किया ताकि
क़ाईम रहे।

8 लेकिन तू ऐ इस्राईल, मेरे बन्दे! ऐ या'क़ूब, जिसको मैंने
पसन्द किया, जो मेरे दोस्त अब्रहाम की नस्ल से है।
9 तू जिसको मैंने ज़मीन की इन्तिहा से बुलाया और उसके
अतराफ़ से तलब किया और तुझको कहा कि तू मेरा बंदा है मैंने
तुझको पसन्द किया और तुझको रद्द न किया।
10 तू मत डर, क्यूँकि मैं तेरे साथ हूँ; परेशान न हो, क्यूँकि मैं
तेरा ख़ुदा हूँ, मैं तुझे ज़ोर बख़्शूँगा, मैं यक़ीनन तेरी मदद करूँगा,
और मैं अपनी सदाक़त के दहने हाथ से तुझे संभालूँगा।
11 देख, वह सब जो तुझ पर ग़ज़बनाक हैं, पशेमान और रूस्वा
होंगे; वह जो तुझ से झगड़ते हैं, नाचीज़ हो जाएँगे और हलाक
होंगे।
12 तू अपने मुख़ालिफ़ों को ढूँडेगा और न पाएगा, तुझ से
लड़नेवाले नाचीज़ — ओ — हलाक हो जाएँगे।
13 क्यूँकि मैं ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तेरा दहना हाथ पकड़ कर
कहूँगा, मत डर, मैं तेरी मदद करूँगा।
14 परेशान न हो, ऐ कीड़े या'क़ूब! ऐ इस्राईल की क़लील
जमा'अत मैं तेरी मदद करूँगा, ख़ुदावन्द फ़रमाता है; हाँ मैं जो
इस्राईल का क़ुददूस तेरा फ़िदिया देनेवाला हूँ।
15 देख, मैं तुझे गहाई का नया और तेज़ दन्दानादार आला
बनाऊँगा; तू पहाड़ों को कूटेगा और उनको रेज़ा — रेज़ा करेगा,
और टीलों को भूसे की तरह बनाएगा।
16 तू उनको उसाएगा और हवा उनको उड़ा ले जाएगी, धूल
उनको तितर — बितर करेगी; लेकिन तू ख़ुदावन्द से ख़ुश होगा
और इस्राईल के क़ुददूस पर फ़ख़्र करेगा।
17 मुहताज और ग़रीब पानी ढूँडते फिरते हैं लेकिन मिलता
नहीं, उनकी ज़बान प्यास से ख़ुश्क है; मैं ख़ुदावन्द उनकी सुनूँगा,
मैं इस्राईल का ख़ुदा उनको तर्क न करूँगा।

18 मैं नंगे टीलों पर नहरें और वादियों में चश्मे खोलूँगा, सहरा
को तालाब और ख़ुश्क ज़मीन को पानी का चश्मा बना दूँगा।
19 वीराने में देवदार और बबूल और आस और ज़ैतून के दरख़्त
लगाऊँगा "सेहरा में चीड़ और सरो व सनोबर इकट्ठा लगाऊँगा।
20 ताकि वह सब देखें और जानें और ग़ौर करें, और समझे के
ख़ुदावन्द ही के हाथ ने ये बनाया और इस्राईल के क़ुददूस ने ये
पैदा किया।
21 ख़ुदावन्द फ़रमाता है, अपना दा'वा पेश करो, या'क़ूब का
बादशाह फ़रमाता है, अपनी मज़बूत दलीलें लाओ।"
22 वह उनको हाज़िर करें ताकि वह हम को होने वाली चीज़ों
की ख़बर दें:हम से अगली बातें बयान करो कि क्या थीं, ताकि
हम उन पर सोचें और उनके अंजाम को समझें या आइंदा की होने
वाली बातों से हम को आगाह करो।
23 बताओ कि आगे को क्या होगा, ताकि हम जानें कि तुम
इलाह हो; हाँ, भला या बुरा कुछ तो करो ताकि हम मुताज्जिब
हों और एक साथ उसे देखें।
24 देखो, तुम हेच और बेकार हो, तुम को पसन्द करनेवाला
मकरूह है।
25 मैंने उत्तर से एक को खड़ा किया है, वह आ पहुँचा; वह
आफ़ताब के मतले' से होकर मेरा नाम लेगा, और शाहज़ादों को
गारे की तरह लताड़ेगा जैसे कुम्हार मिट्टी गूँधता है।
26 किसने ये इब्तिदा से बयान किया कि हम जानें? और किसने
आगे से ख़बर दी कि हम कहें कि सच है? कोई उसका बयान
करने वाला नहीं, कोई उसकी ख़बर देने वाला नहीं कोई नहीं जो
तुम्हारी बातें सुने।
27 मैं ही ने पहले सिय्यून से कहा, कि "देख, उनको देख!" और
मैं ही येरूशलेम को एक बशारत देनेवाला बख़्शूँगा।
28 क्यूँकि मैं देखता हूँ कि उनमें कोई सलाहकार नहीं जिससे

पूछूँ, और वह मुझे जवाब दे।

29 देखो, वह सब के सब बतालत हैं; उनके काम हेच हैं; उनकी ढाली हुई मूरतें बिल्कुल नाचीज़ हैं।

42

[illegible]

1 देखो मेरा ख़ादिम, जिसको मैं संभालता हूँ, मेरा बरगुज़ीदा, जिससे मेरा दिल ख़ुश है; मैंने अपनी रूह उस पर डाली, वह क़ौमों में 'अदालत जारी करेगा।

2 वह न चिल्लाएगा और न शोर करेगा और न बाज़ारों में उसकी आवाज़ सुनाई देगी।

3 वह मसले हुए सरकंडे को न तोड़ेगा और टमटमाती बत्ती को न बुझाएगा, वह रास्ती से 'अदालत करेगा।

4 वह थका न होगा और हिम्मत न हारेगा, जब तक कि 'अदालत को ज़मीन पर क़ाईम न करे; जज़ीरे उसकी शरी'अत का इन्तिज़ार करेंगे।

5 जिसने आसमान को पैदा किया और तान दिया, जिसने ज़मीन को और उनको जो उसमें से निकलते हैं फैलाया, जो उसके बाशिन्दों को साँस और उस पर चलनेवालों को रूह 'इनायत करता है, या'नी ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है

6 "मैं ख़ुदावन्द ने तुझे सदाक़त से बुलाया, मैं ही तेरा हाथ पकड़ुंगा और तेरी हिफ़ाज़त करूँगा, और लोगों के 'अहद और क़ौमों के नूर के लिए तुझे दूँगा;

7 कि तू अन्धों की आँखें खोले, और ग़ुलामों को क़ैद से निकाले, और उनको जो अन्धेरे में बैठे हैं क़ैदख़ाने से छुड़ाए।

8 यहोवा मैं हूँ, यही मेरा नाम है; मैं अपना जलाल किसी दूसरे के लिए, और अपनी हम्द खोदी हुई मूरतों के लिए रवा न रखखूँगा।

9 देखो, पुरानी बातें पूरी हो गई और मैं नई बातें बताता हूँ,
इससे पहले कि वाक़े' हों, मैं तुम से बयान करता हूँ।"
10 ऐ समन्दर पर गुज़रने वालो और उसमें बसनेवालों, ऐ
जज़ीरो और उनके बाशिन्दों, ख़ुदावन्द के लिए नया गीत गाओ,
ज़मीन पर सिर — ता — सिर उसी की इबादत करो।
11 वीराना और उसकी बस्तियाँ, क़ीदार के आबाद गाँव, अपनी
आवाज़ बलन्द करें; सिला' के बसनेवाले गीत गाएँ, पहाड़ों की
चोटियों पर से ललकारें।
12 वह ख़ुदावन्द का जलाल ज़ाहिर करें और जज़ीरों में उसकी
सनाख़्वानी करें।
13 ख़ुदावन्द बहादुर की तरह निकलेगा, वह जंगी मर्द की तरह
अपनी ग़ैरत दिखाएगा; वह ना'रा मारेगा, हाँ, वह ललकारेगा;
वह अपने दुश्मनों पर ग़ालिब आएगा।
14 मैं बहुत मुद्दत से चुप रहा, मैं ख़ामोश हो रहा और ज़ब्त
करता रहा; लेकिन अब मैं दर्द — ए — ज़िह वाली की तरह
चिल्लाऊँगा; मैं हाँ पू गा और ज़ोर — ज़ोर से साँस लूँगा।
15 मैं पहाड़ों और टीलों को वीरान कर डालूँगा और उनके
सब्ज़ाज़ारों को ख़ुश्क करूँगा; और उनकी नदियों को जज़ीरे
बनाऊँगा और तालाबों को सुखा दूँगा।
16 और अन्धों को उस राह से जिसे वह नहीं जानते ले जाऊँगा,
मैं उनको उन रास्तों पर जिनसे वह आगाह नहीं ले चलूँगा; मैं
उनके आगे तारीकी को रोशनी और ऊँची नीची जगहों को हमवार
कर दूँगा, मैं उनसे ये सुलूक करूँगा और उनको तर्क न करूँगा।
17 जो खोदी हुई मूरतों पर भरोसा करते और ढाले हुए बुतों से
कहते हैं तुम हमारे मा'बूद हो वह पीछे हटेंगे और बहुत शर्मिन्दा
होंगे।
18 ऐ बहरो सुनो ऐ अन्धो नज़र करो ताकि तुम देखो।
19 मेरे ख़ादिम के सिवा अंधा कौन है और कौन ऐसा बहरा है

जैसा मेरा रसूल जिसे मैं भेजता हूँ मेरे दोस्त की और ख़ुदावन्द
के ख़ादिम की तरह नाबीना कौन है।
20 तू बहुत सी चीज़ों पर नज़र करता है पर देखता नहीं कान
तो खुले हैं पर सुनता नहीं।
21 ख़ुदावन्द को पसन्द आया कि अपनी सदाक़त की ख़ातिर
शरी'अत को बुज़ुर्गी दे, और उसे क़ाबिल — ए — ता'ज़ीम
बनाए।
22 लेकिन ये वह लोग हैं जो लुट गए और ग़ारत हुए, वह सब के
सब ज़िन्दानों में गिरफ़्तार और क़ैदख़ानों में छिपे हैं; वह शिकार
हुए और कोई नहीं छुड़ाता; वह लुट गए और कोई नहीं कहता,
'फेर दो!
23 तुम में कौन है जो इस पर कान लगाए? जो आइन्दा के बारे
में तवज्जुह से सुने?
24 किसने या'क़ूब को हवाले किया के ग़ारत हो, और इस्राईल
को कि लुटेरों के हाथ में पड़े? क्या ख़ुदावन्द ने नहीं, जिसके
ख़िलाफ़ हम ने गुनाह किया? क्यूँकि उन्होंने न चाहा कि उसकी
राहों पर चलें, और वह उसकी शरी'अत के ताबे' न हुए।
25 इसलिए उसने अपने क़हर की शिद्दत, और जंग की सख़्ती
को उस पर डाला; और उसे हर तरफ़ से आग लग गई पर वह उसे
दरियाफ़्त नहीं करता, वह उससे जल जाता है पर ख़ातिर में नहीं
लाता।

43

[illegible]

1 और अब, ऐ या'क़ूब, ख़ुदावन्द जिसने तुझ को पैदा किया,
और जिसने, ऐ इस्राईल, तुझ को बनाया यूँ फ़रमाता है कि ख़ौफ़ न
कर क्यूँकि तेरा फ़िदया दिया है मैंने तेरा नाम लेकर तुझे बुलाया
है, तू मेरा है।

2 जब तू सैलाब में से गुज़रेगा, तो मैं तेरे साथ हूँगा; और जब
तू नदियों को उबूर करेगा, तो वह तुझे न डुबाएँगी; जब तू आग
पर चलेगा, तो तुझे आँच न लगेगी और शोला तुझे न जलाएगा।
3 क्यूँकि मैं ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा, इस्राईल का क़ुददूस, तेरा
नजात देनेवाला हूँ। मैंने तेरे फ़िदिये में मिस्र को और तेरे बदले
कूश और सबा को दिया।
4 चूँकि तू मेरी निगाह में बेशक़ीमत और मुकर्रम ठहरा और मैंने
तुझ से मुहब्बत रख्खी, इसलिए मैं तेरे बदले लोग और तेरी जान
के बदले में उम्मतें दे दूँगा।
5 तू ख़ौफ़ न कर, क्यूँकि मैं तेरे साथ हूँ; मैं तेरी नस्ल को पूरब
से ले आऊँगा, और मग़रिब से तुझे फ़राहम करूँगा।
6 मैं उत्तर से कहूँगा कि दे डाल, और जुनूब से कि रख न छोड़;
मेरे बेटों को दूर से और मेरी बेटियों को ज़मीन की इन्तिहा से
लाओ
7 हर एक को जो मेरे नाम से कहलाता है और जिसको मैंने
अपने जलाल के लिए पैदा किया, जिसे मैंने पैदा किया; हाँ, जिसे
मैंने ही बनाया।
8 उन अन्धे लोगों को जो आँखें रखते हैं और उन बहरों को
जिनके कान हैं बाहर लाओ।
9 तमाम क़ौमें फ़राहम की जाएँ और सब उम्मतें जमा' हों।
उनके बीच कौन है जो उसे बयान करे या हम को पिछली बातें
बताए? वह अपने गवाहों को लाएँ ताकि वह सच्चे साबित हों,
और लोग सुनें और कहें कि ये सच है।
10 ख़ुदावन्द फ़रमाता है, तुम मेरे गवाह हो और मेरे ख़ादिम
भी, जिन्हें मैंने बरगुज़ीदा किया, ताकि तुम जानो और मुझ पर
ईमान लाओ और समझो कि मैं वही हूँ। मुझ से पहले कोई ख़ुदा
न हुआ और मेरे बाद भी कोई न होगा।
11 मैं ही यहोवा हूँ और मेरे सिवा कोई बचानेवाला नहीं।

12 मैंने 'ऐलान किया और मैंने नजात बख़्शी और मैं ही ने
ज़ाहिर किया, जब तुम में कोई अजनबी मा'बूद न था; इसलिए
तुम मेरे गवाह हो, ख़ुदावन्द फ़रमाता है, कि "मैं ही ख़ुदा हूँ।
13 आज से मैं ही हूँ; और कोई नहीं जो मेरे हाथ से छुड़ा सके;
मैं काम करूँगा, कौन है जो उसे रद्द कर सके?"
14 ख़ुदावन्द तुम्हारा नजात देनेवाला इस्राईल का क़ुद्दूस यूँ
फ़रमाता है, कि तुम्हारी ख़ातिर मैंने बाबुल पर ख़ुरूज कराया,
और मैं उन सबको फ़रारियों की हालत में और कसदियों को भी
जो अपने जहाज़ों में ललकारते थे, ले आऊँगा।
15 मैं ख़ुदावन्द तुम्हारा क़ुददूस, इस्राईल का ख़ालिक़, तुम्हारा
बादशाह हूँ।
16 ख़ुदावन्द जिसने समन्दर में राह और सैलाब में गुज़रगाह
बनाई,
17 जो जंगी रथों और घोड़ों और लश्कर और बहादुरों को
निकाल लाता है, वह सब के सब लेट गए, वह फिर न उठेंगे,
वह बुझ गए, हाँ, वह बत्ती की तरह बुझ गए।
18 या'नी ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि पिछली बातों को याद
न करो और पुरानी बातों पर सोचते न रहो।
19 देखो, मैं एक नया काम करूँगा; अब वह ज़हूर में आएगा,
क्या तुम उससे ना — वाक़िफ़ रहोगे? हाँ, मैं वीराने में एक राह
और सहरा में नदियाँ जारी करूँगा।
20 जंगली जानवर, गीदड़ और शुतरमुर्ग़, मेरी ताज़ीम करेंगे;
क्यूँकि मैं वीराने में पानी और सहरा में नदियाँ जारी करूँगा ताकि
मेरे लोगों के लिए, या'नी मेरे बरगुज़ीदों के पीने के लिए हों;
21 मैंने इन लोगों को अपने लिए बनाया ताकि वह मेरी हम्द
करें।
22 तोभी, ऐ या'क़ूब, तूने मुझे न पुकारा; बल्कि ऐ इस्राईल, तू
मुझ से तंग आ गया।

23 तू बर्रों को अपनी सोख़्तनी क़ुर्बानी के लिए मेरे सामने नहीं
लाया, और तूने अपने ज़बीहों से मेरी ताज़ीम नहीं की। मैंने
तुझे हदिया लाने पर मजबूर नहीं किया, और लुबान जलाने की
तक्लीफ़ नहीं दी।
24 तूने रुपये से मेरे लिए अगर को नहीं ख़रीदा, और तूने
मुझे अपने ज़बीहों की चर्बी से सेर नहीं किया; लेकिन तूने अपने
गुनाहों से मुझे ज़ेरबार किया और अपनी ख़ताओं से मुझे बेज़ार
कर दिया।
25 "मैं ही वह हूँ जो अपने नाम की ख़ातिर तेरे गुनाहों को
मिटाता हूँ, और मैं तेरी ख़ताओं को याद नहीं रख्खूंगा।
26 मुझे याद दिला, हम आपस में बहस करें; अपना हाल बयान
कर ताकि तू सादिक़ ठहरे।
27 तेरे बड़े बाप ने गुनाह किया, और तेरे तफ़्सीर करनेवालों ने
मेरी मुख़ालिफ़त की है।
28 इसलिए मैंने मक़दिस के अमीरों को नापाक ठहराया, और
या'क़ूब को ला'नत और इस्राईल को तानाज़नी के हवाले किया।

44

1 "लेकिन अब ऐ या'क़ूब, मेरे ख़ादिम और इस्राईल, मेरे
बरगुज़ीदा, सुन!
2 ख़ुदावन्द तेरा ख़ालिक़ जिसने रहम ही से तुझे बनाया और
तेरी मदद करेगा, यूँ फ़रमाता है: कि ऐ या'क़ूब, मेरे ख़ादिम और
यसूरून मेरे बरगुज़ीदा, ख़ौफ़ न कर!
3 क्यूँकि मैं प्यासी ज़मीन पर पानी उँडेलूँगा, और ख़ुश्क ज़मीन
में नदियाँ जारी करूँगा; मैं अपनी रूह तेरी नस्ल पर और अपनी
बरकत तेरी औलाद पर नाज़िल करूँगा
4 और वह घास के बीच उगेंगे, जैसे बहते पानी के किनारे पर
बेद हो।

5 एक तो कहेगा, 'मैं ख़ुदावन्द का हूँ, और दूसरा अपने
आपको या'क़ूब के नाम का ठहराएगा, और तीसरा अपने हाथ
पर लिखेगा, 'मैं ख़ुदावन्द का हूँ,' और अपने आपको इस्राईल के
नाम से मुलक़्क़ब करेगा।"

[illegible]

6 ख़ुदावन्द, इस्राईल का बादशाह और उसका फ़िदया देने
वाला रब्ब — उल — अफ़वाज यूँ फ़रमाता है, कि "मैं ही अव्वल
और मैं ही आख़िर हूँ; और मेरे सिवा कोई ख़ुदा नहीं।
7 और जब से मैंने पुराने लोगों की बिना डाली, कौन मेरी तरह
बुलाएगा और उसको बयान करके मेरे लिए तरतीब देगा? हाँ,
जो कुछ हो रहा है और जो कुछ होने वाला है, उसका बयान करे।
8 तुम न डरो, और परेशान न हो; क्या मैंने पहले ही से तुझे
ये नहीं बताया और ज़ाहिर नहीं किया? तुम मेरे गवाह हो। क्या
मेरे 'अलावाह कोई और ख़ुदा है? नहीं, कोई चट्टान नहीं; मैं तो
कोई नहीं जानता।"
9 खोदी हुई मूरतों के बनानेवाले, सबके सब बेकार हैं और उनकी
पसंदीदा चीज़ें बे नफ़ा; उन ही के गवाह देखते नहीं और समझते
नहीं, ताकि पशेमाँ हों।
10 किसने कोई बुत ख़ुदा के नाम से बनाया या कोई मूरत ढाली
जिससे कुछ फ़ाइदा हो?
11 देख, उसके सब साथी शर्मिन्दा होंगे क्यूँकि बनानेवाले तो
इंसान हैं; वह सब के सब जमा' होकर खड़े हों, वह डर जाएँगे, वह
सब के सब शर्मिन्दा होंगे।
12 लुहार कुल्हाड़ा बनाता है और अपना काम अंगारों से करता
है, और उसे हथौड़ों से दुरुस्त करता और अपने बाज़ू की क़ुव्वत
से गढ़ता है; हाँ वह भूका हो जाता हैं और उसका ज़ोर घट जाता
है वह पानी नहीं पीता और थक जाता है।

13 बढ़ई सूत फैलाता है और नुकेले हथियार से उसकी सूरत
खींचता है, वह उसको रंदे से साफ़ करता है और परकार से उस
पर नक़्श बनाता है; वह उसे इंसान की शक्ल बल्कि आदमी की
ख़ूबसूरत शबीह बनाता है, ताकि उसे घर में खड़ा करें।
14 वह देवदारों को अपने लिए काटता है और क़िस्म — क़िस्म
के बलूत को लेता है, और जंगल के दरख़्तों से जिसको पसन्द
करता है; वह सनोबर का दरख़्त लगाता है और मेंह उसे सींचता
है।
15 तब वह आदमी के लिए ईधन होता है; वह उसमें से कुछ
सुलगाकर तापता है, वह उसको जलाकर रोटी पकाता है, बल्कि
उससे बुत बना कर उसको सिज्दा करता वह खोदी हुई मूरत ख़ुदा
के नाम से बनाता है और उसके आगे मुँह के बल गिरता है।
16 उसका एक टुकड़ा लेकर आग में जलाता है, और उसी के
एक टुकड़े पर गोश्त कबाब करके खाता और सेर होता है; फिर वह
तापता और कहता है, "अहा, मैं गर्म हो गया, मैंने आग देखी!"
17 फिर उसकी बाक़ी लकड़ी से देवता या'नी खोदी हुई मूरत
बनाता है, और उसके आगे मुँह के बल गिर जाता है और उसे
सिज्दा करता है और उससे इल्तिजा करके कहता है "मुझे नजात
दे, क्यूँकि तू मेरा ख़ुदा है!"
18 वह नहीं जानते और नहीं समझते; क्यूँकि उनकी आँखें बन्द
हैं तब वह देखते नहीं, और उनके दिल सख़्त हैं लेकिन वह समझते
नहीं।
19 बल्कि कोई अपने दिल में नहीं सोचता और न किसी को
मा'रिफ़त और तमीज़ है कि "मैंने तो इसका एक टुकड़ा आग में
जलाया, और मैंने इसके अंगारों पर रोटी भी पकाई, और मैंने
गोश्त भूना और खाया; अब क्या मैं इसके बक़िये से एक मकरूह
चीज़ बनाऊँ? क्या मैं दरख़्त के कुन्दे को सिज्दा करूँ?"
20 वह राख खाता है; फ़रेबख़ुर्दा ने उसको ऐसा गुमराह कर

दिया है कि वह अपनी जान बचा नहीं सकता और नहीं कहता
क्या मेरे दहने हाथ में बतालत नहीं?
21 ऐ या'क़ूब, ऐ इस्राईल, इन बातों को याद रख; क्यूँकि तू
मेरा बन्दा है, मैंने तुझे बनाया है, तू मेरा ख़ादिम है; ऐ इस्राईल,
मैं तुझ को फ़रामोश न करूँगा।
22 मैंने तेरी ख़ताओं को घटा की तरह और तेरे गुनाहों को
बादल की तरह मिटा डाला; मेरे पास वापस आ जा, क्यूँकि मैंने
तेरा फ़िदिया दिया है।
23 ऐ आसमानो, गाओ कि ख़ुदावन्द ने ये किया, ऐ असफ़ल
— ए — ज़मीन, ललकार; ऐ पहाड़ो, ऐ जंगल और उसके सब
दरख़्तो, नग़मापरदाज़ी करो! क्यूँकि ख़ुदावन्द ने या'क़ूब का
फ़िदिया दिया, और इस्राईल में अपना जलाल ज़ाहिर करेगा।
24 ख़ुदावन्द तेरा फ़िदिया देनेवाला, जिसने रहम ही से तुझे
बनाया यूँ फ़रमाता है, कि मैं ख़ुदावन्द सबका ख़ालिक़ हूँ, मैं ही
अकेला आसमान को तानने और ज़मीन को बिछाने वाला हूँ, कौन
मेरा शरीक है?
25 मैं झूटों के निशान — आत को बातिल करता, और
फ़ालगीरों को दीवाना बनाता हूँ और हिकमत वालों को रद्द करता
और उनकी हिकमत को हिमाक़त ठहराता हूँ
26 अपने ख़ादिम के कलाम को साबित करता, और अपने
रसूलों की मसलहत को पूरा करता हूँ जो येरूशलेम के ज़रिए'
कहता हूँ, कि' वह आबाद हो जाएगा, और यहूदाह के शहरों के
ज़रिए', कि' वह ता'मीर किए जाएँगे, और मैं उसके खण्डरों को
ता'मीर करूँगा।
27 जो समन्दर को कहता हूँ, 'सूख जा और मैं तेरी नदियाँ सुखा
डालूँगा;
28 जो ख़ोरस के हक़ में कहता हूँ, कि वह मेरा चरवाहा है और
मेरी मर्ज़ी बिल्कुल पूरी करेगा; और येरूशलेम के ज़रिए' कहता

हूँ,' वह ता'मीर किया जाएगा, और हैकल के ज़रिए' कि उसकी
बुनियाद डाली जायेगी।

45

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

1 ख़ुदावन्द अपने मम्सूह ख़ोरस के हक़ में यूँ फ़रमाता है कि
मैंने उसका दहना हाथ पकड़ा कि उम्मतों को उसके सामने ज़ेर
करूँ और बादशाहों की कमरें खुलवा डालूँ और दरवाज़ों को उसके
लिए खोल दूँ और फाटक बन्द न किए जाएँ,
2 मैं तेरे आगे आगे चलूँगा और ना — हमवार जगहों को
हमवार बना दूँगा, मैं पीतल के दरवाज़ों को टुकड़े — टुकड़े करूँगा
और लोहे के बेन्डों को काट डालूँगा;
3 और मैं ज़ुल्मात के ख़ज़ाने और छिपे मकानों के दफ़ीने तुझे
दूँगा, ताकि तू जाने कि मैं ख़ुदावन्द इस्राईल का ख़ुदा हूँ जिसने
तुझे नाम लेकर बुलाया है।
4 मैंने अपने ख़ादिम या'क़ूब और अपने बरगुज़ीदा इस्राईल
की ख़ातिर तुझे नाम लेकर बुलाया; मैंने तुझे एक लक़ब बख़्शा
अगरचे तू मुझ को नहीं जानता।
5 मैं ही ख़ुदावन्द हूँ और कोई नहीं, मेरे अलावाह कोई ख़ुदा
नहीं मैंने तेरी कमर बाँधी अगरचे तूने मुझे न पहचाना;
6 ताकि पूरब से पश्चिम तक लोग जान ले कि मेरे अलावह
कोई नहीं; मैं ही ख़ुदावन्द हूँ, मेरे अलावाह कोई दूसरा नहीं।
7 मैं ही रोशनी का मूजिद और तारीकी का ख़ालिक़ हूँ, मैं
सलामती का बानी और बला को पैदा करने वाला हूँ, मैं ही
ख़ुदावन्द ये सब कुछ करनेवाला हूँ।
8 ऐ आसमान, ऊपर से टपक पड़; हाँ बादल रास्तबाज़ी
बरसाएँ, ज़मीन खुल जाए, और नजात और सदाक़त का फल

लाए; वह उनको इकट्ठे उगाए; मैं ख़ुदावन्द उसका पैदा करनेवाला
हूँ।
9 “अफ़सोस उस पर जो अपने ख़ालिक़ से झगड़ता है! ठीकरा
तो ज़मीन के ठीकरों में से है! क्या मिट्टी कुम्हार से कहे, 'तू क्या
बनाता है?” क्या तेरी दस्तकारी कहे, 'उसके तो हाथ नहीं?
10 उस पर अफ़सोस जो बाप से कहे, 'तू किस चीज़ का वालिद
है?' और माँ से कहे, 'तू किस चीज़ की वालिदा है?
11 ख़ुदावन्द इस्राईल का क़ुददूस और ख़ालिक़ यूँ फ़रमाता है,
कि “क्या तुम आनेवाली चीज़ों के ज़रिए' मुझ से पूछोगे? क्या
तुम मेरे बेटों या मेरी दस्तकारी के ज़रिए' मुझे हुक्म दोगे?
12 मैंने ज़मीन बनाई, और उस पर इंसान को पैदा किया; और मैं
ही ने, हाँ, मेरे हाथों ने आसमान को ताना, और उसके सब लश्करों
पर मैंने हुक्म किया।”
13 रब्ब — उल — अफ़वाज फ़रमाता है मैंने उसको सदाक़त
में खड़ा किया है और मैं उसकी तमाम राहों को हमवार करूँगा;
वह मेरा शहर बनाएगा, और मेरे ग़ुलामों को बग़ैर क़ीमत और
इवज़ लिए आज़ाद कर देगा।
14 ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि “मिस्र की दौलत, और कूश
की तिजारत, और सबा के कद्दावर लोग तेरे पास आएँगे और तेरे
होंगे; वह तेरी पैरवी करेंगे, वह बेड़ियाँ पहने हुए अपना मुल्क
छोड़कर आयेंगे और तेरे सामने सिज्दा करेंगे; वह तेरी मिन्नत
करेंगे और कहेंगे, यक़ीनन ख़ुदा तुझमें है और कोई दूसरा नहीं
और उसके सिवा कोई ख़ुदा नहीं।”
15 ऐ इस्राईल के ख़ुदा, ऐ नजात देनेवाले, यक़ीनन तू पोशीदा
ख़ुदा है।
16 बुत बनानेवाले सब के सब पशेमाँ और सरासीमा होंगे, वह
सब के सब शर्मिन्दा होंगे।
17 लेकिन ख़ुदावन्द इस्राईल को बचा कर हमेशा की नजात

बख़्शेगा; तुम हमेशा से हमेशा तक कभी पशेमाँ और सरासीमा न होगे।

18 क्यूँकि ख़ुदावन्द जिसने आसमान पैदा किए, वही ख़ुदा है;
उसी ने ज़मीन बनाई और तैयार की, उसी ने उसे क़ाईम किया;
उसने उसे सुन्सान पैदा नहीं किया बल्कि उसको आबादी के लिए
आरास्ता किया। वह यूँ फ़रमाता है, कि "मैं ख़ुदावन्द हूँ, और मेरे
'अलावाह और कोई नहीं।"

19 मैंने ज़मीन की किसी तारीक जगह में, पोशीदगी में तो
कलाम नहीं किया; मैंने या'क़ूब की नस्ल को नहीं फ़रमाया कि
'अबस मेरे तालिब हो। मैं ख़ुदावन्द सच कहता हूँ, और रास्ती
की बातें बयान फ़रमाता हूँ।

20 तुम जो क़ौमों में से बच निकले हो! जमा' होकर आओ
मिलकर नज़दीक हो वह जो अपनी लकड़ी की खोदी हुई मूरत
ख़ुदा के नाम से लिए फिरते हैं, और ऐसे मा'बूद से जो बचा नहीं
सकता दुआ करते हैं, अक़्ल से ख़ाली हैं।

21 तुम 'ऐलान करो और उनको नज़दीक लाओ; हाँ, वह एक
साथ मशवरत करें, किसने पहले ही से ये ज़ाहिर किया? किसने
पिछले दिनों में इसकी ख़बर पहले ही से दी है? क्या मैं ख़ुदावन्द
ही ने ये नहीं किया? इसलिए मेरे 'अलावाह कोई ख़ुदा नहीं है;
सादिक़ — उल — क़ौल और नजात देनेवाला ख़ुदा मेरे 'अलावाह
कोई नहीं।

22 'ऐ इन्तिहा — ए — ज़मीन के सब रहनेवालो, तुम मेरी
तरफ़ मुत्वज्जिह हो और नजात पाओ, क्यूँकि मैं ख़ुदा हूँ और मेरे
'अलावाह कोई नहीं।

23 मैंने अपनी ज़ात की क़सम खाई है, कलाम — ए — सिद्क़
मेरे मुँह से निकला है और वह टलेगा नहीं', कि 'हर एक घुटना
मेरे सामने झुकेगा और हर एक ज़बान मेरी क़सम खाएगी।

24 मेरे हक़ में हर एक कहेगा कि यक़ीनन ख़ुदावन्द ही में

रास्तबाज़ी और तवानाई है, उसी के पास वह आएगा और सब
जो उससे बेज़ार थे पशेमाँ होंगे।
25 इस्राईल की कुल नस्ल ख़ुदावन्द में सादिक़ ठहरेगी और उस
पर फ़ख़्र करेगी।

46

[illegible]

1 बेल झुकता है नबू ख़म होता उनके बुत जानवरों और चौपायों
पर लदे हैं; जो चीजें तुम उठाए फिरते थे, थके हुए चौपायों पर
लदी हैं।
2 वह झुकते और एक साथ ख़म होते हैं; वह उस बोझ को बचा
न सके, और वह आप ही ग़ुलामी में चले गए हैं।
3 ऐ या'क़ूब के घराने, और ऐ इस्राईल के घर के सब बाक़ी थके
लोगो, जिनको बत्न ही से मैंने उठाया और जिनको रहम ही से
मैंने गोद में लिया, मेरी सुनो
4 मैं तुम्हारे बुढ़ापे तक वही हूँ और सिर सफ़ेद होने तक तुम को
उठाए फिरूँगा। मैंने तुम्हें बनाया और मैं ही उठाता रहूँगा, मैं ही
लिए चलूँगा और रिहाई दूँगा।
5 तुम मुझे किससे तशबीह दोगे, और मुझे किसके बराबर
ठहराओगे, और मुझे किसकी तरह कहोगे ताकि हम मुशाबह हों?
6 जो थैली से बाइफ़रात सोना निकालते और चाँदी को तराज़ू
में तोलते हैं, वह सुनार को उजरत पर लगाते हैं और वह उससे
एक बुत ख़ुदा के नाम से बनाता है; फिर वह उसके सामने झुकते,
बल्कि सिज्दा करते हैं।
7 वह उसे कँधे पर उठाते हैं, वह उसे ले जाकर उसकी जगह पर
खड़ा करते हैं और वह खड़ा रहता है, वह अपनी जगह से सरकता
नहीं; बल्कि अगर कोई उसे पुकारे, तो वह न जवाब दे सकता है
और न उसे मुसीबत से छुड़ा सकता है।

8 ऐ गुनाहगारो, इसको याद रक्खो और मर्द बनो, इस पर फिर
सोचो।
9 पहली बातों को जो क़दीम से हैं, याद करो कि मैं ख़ुदा हूँ और
कोई दूसरा नहीं मैं ख़ुदा हूँ और मुझ सा कोई नहीं।
10 जो इब्तिदा ही से अंजाम की ख़बर देता हूँ, और पहले दिनों
से वह बातें जो अब तक वजूद में नहीं आई, बताता हूँ; और कहता
हूँ, कि 'मेरी मसलहत क़ाईम रहेगी और मैं अपनी मर्ज़ी बिल्कुल
पूरी करूँगा।
11 जो पूरब से उक़ाब को या'नी उस शख़्स को जो मेरे इरादे
को पूरा करेगा, दूर के मुल्क से बुलाता हूँ, मैंने ही कहा और मैं ही
इसको वजूद में लाऊँगा; मैंने इसका इरादा किया और मैं ही इसे
पूरा करूँगा।
12 "ऐ सख़्त दिलो, जो सदाक़त से दूर हो मेरी सुनो,
13 मैं अपनी सदाक़त को नज़दीक लाता हूँ, वह दूर नहीं होगी
और मेरी नजात ताख़ीर न करेगी; और मैं सिय्यून को नजात और
इस्राईल को अपना जलाल बख़्शूँगा।"

47

[illegible]

1 ऐ कुँवारी दुख़्तर — ए — बाबुल उतर आ और ख़ाक पर बैठ
ऐ कसदियों की दुख़्तर, तू बे — तख़्त ज़मीन पर बैठ; क्यूँकि अब
तू नर्म अन्दाम और नाज़नीन न कहलाएगी।
2 चक्की ले और आटा पीस, अपना निक़ाब उतार और दामन
समेट ले, टाँगे नंगी करके नदियों को पार कर।
3 तेरा बदन बे — पर्दा किया जाएगा, बल्कि तेरा सत्र भी देखा
जाएगा। मैं बदला लूँगा और किसी पर शफ़क़त न करूँगा।
4 हमारा फ़िदिया देनेवाले का नाम रब्ब — उल — अफ़वाज
या'नी इस्राईल का क़ुद्दूस है।

5 ऐ कसदियों की बेटी, चुप होकर बैठ और अन्धेरे में दाख़िल
हो; क्यूँकि अब तू मम्लुकतों की ख़ातून न कहलाएगी।
6 मैं अपने लोगों पर ग़ज़बनाक हुआ, मैंने अपनी मीरास को
नापाक किया और उनको तेरे हाथ में सौंप दिया; तूने उन पर रहम
न किया, तूने बूढ़ों पर भी अपना भारी जूआ रख्खा।
7 और तूने कहा भी, कि मैं हमेशा तक ख़ातून बनी रहूँगी,
इसलिए तूने अपने दिल में इन बातों का ख़याल न किया और
इनके अन्जाम को न सोचा।
8 इसलिए अब ये बात सुन, ऐ तू जो 'इश्रत में ग़र्क है, जो बेपर्वा
रहती है, जो अपने दिल में कहती है, कि मैं हूँ, और मेरे 'अलावाह
कोई नहीं; मैं बेवा की तरह न बैठूँगी, और न बेऔलाद होने की
हालत से वाक़िफ़ हूँगी;
9 इसलिए अचानक एक ही दिन में ये दो मुसीबतें तुझ पर आ
पड़ेंगी, या'नी तू बेऔलाद और बेवा हो जाएगी। तेरे जादू की
इफ़रात और तेरे सहर की कसरत के बावजूद ये मुसीबतें पूरे तौर
से तुझ पर आ पड़ेंगी।
10 क्यूँकि तूने अपनी शरारत पर भरोसा किया, तूने कहा, मुझे
कोई नहीं देखता; “तेरी हिकमत और तेरी अक़्ल ने तुझे बहकाया,
और तूने अपने दिल में कहा, मैं ही हूँ। मेरे 'अलावाह और कोई
नहीं।”
11 इसलिए तुझ पर मुसीबत आ पड़ेगी जिसका मंतर तू नहीं
जानती, और ऐसी बला तुझ पर नाज़िल होगी जिसको तू दूर न
कर सकेगी; यकायक तबाही तुझ पर आएगी जिसकी तुझ को
कुछ ख़बर नहीं।
12 अब अपना जादू और अपना सारा सेहर, जिसकी तूने बचपन
ही से मश्क कर रख्खी है इस्ते'माल कर; शायद तू उनसे नफ़ा'
पाए, शायद तू ग़ालिब आए।

13 तू अपनी मश्वरतों की कसरत से थक गई, अब अफ़लाक
— पैमा और मुनज्जिम और वह जो माह — ब — माह आइन्दा
हालात दरियाफ़्त करते हैं, उठें और जो कुछ तुझ पर आनेवाला
है उससे तुझ को बचाएँ।
14 देख, वह भूसे की तरह होंगे; आग उनको जलाएगी। वह
अपने आपको शो'ले की शिद्दत से बचा न सकेंगे, ये आग न तापने
के अंगारे होंगी, न उसके पास बैठ सकेंगे।
15 जिनके लिए तूने मेहनत की, तेरे लिए ऐसे ही होंगे; जिनके
साथ तूने अपनी जवानी ही से तिजारत की, उनमें से हर एक
अपनी राह लेगा; तुझ को बचानेवाला कोई न रहेगा।

48

[illegible]

1 ये बात सुनो ऐ या'क़ूब के घराने जो इस्राईल के नाम से
कहलाते हो और यहूदाह के चश्मे से निकले हो, जो ख़ुदावन्द
का नाम लेकर क़सम खाते हो, और इस्राईल के ख़ुदा का इक़रार
करते हो, बल्कि अमानत और सदाक़त से नहीं।
2 क्यूँकि वह शहर — ए — क़ुददूस के लोग कहलाते हैं और
इस्राईल के ख़ुदा पर तवक्कुल करते हैं जिसका नाम रब्ब — उल
— अफ़वाज है।
3 'मैंने पहले से होने वाली बातों की ख़बर दी है हाँ वह मेरे मुंह
से निकली मैंने उनको ज़ाहिर किया मैं नागहा उनको 'अमल में
लाया और वह ज़हूर में आईं।
4 चूँकि मैं जानता था कि तू ज़िद्दी है और तेरी गर्दन का पट्ठा
लोहे का है और तेरी पेशानी पीतल की है।
5 इसलिए मैंने पहले ही से ये बातें तुझे कह सुनाई, और उनके
बयान "होने से पहले तुझ पर ज़ाहिर कर दिया; ता न हो कि तू

कहे, 'मेरे बुत ने ये काम किया, और मेरे खोदे हुए सनम ने और
मेरी ढाली हुई मूरत ने ये बातें फ़रमाईं।"
6 तूने ये सुना है, इसलिए इस सब पर तवज्जुह कर; क्या तुम
इसका इक़रार न करोगे? अब मैं तुझे नई चीजें और छिपी बातें,
जिनसे तू वाक़िफ़ न था दिखाता हूँ।
7 वह अभी ख़ल्क की गई हैं, पहले से नहीं; बल्कि आज से पहले
तूने उनको सुना भी न था; ता न हो कि तू कहे, 'देख, मैं जानता
था।
8 हाँ, तूने न सुना न जाना; हाँ, पहले ही से तेरे कान खुले न
थे। क्यूँकि मैं जानता था कि तू भी बिल्कुल बेवफ़ा है, और रहम
ही से ख़ताकार कहलाता है।
9 'मैं अपने नाम की ख़ातिर अपने ग़ज़ब में ताख़ीर करूँगा,
और अपने जलाल की ख़ातिर तुझ से बाज़ रहूँगा, कि तुझे काट
न डालूँ।
10 देख, मैंने तुझे साफ़ किया, लेकिन चाँदी की तरह नहीं; मैंने
मुसीबत की कुठाली से तुझे साफ़ किया।
11 मैंने अपनी ख़ातिर, हाँ, अपनी ही ख़ातिर ये किया है; क्यूँकि
मेरे नाम की तक्फ़ीर क्यूँ हो? मैं तो अपनी शौकत दूसरे को नहीं
देने का।
12 ऐ या'क़ूब, आ मेरी सुन, और ऐ इस्राईल जो मेरा बुलाया
हुआ है; मैं वही हूँ, मैं ही अव्वल और मैं ही आख़िर हूँ।
13 यक़ीनन मेरे ही हाथ ने ज़मीन की बुनियाद डाली, और मेरे
दहने हाथ ने आसमान को फैलाया; मैं उनको पुकारता हूँ और वह
हाज़िर हो जाते हैं।
14 "तुम सब जमा' होकर सुनो। उनमें किसने इन बातों की
ख़बर दी है? वह जिसे ख़ुदावन्द ने पसन्द किया है; उसकी ख़ुशी
को बाबुल के मुताल्लिक 'अमल में लाएगा, और उसी का हाथ
कसदियों की मुख़ालिफ़त में होगा।

15 मैंने, हाँ मैं ही ने कहा; मैंने ही उसे बुलाया, मैं उसे लाया हूँ;
और वह अपनी चाल चलन में बरोमन्द होगा।
16 मेरे नज़दीक आओ और ये सुनो, मैंने शुरू' ही से पोशीदगी
में कलाम नहीं किया, जिस वक़्त से कि वह था मैं वहीं था।" और
अब ख़ुदावन्द ख़ुदा ने और उसकी रूह ने मुझ को भेजा है।
17 ख़ुदावन्द तेरा फ़िदिया देनेवाला, इस्राईल का क़ुददूस, यूँ
फ़रमाता है, कि "मैं ही ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा हूँ। जो तुझे मुफ़ीद
ता'लीम देता हूँ और तुझे उस राह में जिसमें तुझे जाना है, ले
चलता हूँ।
18 काश कि तू मेरे हुक्मों का सुनने वाला होता, और तेरी
सलामती नहर की तरह और तेरी सदाक़त समन्दर की मौजों की
तरह होती;
19 तेरी नस्ल रेत की तरह होती और तेरे सुल्बी फ़र्ज़न्द उसके
ज़र्रों की तरह बा — कसरत होते; और उसका नाम मेरे सामने से
काटा और मिटाया न जाता।"
20 तुम बाबुल से निकलो, कसदियों के बीच से भागो; नग़मे
की आवाज़ से बयान करो इसे मशहूर करों हाँ इसकी ख़बर ज़मीन
के किनारों तक पहुँचाओ; कहते जाओ, कि "ख़ुदावन्द ने अपने
ख़ादिम या'क़ूब का फ़िदिया दिया।"
21 और जब वह उनको वीराने में से ले गया, तो वह प्यासे न
हुए; उसने उनके लिए चटटान में से पानी निकाला, उसने चटटान
को चीरा और पानी फूट निकला।
22 ख़ुदावन्द फ़रमाता है, कि "शरीरों के लिए सलामती नहीं।"

49

1 ऐ जज़ीरों मेरी सुनों ऐ उम्मतों जो दो हो कान लगाओ
ख़ुदावन्द ने मुझे रहम ही से बुलाया, बत्न — ए — मादर ही
से उसने मेरे नाम का ज़िक्र किया।
2 और उसने मेरे मुँह को तेज़ तलवार की तरह बनाया, और
मुझ को अपने हाथ के साये तले छिपाया; उसने मुझे तीर — ए
— आबदार किया और अपने तरकश में मुझे छिपा रख्खा;
3 और उसने मुझ से कहा, "तू मेरा ख़ादिम है, तुझ में ऐ
इस्राईल, मैं अपना जलाल ज़ाहिर करूँगा।"
4 तब मैंने कहा, मैंने बेफ़ाइदा मशक्क़त उठाई मैंने अपनी
क़ुव्वत बेफ़ाइदा बतालत में सर्फ़ की; तोभी यक़ीनन मेरा हक़
ख़ुदावन्द के साथ और मेरा 'अज्र मेरे ख़ुदा के पास है।
5 चूँकि मैं ख़ुदावन्द की नज़र में जलील — उल — क़द्र हूँ और
वह मेरी तवानाई है, इसलिए वह जिसने मुझे रहम ही से बनाया,
ताकि उसका ख़ादिम होकर या'क़ूब को उसके पास वापस लाऊँ
और इस्राईल को उसके पास जमा' करूँ, यूँ फ़रमाता है।
6 हाँ, ख़ुदावन्द फ़रमाता है, कि "ये तो हल्की सी बात है कि तू
या'क़ूब के क़बाइल को खड़ा करने और महफ़ूज़ इस्राईलियों को
वापस लाने के लिए मेरा ख़ादिम हो, बल्कि मैं तुझ को क़ौमों के
लिए नूर बनाऊँगा कि तुझ से मेरी नजात ज़मीन के किनारों तक
पहुँचे।"
7 ख़ुदावन्द इस्राईल का फ़िदिया देने वाला और उसका क़ुददूस
उसको जिसे इंसान हक़ीर जानता है और जिससे क़ौम को नफ़रत
है और जो हाकिमों का चाकर है, यूँ फ़रमाता है, कि 'बादशाह
देखेंगे और उठ खड़े होंगे, और उमरा सिज्दा करेंगे; ख़ुदावन्द के
लिए जो सादिक़ — उल — क़ौल और इस्राईल का क़ुददूस है,
जिसने तुझे बरगुज़ीदा किया है।
8 ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि "मैंने क़ुबूलियत के वक़्त तेरी
सुनी, और नजात के दिन तेरी मदद की; और मैं तेरी हिफ़ाज़त

करूँगा और लोगों के लिए तुझे एक 'अहद ठहराऊँगा, ताकि
मुल्क को बहाल करे और वीरान मीरास वारिसों को दे;
9 ताकि तू क़ैदियों को कहे, कि 'निकल चलो,' और उनको जो
अन्धेरे में हैं, कि 'अपने आपको दिखलाओ।" वह रास्तों में चरेंगे
और सब नंगे टीले उनकी चरागाहें होंगे।
10 वह न भूके होंगे न प्यासे, और न गर्मी और धूप से उनको
ज़रर पहुँचेगा; क्यूँकि वह जिसकी रहमत उन पर है उनका रहनुमा
होगा, और पानी के सोतों की तरफ़ उनकी रहबरी करेगा।
11 और मैं अपने सारे पहाड़ों को एक रास्ता बना दूँगा, और मेरी
शाहराहें ऊँची की जाएँगी।
12 "देख, ये दूर से और ये उत्तर और मग़रिब से, और ये सिनीम
के मुल्क से आएँगे।"
13 ऐ आसमानो, गाओ; ऐ ज़मीन, ख़ुश हो; ऐ पहाड़ो, नग़मा
परदाज़ी करो! क्यूँकि ख़ुदावन्द ने अपने लोगों को तसल्ली बख़्शी
है और अपने रंजूरों पर रहम फ़रमाएगा।
14 लेकिन सिय्यून कहती है, यहोवाह ने मुझे छोड़ दिया है,
और ख़ुदावन्द मुझे भूल गया है।
15 'क्या ये मुम्किन है कि कोई माँ अपने शीरख़्वार बच्चे को
भूल जाए, और अपने रहम के फ़र्ज़न्द पर तरस न खाए? हाँ, वह
शायद भूल जाए, पर मैं तुझे न भूलूँगा।
16 देख, मैंने तेरी सूरत अपनी हथेलियों पर खोद रख्खी है; और
तेरी शहरपनाह हमेशा मेरे सामने है।
17 तेरे फ़र्ज़न्द जल्दी करते हैं, और वह जो तुझे बर्बाद करने
और उजाड़ने वाले थे, तुझ से निकल जाएँगे।
18 अपनी आँखें उठा कर चारों तरफ़ नज़र कर, ये सब के सब
मिलकर इकट्ठे होते हैं और तेरे पास आते हैं। ख़ुदावन्द फ़रमाता
है, मुझे अपनी हयात की क़सम कि तू यक़ीनन इन सबको ज़ेवर
की तरह पहन लेगी, और इनसे दुल्हन की तरह आरास्ता होगी।

19 “क्यूँकि तेरी वीरान और उजड़ी जगहों में, और तेरे बर्बाद
मुल्क में अब यक़ीनन बसनेवाले गुंजाइश से ज़्यादा होंगे, और
तुझ को ग़ारत करनेवाले दूर हो जाएँगे।
20 बल्कि तेरे वह बेटे जो तुझ से ले लिए गए थे, तेरे कानों
में फिर कहेंगे, कि बसने की जगह बहुत तंग है, हम को बसने की
जगह दे।
21 तब तू अपने दिल में कहेगी, 'कौन मेरे लिए इनका बाप
हुआ? कि मैं तो बेऔलाद हो गई और अकेली थी, मैं तो
जिलावतनी और आवारगी में रही, सो किसने इनको पाला? देख,
मैं तो अकेली रह गई थी; फिर ये कहाँ थे?”
22 ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है, कि “देख, मैं क़ौमों पर हाथ
उठाऊँगा, और उम्मतों पर अपना झण्डा खड़ा करूँगा; और वह
तेरे बेटों को अपनी गोद में लिए आएँगे, और तेरी बेटियों को
अपने कंधों पर बिठाकर पहुँचाएँगे।
23 और बादशाह तेरे मुरब्बी होंगे और उनकी बीवियाँ तेरी
दाया होंगी। वह तेरे सामने मुँह के बल ज़मीन पर गिरेंगे, और
तेरे पाँव की खाक चाटेंगे; और तू जानेगी कि मैं ही ख़ुदावन्द हूँ,
जिसके मुन्तज़िर शर्मिन्दा न होंगे।”
24 क्या ज़बरदस्त से शिकार छीन लिया जाएगा? और क्या
रास्तबाज़ के क़ैदी छुड़ा लिए जाएँगे?
25 ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि 'ताक़तवर के ग़ुलाम भी ले लिए
जाएँगे, और मुहीब का शिकार छुड़ा लिया जाएगा; क्यूँकि मैं
उससे जो तेरे साथ झगड़ता है, झगड़ा करूँगा और तेरे बच्चों को
बचा लूँगा।
26 और मैं तुम पर ज़ुल्म करनेवालों को उन ही का गोश्त
खिलाऊँगा, और वह मीठी शराब की तरह अपना ही ख़ून पीकर
बदमस्त हो जाएँगे; और हर फ़र्द — ए — बशर जानेगा कि
मैं ख़ुदावन्द तेरा नजात देनेवाला, और या'क़ूब का क़ादिर तेरा

फ़िदिया देनेवाला हूँ।

50

1 ख़ुदावन्दयूँ फ़रमाता है कि तेरी माँ का तलाक़ नामा जिसे
लिख कर मैंने उसे छोड़ दिया कहाँ है? या अपने क़र्ज़ ख़्वाहों में
से किसके हाथ मैंने तुम को बेचा? देखो, तुम अपनी शरारतों की
वजह से बिक गए, और तुम्हारी ख़ताओं के ज़रिए' तुम्हारी माँ को
तलाक़ दी गई।
2 फ़िर किस लिए, जब मैं आया तो कोई आदमी न था? और
जब मैंने पुकारा, तो कोई जवाब देनेवाला न हुआ? क्या मेरा
हाथ ऐसा कोताह हो गया है कि छुड़ा नहीं सकता? और क्या
मुझ में नजात देने की क़ुदरत नहीं? देखो, मैं अपनी एक धमकी
से समन्दर को सुखा देता हूँ, और नहरों को सहरा कर डालता हूँ,
उनमें की मछलियाँ पानी के न होने से बदबू हो जाती हैं और प्यास
से मर जाती हैं।
3 मैं आसमान को सियाह पोश करता हूँ और उसको टाट उढाता
हूँ

[illegible]

4 ख़ुदावन्द ख़ुदा ने मुझ को शागिर्द की ज़बान बख़्शी, ताकि मैं
जानूँ कि कलाम के वसीले से किस तरह थके माँदे की मदद करूँ।
वह मुझे हर सुबह जगाता है, और मेरा कान लगाता है ताकि
शागिर्दों की तरह सुनूँ।
5 ख़ुदावन्द ख़ुदा ने मेरे कान खोल दिए, और मैं बाग़ी — ओ
— बरगश्ता न हुआ।
6 मैंने अपनी पीठ पीटने वालों के और अपनी दाढ़ी नोचने
वालों के हवाले की, मैंने अपना मुँह रुस्वाई और थूक से नहीं
छिपाया।

7 लेकिन ख़ुदावन्द ख़ुदा मेरी हिमायत करेगा, और इसलिए मैं
शर्मिन्दा न हूँगा; और इसीलिए मैंने अपना मुँह संग — ए —
ख़ारा की तरह बनाया और मुझे यक़ीन है कि मैं शर्मसार न हूँगा।
8 मुझे रास्तबाज़ ठहरानेवाला नज़दीक है। कौन मुझ से झगड़ा
करेगा? आओ, हम आमने — सामने खड़े हों, मेरा मुख़ालिफ़ कौन
है? वह मेरे पास आए।
9 देखो, ख़ुदावन्द ख़ुदा मेरी हिमायत करेगा; कौन मुझे मुजरिम
ठहराएगा? देख, वह सब कपड़े की तरह पुराने हो जाएँगे, उनको
कीड़े खा जाएँगे।
10 तुम्हारे बीच कौन है जो ख़ुदावन्द से डरता और उसके
ख़ादिम की बातें सुनता है? जो अन्धेरे में चलता और रोशनी
नहीं पाता, वह ख़ुदावन्द के नाम पर तवक्कुल करे और अपने
ख़ुदा पर भरोसा रक्खे।
11 देखो, तुम सब जो आग सुलगाते हो और अपने आपको
अँगारों से घेर लेते हो, अपनी ही आग के शोलों में और अपने
सुलगाए हुए अंगारों में चलो। तुम मेरे हाथ से यही पाओगे, तुम
'ऐज़ाब में लेट रहोगे।

51

[illegible]

1 ऐ लोगो, जो सदाक़त की पैरवी करते हो और ख़ुदावन्द के
जोयान हो, मेरी सुनो। उस चटटान पर जिसमें से तुम काटे गए
हो और उस गढ़े के सूराख़ पर जहाँ से तुम खोदे गए हो, नज़र
करो।
2 अपने बाप अब्रहाम पर और सारा पर जिससे तुम पैदा हुए
निगाह करो कि जब मैंने उसे बुलाया वह अकेला था, पर मैंने
उसको बरकत दी और उसको कसरत बख़्शी।

3 यक़ीनन ख़ुदावन्द सिय्यून को तसल्ली देगा, वह उसके
तमाम वीरानों की दिलदारी करेगा, वह उसका वीराना अदन की
तरह और उसका सहरा ख़ुदावन्द के बाग़ की तरह बनाएगा;
ख़ुशी और शादमानी उसमें पाई जाएगी, शुक्रगुज़ारी और गाने
की आवाज़ उसमें होगी।
4 मेरी तरफ़ मुत्वज्जिह हो, ऐ मेरे लोगो; मेरी तरफ़ कान लगा,
ऐ मेरी उम्मत:क्यूँकि शरी'अत मुझ से सादिर होगी और मैं अपने
'अद्ल को लोगों की रोशनी के लिए क़ाईम करूँगा।
5 मेरी सदाक़त नज़दीक है, मेरी नजात ज़ाहिर है, और मेरे
बाज़ू लोगों पर हुक्मरानी करेंगे, जज़ीरे मेरा इन्तिज़ार करेंगे और
मेरे बाज़ू पर उनका तवक्कुल होगा।
6 अपनी आँखें आसमान की तरफ़ उठाओ और नीचे ज़मीन पर
निगाह करो; क्यूँकि आसमान धुँवें की तरह ग़ायब हो जायेंगे और
ज़मीन कपड़े की तरह पुरानी हो जाएगी, और उसके बाशिन्दे
मच्छरों की तरह मर जाएँगे; लेकिन मेरी नजात हमेशा तक
रहेगी, और मेरी सदाक़त ख़त्म न होगी।
7 "ऐ सच्चाई के जाननेवालों, मेरी सुनो, ऐ लोगो, जिनके दिल
में मेरी शरी'अत है; इंसान की मलामत से न डरो और उनकी
ता'नाज़नी से परेशान न हो।
8 क्यूँकि कीड़ा उनको कपड़े की तरह खाएगा और किर्म उनको
पश्मीने की तरह खा जाएगा, लेकिन मेरी सदाक़त हमेशा तक
रहेगी और मेरी नजात नस्ल — दर — नस्ल।"
9 जाग, जाग, ऐ ख़ुदावन्द के बाज़ू तवानाई से मुलब्बस हो;
जाग जैसा पुराने ज़माने में और गुज़िश्ता नस्लों में क्या तू वही
नहीं जिसने रहब' को टुकड़े — टुकड़े किया और अज़दहे को छेदा?
10 क्या तू वही नहीं जिसने समन्दर या'नी बहर — ए —
'अमीक़ के पानी को सुखा डाला; जिसने बहर की तह को रास्ता
बना डाला, ताकि जिनका फ़िदिया दिया गया उसे उबूर करें?

11 फ़िर वह जिनको ख़ुदावन्द ने मख़लसी बख़्शी लौटेंगे और
गाते हुए सिय्यून में आएँगे, और हमेशा सुरूर उनके सिरों पर
होगा; वह ख़ुशी और शादमानी हासिल करेंगे और ग़म — ओ —
अन्दोह काफ़ूर हो जाएँगे।
12 "तुम को तसल्ली देनेवाला मैं ही हूँ, तू कौन है जो फ़ानी
इंसान से, और आदमज़ाद से जो घास की तरह हो जाएगा डरता
है,
13 और ख़ुदावन्द अपने ख़ालिक़ को भूल गया है, जिसने
आसमान को ताना और ज़मीन की बुनियाद डाली; और तू हर
वक़्त ज़ालिम के जोश — ओ — ख़रोश से कि जैसे वह हलाक
करने को तैयार है, डरता है? पर ज़ालिम का जोश — ओ —
ख़रोश कहाँ है?
14 जिलावतन ग़ुलाम जल्दी से आज़ाद किया जाएगा, वह ग़ार
में न मरेगा और उसकी रोटी कम न होगी।
15 क्यूँकि मैं ही ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा हूँ, जो मौजज़न समन्दर
को थमा देता हूँ; मेरा नाम रब्ब — उल — अफ़वाज है।
16 और मैंने अपना कलाम तेरे मुँह में डाला, और तुझे अपने
हाथ के साये तले छिपा रख्खा ताकि अफ़लाक को खड़ा करूँ"
और ज़मीन की बुनियाद डालूँ, और अहल — ए — सिय्यून से
कहूँ, 'तुम मेरे लोग हो।
17 जाग, जाग, उठ ऐ येरूशलेम; तूने ख़ुदावन्द के हाथ से
उसके ग़ज़ब का प्याला पिया, तूने डगमगाने का जाम तलछट
के साथ पी लिया।
18 उन सब बेटों में जो उससे पैदा हुए, कोई नहीं जो उसका
रहनुमा हो; और उन सब बेटों में जिनको उसने पाला, एक भी
नहीं जो उसका हाथ पकड़े।
19 ये दो हादिसे तुझ पर आ पड़े, कौन तेरा ग़मख़्वार होगा?
वीरानी और हलाकत, काल और तलवार; मैं क्यूँकर तुझे तसल्ली

दूँ?
20 तेरे बेटे हर कूचे के मदख़ल में ऐसे बेहोश पड़े हैं, जैसे हरन
दाम में, वह ख़ुदावन्द के ग़ज़ब और तेरे ख़ुदा की धमकी से बेख़ुद
हैं'।
21 इसलिए अब तू जो बदहाल और मस्त है पर मय से नहीं,
ये बात सुन;
22 तेरा "ख़ुदावन्द यहोवाह हाँ तेरा ख़ुदा जो अपने लोगों की
वकालत करता है यूँ फ़रमाता है कि देख, मैं डगमगाने का प्याला
और अपने क़हर का जाम तेरे हाथ से ले लूँगा; तू उसे फिर कभी
न पिएगी।
23 और मैं उसे उनके हाथ में दूँगा जो तुझे दुख देते, और जो
तुझ से कहते थे, 'झुक जा ताकि हम तेरे ऊपर से गुज़रें', और तूने
अपनी पीठ को जैसे ज़मीन, बल्कि गुज़रने वालों के लिए सड़क
बना दिया।"

52

[illegible]

1 जाग जाग ऐ सिय्यून, अपनी शौकत से मुलब्बस हो; ऐ
येरूशलेम पाक शहर, अपना ख़ुशनुमा लिबास पहन ले; क्यूँकि
आगे को कोई नामख़्तून या नापाक तुझ में कभी दाख़िल न होगा।
2 अपने ऊपर से गर्द झाड़ दे, उठकर बैठ; ऐ येरूशलेम, ऐ
ग़ुलाम दुख़्तर — ए — सिय्यून, अपनी गर्दन के बंधनों को खोल
डाल।
3 क्यूँकि ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है, तुम मुफ़्त बेचे गए, और तुम
बेज़र ही आज़ाद किए जाओगे।
4 ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है, कि "मेरे लोग इब्तिदा में मिस्र
को गए कि वहाँ मुसाफ़िर होकर रहें, असूरियों ने भी बे वजह उन
पर ज़ुल्म किया।"

5 ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि "अब मेरा यहाँ क्या काम,
हालाँकि मेरे लोग मुफ़्त ग़ुलामी में गए हैं? वह जो उन पर
मुसल्लत हैं लल्कारतें हैं ख़ुदावन्द फ़रमाता हैं और हर रोज़
मुतवातिर मेरे नाम की तकफ़ीर की जाती है।
6 यक़ीनन मेरे लोग मेरा नाम जानेंगे, और उस रोज़ समझेंगे
कि कहनेवाला मैं ही हूँ, देखो, मैं हाज़िर हूँ।"
7 उसके पाँव पहाड़ों पर क्या ही ख़ुशनुमा हैं जो ख़ुशख़बरी
लाता है और सलामती का 'ऐलान करता है और खैरियत की ख़बर
और नजात का इश्तिहार देता है जो सिय्यून से कहता है तेरा ख़ुदा
सल्तनत करता है।
8 अपने निगहबानों की आवाज़ सुन, वह अपनी आवाज़ बलन्द
करते हैं, वह आवाज़ मिलाकर गाते हैं; क्यूँकि जब ख़ुदावन्द
सिय्यून को वापस आएगा तो वह उसे रू — ब — रू देखेंगे।
9 ऐ येरूशलेम के वीरानो, ख़ुशी से ललकारो, मिलकर नग़मा
सराई करो, क्यूँकि ख़ुदावन्द ने अपनी क़ौम को दिलासा दिया
उसने येरूशलेम का फ़िदिया दिया।
10 ख़ुदावन्द ने अपना पाक बाज़ू तमाम क़ौमों की आँखों के
सामने नंगा किया है और ज़मीन सरासर हमारे ख़ुदा की नजात
को देखेगी।
11 ऐ ख़ुदावन्द के ज़ुरूफ़ उठाने वालो, रवाना हो, रवाना हो;
वहाँ से चले जाओ, नापाक चीज़ों को हाथ न लगाओ, उसके बीच
से निकल जाओ और पाक हो।
12 क्यूँकि तुम न तो जल्द निकल जाओगे, और न भागनेवाले
की तरह चलोगे; क्यूँकि ख़ुदावन्द तुम्हारा हरावल, और इस्राईल
का ख़ुदा तुम्हारा चन्डावल होगा।
13 देखो, मेरा ख़ादिम इक़बालमन्द होगा, वह आला — ओ —
बरतर और निहायत बलन्द होगा।
14 जिस तरह बहुतेरे तुझ को देखकर दंग हो गए उसका चहरा

हर एक बशर से ज़ाइद, और उसका जिस्म बनी आदम से ज़्यादा
बिगड़ गया था,
15 उसी तरह वह बहुत सी क़ौमों को पाक करेगा और बादशाह
उसके सामने ख़ामोश होंगे; क्यूँकि जो कुछ उनसे कहा न गया
था, वह देखेंगे; और जो कुछ उन्होंने सुना न था, वह समझेंगे।

53

1 हमारे पैग़ाम पर कौन ईमान लाया? और ख़ुदावन्द का बाज़ू
किस पर ज़ाहिर हुआ?
2 लेकिन वह उसके आगे कोंपल की तरह, और ख़ुश्क ज़मीन से
जड़ की तरह फूट निकला है; न उसकी कोई शक्ल और सूरत है,
न ख़ूबसूरती; और जब हम उस पर निगाह करें, तो कुछ हुस्न —
ओ — जमाल नहीं कि हम उसके मुश्ताक़ हों।
3 वह आदमियों में हक़ीर — ओ — मर्दूद; मर्द — ए —
ग़मनाक, और रंज का आशना था; लोग उससे जैसे रूपोश थे।
उसकी तहक़ीर की गई, और हम ने उसकी कुछ क़द्र न जानी।
4 तोभी उसने हमारी मशक़्क़तें उठा लीं, और हमारे ग़मों को
बर्दाश्त किया; लेकिन हमने उसे ख़ुदा का मारा — कूटा और
सताया हुआ समझा।
5 हालाँकी वह हमारी ख़ताओं की वजह से घायल किया
गया, और हमारी बदकिरदारी के ज़रिए' कुचला गया। हमारी ही
सलामती के लिए उस पर सियासत हुई, ताकि उसके मार खाने से
हम शिफ़ा पाएँ।
6 हम सब भेड़ों की तरह भटक गए, हम में से हर एक अपनी
राह को फिरा; लेकिन ख़ुदावन्द ने हम सबकी बदकिरदारी उस पर
लादी।
7 वह सताया गया, तोभी उसने बर्दाश्त की और मुँह न खोला;
जिस तरह बर्रा जिसे ज़बह करने को ले जाते हैं, और जिस तरह

भेड़ अपने बाल कतरनेवालों के सामने बेज़बान है, उसी तरह वह
ख़ामोश रहा।
8 वह ज़ुल्म करके और फ़तवा लगाकर उसे ले गए; फ़िर उसके
ज़माने के लोगों में से किसने ख़याल किया कि वह ज़िन्दों की
ज़मीन से काट डाला गया? मेरे लोगों की ख़ताओं की वजह से
उस पर मार पड़ी।
9 उसकी क़ब्र भी शरीरों के बीच ठहराई गई, और वह अपनी
मौत में दौलतमन्दों के साथ हुआ; हालाँकि उसने किसी तरह का
ज़ुल्म न किया, और उसके मुँह में हरगिज़ छल न था।
10 लेकिन ख़ुदावन्द को पसन्द आया कि उसे कुचले, उसने उसे
ग़मगीन किया; जब उसकी जान गुनाह की क़ुर्बानी के लिए पेश
की जाएगी, तो वह अपनी नस्ल को देखेगा; उसकी उम्र दराज़
होगी और ख़ुदावन्द की मर्ज़ी उसके हाथ के वसीले से पूरी होगी।
11 अपनी जान ही का दुख उठाकर वह उसे देखेगा और सेर
होगा; अपने ही इरफ़ान से मेरा सादिक़ ख़ादिम बहुतों को
रास्तबाज़ ठहराएगा, क्यूँकि वह उनकी बदकिरदारी ख़ुद उठा
लेगा।
12 इसलिए मैं उसे बुज़ुर्गों के साथ हिस्सा दूँगा, और वह लूट
का माल ताक़तवरों के साथ बाँट लेगा; क्यूँकि उसने अपनी जान
मौत के लिए उडेल दी, और वह ख़ताकारों के साथ शुमार किया
गया, तोभी उसने बहुतों के गुनाह उठा लिए और ख़ताकारों की
शफ़ा'अत की।

54

[illegible]

1 ऐ बाँझ, तू जो बे — औलाद थी नग़मा सराई कर, तू जिसने
विलादत का दर्द बर्दाश्त नहीं किया, ख़ुशी से गा और ज़ोर से
चिल्ला, क्यूँकि ख़ुदावन्द फ़रमाता है कि बे कस छोड़ी हुई औलाद
शौहर वाली की औलाद से ज़्यादा है।

2 अपनी ख़ेमागाह को वसी' कर दे, हाँ, अपने घरों के पर्दे फैला;
दरेग़ न कर, अपनी डोरियाँ लम्बी और अपनी मेंख़ें मज़बूत कर।
3 इसलिए कि तू दहनी और बाँई तरफ़ बढ़ेगी और तेरी नस्ल
क़ौमों की वारिस होगी और वीरान शहरों को बसाएगी।
4 ख़ौफ़ न कर, क्यूँकि तू फिर पशेमाँ न होगी; तू न घबरा, क्यूँकि
तू फिर रूस्वा न होगी; और अपनी जवानी का नंग भूल जाएगी,
और अपनी बेवगी की 'आर को फिर याद न करेगी।
5 क्यूँकि तेरा ख़ालिक़ तेरा शौहर है, उसका नाम रब्ब — उल
— अफ़वाज है; और तेरा फ़िदिया देनेवाला इस्राईल का क़ुददूस
है, वह तमाम इस ज़मीन का ख़ुदा कहलाएगा।
6 क्यूँकि तेरा ख़ुदा फ़रमाता है कि ख़ुदावन्द ने तुझ को मतरूका
और दिल आज़ुर्दा बीवी की तरह; हाँ, जवानी की मतलूक़ा बीवी
की तरह फिर बुलाया है।
7 मैंने एक दम के लिए तुझे छोड़ दिया, लेकिन रहमत की
फ़िरावानी से तुझे ले लूँगा।
8 ख़ुदावन्द तेरा नजात देनेवाला फ़रमाता है, कि क़हर की
शिद्दत में मैंने एक दम के लिए तुझ से मुँह छिपाया, लेकिन अब
मैं हमेशा शफ़क़त से तुझ पर रहम करूँगा।
9 क्यूँकि मेरे लिए ये तूफ़ान — ए — नूह का सा मु'आमिला
है, कि जिस तरह मैंने क़सम खाई थी कि फिर ज़मीन पर नूह जैसा
तूफ़ान कभी न आएगा, उसी तरह अब मैंने क़सम खाई है कि मैं
तुझ से फिर कभी आज़ुर्दा न हूँगा और तुझ को न घुड़कूँगा।
10 ख़ुदावन्द तुझ पर रहम करने वाला यूँ फ़रमाता है कि पहाड़
तो जाते रहें और टीले टल जाएँ लेकिन मेरी शफ़क़त कभी तुझ
पर से जाती न रहेगी, और मेरा सुलह का 'अहद न टलेगा।
11 “ऐ मुसीबतज़दा और तूफ़ान की मारी और तसल्ली से
महरूम! देख, मैं तेरे पत्थरों को स्याह रेख्ता में लगाऊँगा और
तेरी बुनियाद नीलम से डालूँगा।

12 मैं तेरे कुंगुरों को लालों, और तेरे फाटकों को शब चिराग़,
और तेरी सारी फ़सील बेशक़ीमत पत्थरों से बनाऊँगा।
13 और तेरे सब फ़र्ज़न्द ख़ुदावन्द से तालीम पाएँगे और तेरे
फ़र्ज़न्दों की सलामती कामिल होगी।
14 तू रास्तबाज़ी से पायदार हो जाएगी, तू ज़ुल्म से दूर रहेगी
क्यूँकि तू बेख़ौफ़ होगी, और दहशत से दूर रहेगी क्यूँकि वह तेरे
क़रीब न आएगी।
15 मुम्किन है कि वह कभी इकट्ठे हों, लेकिन मेरे हुक्म से नहीं,
जो तेरे ख़िलाफ़ जमा' होंगे, वह तेरे ही वजह से गिरेंगे।
16 देख, मैंने लुहार को पैदा किया जो कोयलों की आग धौंकता
और अपने काम के लिए हथियार निकालता है; और ग़ारतगरों
को मैंने ही पैदा किया कि लूट मार करें।
17 कोई हथियार जो तेरे ख़िलाफ़ बनाया जाए काम न आएगा,
और जो ज़बान 'अदालत में तुझ पर चलेगी तू उसे मुजरिम
ठहराएगी। ख़ुदावन्द फ़रमाता है, ये मेरे बन्दों की मीरास है और
उनकी रास्तबाज़ी मुझ से है।"

55

[illegible]

1 ऐ सब प्यासो, पानी के पास आओ, और वह भी जिसके पास
पैसा न हो, आओ, मोल लो, और खाओ, हाँ आओ! शराब और
दूध बेज़र और बेक़ीमत ख़रीदो।
2 तुम किस लिए अपना रुपया उस चीज़ के लिए जो रोटी नहीं,
और अपनी मेहनत उस चीज़ के वास्ते जो आसूदा नहीं करती,
ख़र्च करते हो? तुम ग़ौर से मेरी सुनो, और वह चीज़ जो अच्छी
है खाओ; और तुम्हारी जान फ़रबही से लज़्ज़त उठाए।
3 कान लगाओ और मेरे पास आओ, सुनो और तुम्हारी जान
ज़िन्दा रहेगी; और मैं तुम को अबदी 'अहद या'नी दाऊद की
सच्ची नेमतें बख़्शूँगा।

4 देखो, मैंने उसे उम्मतों के लिए गवाह मुक़र्रर किया, बल्कि
उम्मतों का पेशवा और फ़रमाँरवा।
5 देख, तू एक ऐसी क़ौम को जिसे तू नहीं जानता बुलाएगा,
और एक ऐसी क़ौम जो तुझे नहीं जानती थी, ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा
और इस्राईल के क़ुददूस की ख़ातिर तेरे पास दौड़ी आएगी; क्यूँकि
उसने तुझे जलाल बख़्शा है।
6 जब तक ख़ुदावन्द मिल सकता है उसके तालिब हो, जब तक
वह नज़दीक है उसे पुकारो।
7 शरीर अपनी राह को तर्क करे और बदकिरदार अपने ख़यालों
को, और वह ख़ुदावन्द की तरफ़ फिरे और वह उस पर रहम करेगा;
और हमारे ख़ुदा की तरफ़ क्यूँकि वह कसरत से मु'आफ़ करेगा।
8 ख़ुदावन्द फ़रमाता है कि मेरे ख़याल तुम्हारे ख़याल नहीं,
और न तुम्हारी राहें मेरी राहें हैं।
9 क्यूँकि जिस क़दर आसमान ज़मीन से बलन्द है, उसी क़दर
मेरी राहें तुम्हारी राहों से और मेरे ख़याल तुम्हारे ख़यालों से
बलन्द हैं।
10 "क्यूँकि जिस तरह आसमान से बारिश होती और बर्फ़ पड़ती
है, और फिर वह वहाँ वापस नहीं जाती बल्कि ज़मीन को सेराब
करती है, और उसकी शादाबी और रोईदगी का ज़रि'आ होती है
ताकि बोनेवाले को बीज और खाने वाले को रोटी दे;
11 उसी तरह मेरा कलाम जो मेरे मुँह से निकलता है होगा,
वह बेअन्जाम मेरे पास वापस न आएगा, बल्कि जो कुछ मेरी
ख़्वाहिश होगी वह उसे पूरा करेगा और उस काम में जिसके लिए
मैंने उसे भेजा मो'अस्सिर होगा।
12 क्यूँकि तुम ख़ुशी से निकलोगे और सलामती के साथ रवाना
किए जाओगे; पहाड़ और टीले तुम्हारे सामने नग़मापर्दाज़ होंगे,
और मैदान के सब दरख़्त ताल देंगे
13 काँटों की जगह सनौबर निकलेगा, और झाड़ी के बदले
उसका दरख़्त होगा; और ये ख़ुदावन्द के लिए नाम और हमेशा

निशान होगा जो कभी' न मिटेगा।”

56

□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□

1 ख़ुदावन्द फ़रमाता है कि 'अद्ल को क़ाईम रख्खो, और
सदाक़त को 'अमल में लाओ, क्यूँकि मेरी नजात नज़दीक है और
मेरी सदाक़त ज़ाहिर होने वाली है।
2 मुबारक है वह इंसान, जो इस पर 'अमल करता है और वह
आदमज़ाद जो इस पर क़ाईम रहता है, जो सबत को मानता और
उसे नापाक नहीं करता, और अपना हाथ हर तरह की बुराई से
बाज़ रखता है।
3 और बेगाने का फ़र्ज़न्द जो ख़ुदावन्द से मिल गया हरगिज़ न
कहे, ख़ुदावन्द मुझ को अपने लोगों से जुदा कर देगा; और ख़ोजा
न कहे, कि “देखो, मैं तो सूखा दरख़्त हूँ।”
4 क्यूँकि ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि “वह ख़ोजे जो मेरे सबतों
को मानते हैं और उन कामों को जो मुझे पसन्द हैं इख्तियार करते
हैं
5 मैं उनको अपने घर में और अपनी चार दीवारी के अन्दर,
ऐसा नाम — ओ — निशान बख़्शूँगा जो बेटों और बेटियों से भी
बढ़ कर होगा; मैं हर एक को एक अबदी नाम दूँगा जो मिटाया न
जाएगा।
6 'और बेगाने की औलाद भी जिन्होंने अपने आपको ख़ुदावन्द
से पैवस्ता किया है कि उसकी ख़िदमत करें, और ख़ुदावन्द के नाम
को 'अज़ीज़ रख्खें और उसके बन्दे हों, वह सब जो सबत को हिफ़्ज़
करके उसे नापाक न करें और मेरे 'अहद पर क़ाईम रहें;
7 मैं उनको भी अपने पाक पहाड़ पर लाऊँगा और अपनी
'इबादतगाह में उनको शादमान करूँगा और उनकी सोख़्तनी
क़ुर्बानियाँ और उनके ज़बीहे मेरे मज़बह पर मक़बूल होंगे; क्यूँकि
मेरा घर सब लोगों की 'इबादतगाह कहलाएगा।”

8 ख़ुदावन्द ख़ुदा, जो इस्राईल के तितर — बितर लोगों को
जमा' करनेवाला है, यूँ फ़रमाता है, कि "मैं उनके सिवा जो उसी
के होकर जमा' हुए हैं, औरों को भी उसके पास जमा' करूँगा।"
9 ऐ दश्ती हैवानो, तुम सब के सब खाने को आओ! हाँ, ऐ जंगल
के सब दरिन्दो।
10 उसके निगहबान अन्धे हैं, वह सब जाहिल हैं, वह सब गूँगे
कुत्ते हैं जो भौंक नहीं सकते, वह ख़्वाब देखनेवाले हैं जो पड़े रहते
हैं और ऊँघते रहना पसन्द करते हैं।
11 और वह लालची कुत्ते हैं जो कभी सेर नहीं होते। वह नादान
चरवाहे हैं, वह सब अपनी अपनी राह को फिर गए; हर एक हर
तरफ़ से अपना ही नफ़ा' ढूंडता है।
12 हर एक कहता है, तुम आओ, मैं शराब लाऊँगा, और हम
ख़ूब नशे में चूर होंगे; और कल भी आज ही की तरह होगा बल्कि
इससे बहुत बेहतर।

57

1 सादिक़ हलाक होता है, और कोई इस बात को ख़ातिर में नहीं
लाता; और नेक लोग उठा लिए जाते हैं और कोई नहीं सोचता
कि सादिक़ उठा लिया गया ताकि आनेवाली आफ़त से बचे;
2 वह सलामती में दाख़िल होता है। हर एक रास्त रू अपने
बिस्तर पर आराम पाएगा।

[illegible]

3 लेकिन तुम, ऐ जादूगरनी के बेटो, ऐ ज़ानी और फ़ाहिशा के
बच्चों, इधर आगे आओ।
4 तुम किस पर ठट्ठा मारते हो? तुम किस पर मुँह फाड़ते और
ज़बान निकालते हो? क्या तुम बाग़ी औलाद और दग़ाबाज़ नस्ल
नहीं हो,

5 जो बुतों के साथ हर एक हरे बलूत के नीचे अपने आपको
बरअंगेख़्ता करते और वादियों में चट्टानों के शिगाफ़ों के नीचे
बच्चों को ज़बह करते हो?
6 वादी के चिकने पत्थर तेरा हिस्सा हैं, वही तेरा हिस्सा हैं; हाँ,
तूने उनके लिए तपावन दिया और हदिया पेश किया है; क्या मुझे
इन कामों से तिस्कीन होगी?
7 एक ऊँचे और बलन्द पहाड़ पर तूने अपना बिस्तर बिछाया
है, और उसी पर ज़बीहा ज़बह करने को चढ़ गई।
8 और तूने दरवाज़ों और चौखटों के पीछे अपनी यादगार की
'अलामतें नस्ब कीं, और तू मेरे सिवा दूसरे के आगे बेपर्दा हुई; हाँ,
तू चढ़ गई और तूने अपना बिछौना भी बड़ा बनाया और उनके
साथ 'अहद कर लिया है; तूने उनके बिस्तर को जहाँ देखा पसन्द
किया।
9 तू ख़ुशबू लगाकर बादशाह के सामने चली गई और अपने
आपको ख़ूब मु'अत्तर किया, और अपने क़ासिद दूर दूर भेजे बल्कि
तूने अपने आपको पाताल तक पस्त किया।
10 तू अपने सफ़र की दराज़ी से थक गई, तोभी तूने न कहा,
कि "इससे कुछ फ़ाइदा नहीं, तूने अपनी क़ुव्वत की ताज़गी पाई
इसलिए तू अफ़सुर्दा न हुई।
11 तब तू किससे डरी और किसके ख़ौफ़ से तूने झूट बोला, और
मुझे याद न किया और ख़ातिर में न लाई? क्या मैं एक मुद्दत से
ख़ामोश नहीं रहा? तोभी तू मुझ से न डरी।
12 मैं तेरी सदाक़त की तरफ़ तेरे कामों को फ़ाश करूँगा और
उनसे तुझे कुछ नफ़ा' न होगा।
13 जब तू फ़रियाद करे, तो जिनको तूने जमा' किया है वह तुझे
छुड़ाएँ; ये हवा उन सबको उड़ा ले जाएगी, एक झोंका उनको ले
जाएगा; लेकिन मुझ पर तवक्कुल करनेवाला ज़मीन का मालिक
होगा और मेरे पाक पहाड़ का वारिस होगा।

14 तब यूँ कहा जाएगा, राह ऊँची करो, ऊँची करो, हमवार
करो, मेरे लोगों के रास्ते से ठोकर का ज़रि'आ दूर करो।"
15 क्यूँकि वह जो 'आली और बलन्द है और हमेशा से हमेशा
तक क़ाईम है, जिसका नाम क़ुददूस है, यूँ फ़रमाता है, मैं बलन्द
और मुक़द्दस मक़ाम में रहता हूँ, और उसके साथ भी जो शिकस्ता
दिल और फ़रोतन है; ताकि फ़रोतनों की रूह को ज़िन्दा करूँ और
शिकस्ता दिलों को हयात बख़्शूँ।
16 क्यूँकि मैं हमेशा न झगड़ूँगा और हमेशा ग़ज़बनाक न रहूँगा,
इसलिए कि मेरे सामने रूह और जानें जो मैंने पैदा की हैं बेताब
हो जाती हैं।
17 कि मैं उसके लालच के गुनाह से ग़ज़बनाक हुआ, इसलिए
मैंने उसे मारा, मैंने अपने आपको छिपाया और ग़ज़बनाक हुआ;
इसलिए कि वह उस राह पर जो उसके दिल ने निकाली, भटक
गया था।
18 मैंने उसकी राहें देखीं, और मैं ही उसे शिफ़ा बख़्शूँगा; मैं
उसकी रहबरी करूँगा, और उसको और उसके ग़मख़्वारों को फिर
दिलासा दूँगा।
19 ख़ुदावन्द फ़रमाता हैं, मैं लबों का फल पैदा करता हूँ,
सलामती! सलामती उसको जो दूर है, और उसको जो नज़दीक
है, और मैं ही उसे सिहत बख़्शूँगा।
20 लेकिन शरीर तो समन्दर की तरह हैं जो हमेशा मौजज़न
और बेक़रार है, जिसका पानी कीचड़ और गन्दगी उछालता है।
21 मेरा ख़ुदा फ़रमाता है, कि "शरीरों के लिए सलामती नहीं।"

58

1 गला फाड़ कर चिल्ला दरेग़ न कर नरसिंगे की तरह अपनी
आवाज़ बलन्द कर, और मेरे लोगों पर उनकी ख़ता और या'क़ूब
के घराने पर उनके गुनाहों को ज़ाहिर कर।
2 वह रोज़ — ब — रोज़ मेरे तालिब हैं और उस क़ौम की तरह
जिसने सदाक़त के काम किए और अपने ख़ुदा के अहकाम को तर्क
न किया, मेरी राहों को दरियाफ़्त करना चाहते हैं; वह मुझ से
सदाक़त के अहकाम तलब करते हैं, वह ख़ुदा की नज़दीकी चाहते
हैं।
3 वह कहते है, 'हम ने किस लिए रोज़े रख्खे, जब कि तू नज़र
नहीं करता; और हम ने क्यूँ अपनी जान को दुख दिया, जब कि
तू ख़याल में नहीं लाता? देखो, तुम अपने रोज़े के दिन में अपनी
ख़ुशी के तालिब रहते हो, और सब तरह की सख़्त मेहनत लोगों
से कराते हो।
4 देखो, तुम इस मक़सद से रोज़ा रखते हो कि झगड़ा — रगड़ा
करो, और शरारत के मुक्के मारो; फ़िर अब तुम इस तरह का रोज़ा
नहीं रखते हो कि तुम्हारी आवाज़ 'आलम — ए — बाला पर सुनी
जाए।
5 क्या ये वह रोज़ा है जो मुझ को पसन्द है? ऐसा दिन कि उसमें
आदमी अपनी जान को दुख दे और अपने सिर को झाऊ की तरह
झुकाए, और अपने नीचे टाट और राख बिछाए; क्या तू इसको
रोज़ा और ऐसा दिन कहेगा जो ख़ुदावन्द का मक़बूल हो?
6 “क्या वह रोज़ा जो मैं चाहता हूँ ये नहीं कि ज़ुल्म की ज़ंजीरें
तोड़ें और जूए के बन्धन खोलें, और मज़लूमों को आज़ाद करें
बल्कि हर एक जूए को तोड़ डालें?
7 क्या ये नहीं कि तू अपनी रोटी भूकों को खिलाए, और ग़रीबों
को जो आवारा हैं अपने घर में लाए; और जब किसी को नंगा देखे
तो उसे पहिनाए, और तू अपने हमजिन्स से रूपोशी न करे?
8 तब तेरी रोशनी सुबह की तरह फूट निकलेगी और तेरी सेहत

की तरक्की जल्द जाहिर होगी; तेरी सदाक़त तेरी हरावल होगी
और ख़ुदावन्द का जलाल तेरा चन्डावल होगा।
9 तब तू पुकारेगा और ख़ुदावन्द जवाब देगा, तू चिल्लाएगा
और वह फ़रमाएगा, 'मैं यहाँ हूँ।" अगर तू उस जूए को और
उंगलियों से इशारा करने की, और हरज़ागोई को अपने बीच से
दूर करेगा,
10 और अगर तू अपने दिल को भूके की तरफ़ माइल करे और
आज़ुर्दा दिल को आसूदा करे, तो तेरा नूर तारीकी में चमकेगा और
तेरी तीरगी दोपहर की तरह हो जाएगी।
11 और ख़ुदावन्द हमेशा तेरी रहनुमाई करेगा, और ख़ुश्क
साली में तुझे सेर करेगा और तेरी हड्डियों को क़ुव्वत बख़्शेगा;
तब तू सेराब बाग़ की तरह होगा और उस चश्मे की तरह जिसका
पानी कम न हो।
12 और तेरे लोग पुराने वीरान मकानों को ता'मीर करेंगे, और तू
पुश्त — दर — पुश्त की बुनियादों को खड़ा करेगा, और तू रख़ने
का बन्द करनेवाला और आबादी के लिए राह का दुरुस्त करने
वाला कहलाएगा।
13 "अगर तू सबत के रोज़ अपना पाँव रोक रख्खे, और मेरे
मुक़द्दस दिन में अपनी ख़ुशी का तालिब न हो, और सबत को
राहत और ख़ुदावन्द का मुक़द्दस और मु'अज़्ज़म कहे और उसकी
ता'ज़ीम करे, अपना कारोबार न करे, और अपनी ख़ुशी और
बेफ़ाइदा बातों से दस्तबरदार रहे;
14 तब तू ख़ुदावन्द में मसरूर होगा और मैं तुझे दुनिया की
बलन्दियों पर ले चलूँगा, और मैं तुझे तेरे बाप या'क़ूब की मीरास
से खिलाऊँगा; क्यूँकि ख़ुदावन्द ही के मुँह से ये इरशाद हुआ है।"

59

1 देखो ख़ुदावन्द का हाथ छोटा नहीं हो गया कि बचा न सके,
और उसका कान भारी नहीं कि सुन न सके;
2 बल्कि तुम्हारी बदकिरदारी ने तुम्हारे और तुम्हारे ख़ुदा के
बीच जुदाई कर दी है, और तुम्हारे गुनाहों ने उसे तुम से छिपा
लिया, ऐसा कि वह नहीं सुनता।
3 क्यूँकि तुम्हारे हाथ ख़ून से और तुम्हारी उंगलियाँ बदकिरदारी
से आलूदा हैं तुम्हारे लब झूट बोलते और तुम्हारी ज़बान शरारत
की बातें बकती है।
4 कोई इन्साफ़ की बातें पेश नहीं करता और कोई सच्चाई से
हुज्जत नहीं करता, वह झूट पर भरोसा करते हैं और झूट बोलते
हैं वह ज़ियानकारी से बारदार होकर बदकिरदारी को जन्म देते हैं।
5 वह अज़दहे के अंडे सेते और मकड़ी का जाला तनते हैं; जो
उनके अंडों में से कुछ खाए मर जाएगा, और जो उनमें से तोड़ा
जाए उससे अज़दहा निकलेगा।
6 उनके जाले से पोशाक नहीं बनेगी, वह अपनी दस्तकारी से
मुलब्बस न होंगे। उनके आ'माल बदकिरदारी के हैं, और ज़ुल्म का
काम उनके हाथों में है।
7 उनके पाँव बुराई की तरफ़ दौड़ते हैं, और वह बेगुनाह का ख़ून
बहाने के लिए जल्दी करते हैं; उनके ख़यालात बदकिरदारी के हैं,
तबाही और हलाकत उनकी राहों में है।
8 वह सलामती का रास्ता नहीं जानते, और उनके चाल चलन
में इन्साफ़ नहीं; वह अपने लिए टेढ़ी राह बनाते हैं जो कोई उसमें
जाएगा सलामती को न देखेगा।
9 इसलिए इन्साफ़ हम से दूर है, और सदाक़त हमारे नज़दीक
नहीं आती; हम नूर का इन्तिज़ार करते हैं, लेकिन देखो तारीकी
है; और रोशनी का, लेकिन अन्धेरे में चलते हैं।
10 हम दीवार को अन्धे की तरह टटोलते हैं, हाँ, यूँ टटोलते हैं
कि जैसे हमारी आँखें नहीं; हम दोपहर को यूँ ठोकर खाते हैं जैसे

रात हो गई, हम तन्दरुस्तों के बीच जैसे मुर्दा हैं।

11 हम सब के सब रीछों की तरह ग़ुर्राते हैं और कबूतरों की तरह
कुढ़ते हैं, हम इन्साफ़ की राह तकते हैं, लेकिन वह कहीं नहीं; और
नजात के मुन्तज़िर हैं, लेकिन वह हम से दूर है।

12 क्यूँकि हमारी खताएँ तेरे सामने बहुत हैं और हमारे गुनाह
हम पर गवाही देते हैं, क्यूँकि हमारी ख़ताएँ हमारे साथ हैं और
हम अपनी बदकिरदारी को जानते हैं;

13 कि हम ने ख़ता की, ख़ुदावन्द का इन्कार किया, और अपने
ख़ुदा की पैरवी से बरगश्ता हो गए; हम ने ज़ुल्म और सरकशी की
बातें कीं, और दिल में झूठ तसव्वुर करके दरोग़ोई की।

14 'अदालत हटाई गई और इन्साफ़ दूर खड़ा हो रहा; सदाक़त
बाज़ार में गिर पड़ी, और रास्ती दाख़िल नहीं हो सकती।

15 हाँ, रास्ती गुम हो गई, और वह जो बुराई से भागता है
शिकार हो जाता है। ख़ुदावन्द ने ये देखा और उसकी नज़र में
बुरा मा'लूम हुआ कि 'अदालत जाती रही।

16 और उसने देखा कि कोई आदमी नहीं, और ता'अज्जुब किया
कि कोई शफ़ा'अत करने वाला नहीं; इसलिए उसी के बाज़ू ने
उसके लिए नजात हासिल की और उसी की रास्तबाज़ी ने उसे
सम्भाला।

17 हाँ, उसने रास्तबाज़ी का बक्तर पहना और नजात का ख़ूद
अपने सिर पर रख्खा, और उसने लिबास की जगह इन्तक़ाम की
पोशाक पहनी और ग़ैरत के जुब्बे से मुलब्बस हुआ।

18 वह उनको उनके 'आमाल के मुताबिक़ बदला देगा, अपने
मुख़ालिफ़ों पर क़हर करेगा और अपने दुश्मनों को सज़ा देगा,
और जज़ीरों को बदला देगा।

19 तब पश्चिम के बाशिन्दे ख़ुदावन्द के नाम से डरेंगे, और
पूरब के बाशिन्दे उसके जलाल से; क्यूँकि वह दरिया के सैलाब
की तरह आएगा जो ख़ुदावन्द के दम से रवाँ हो।

20 और ख़ुदावन्द फ़रमाता है, कि सिय्यून में और उनके पास जो या'क़ूब में ख़ताकारी से बाज़ आते हैं, एक फ़िदिया देनेवाला आएगा।

21 क्यूँकि उनके साथ मेरा 'अहद ये है, ख़ुदावन्द फ़रमाता है, कि मेरी रूह जो तुझ पर है और मेरी बातें जो मैंने तेरे मुँह में डाली हैं, तेरे मुँह से और तेरी नस्ल के मुँह से, और तेरी नस्ल की नस्ल के मुँह से अब से लेकर हमेशा तक जाती न रहेंगी; ख़ुदावन्द का यही इरशाद है।

60

[illegible]

1 उठ मुनव्वर हो क्यूँकि तेरा नूर आगया और ख़ुदावन्द का जलाल तुझ पर ज़ाहिर हुआ।

2 क्यूँकि देख, तारीकी ज़मीन पर छा जाएगी और तीरगी उम्मतों पर; लेकिन ख़ुदावन्द तुझ पर ताले' होगा और उसका जलाल तुझ पर नुमायाँ होगा।

3 और क़ौमें तेरी रोशनी की तरफ़ आयेंगी और सलातीन तेरे तुलू की तजल्ली में चलेंगे।

4 अपनी आँखें उठाकर चारों तरफ़ देख, वह सब के सब इकट्ठे होते हैं और तेरे पास आते हैं; तेरे बेटे दूर से आएँगे और तेरी बेटियों को गोद में उठाकर लाएँगे।

5 तब तू देखेगी और मुनव्वर होगी; हाँ, तेरा दिल उछलेगा और कुशादा होगा क्यूँकि समन्दर की फ़िरावानी तेरी तरफ फिरेगी और क़ौमों की दौलत तेरे पास फ़राहम होगी।

6 ऊँटों की कतारें और मिदयान और 'ऐफ़ा की सांडनियाँ आकर तेरे गिर्द बेशुमार होंगी; वह सब सबा से आएँगे, और सोना और लुबान लायेंगे और ख़ुदावन्द की हम्द का 'ऐलान करेंगे।

7 क़ीदार की सब भेड़ें तेरे पास जमा' होंगी, नबायोत के मेंढे
तेरी ख़िदमत में हाज़िर होंगे; वह मेरे मज़बह पर मक़बूल होंगे
और मैं अपनी शौकत के घर को जलाल बख़्शूँगा।
8 ये कौन हैं जो बादल की तरह उड़े चले आते हैं, और जैसे
कबूतर अपनी काबुक की तरफ़?
9 यक़ीनन जज़ीरे मेरी राह देखेंगे, और तरसीस के जहाज़ पहले
आएँगे कि तेरे बेटों को उनकी चाँदी और उनके सोने के साथ दूर
से ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा और इस्राईल के क़ुददूस के नाम के लिए
लाएँ; क्यूँकि उसने तुझे बुज़ुर्गी बख़्शी है।
10 और बेगानों के बेटे तेरी दीवारें बनाएँगे और उनके बादशाह
तेरी ख़िदमत गुज़ारी करेंगे अगरचे मैंने अपने क़हर से तुझे मारा
पर अपनी महरबानी से मैं तुझ पर रहम करूँगा।
11 और तेरे फाटक हमेशा खुले रहेंगे, वह दिन रात कभी बन्द
न होंगे; ताकि क़ौमों की दौलत और उनके बादशाहों को तेरे पास
लाएँ।
12 क्यूँकि वह क़ौम और वह ममलुकत जो तेरी ख़िदमत गुज़ारी
न करेगी, बर्बाद हो जाएगी; हाँ, वह क़ौमें बिल्कुल हलाक की
जाएँगी।
13 लुबनान का जलाल तेरे पास आएगा, सरौ और सनौबर और
देवदार सब आएँगे ताकि मेरे घर को आरास्ता करें; और मैं अपने
पाँव की कुर्सी को रौनक़ बख़्शूँगा।
14 और तेरे ग़ारत गरों के बेटे तेरे सामने झुकते हुए आयेंगे और
तेरी तहक़ीर करने वाले सब तेरे कदमों पर गिरेंगे; और वह तेरा
नाम ख़ुदावन्द का शहर, इस्राईल के क़ुददूस का सिय्यून रखेंगे।
15 इसलिए कि तू तर्क की गई और तुझसे नफ़रत हुई ऐसा कि
किसी आदमी ने तेरी तरफ़ गुज़र भी न किया मैं तुझे हमेशा की
फ़ज़ीलत और नसल दर नसल की ख़ुशी का ज़रिया' बनाऊंगा।
16 तू क़ौमों का दूध भी पी लेगी; हाँ बादशाहों की छाती चूसेगी

और तू जानेगी कि मैं ख़ुदावन्द तेरा नजात देनेवाला और या'क़ूब
का क़ादिर तेरा फ़िदिया देने वाला हूँ।
17 मैं पीतल के बदले सोना लाऊँगा, और लोहे के बदले चाँदी
और लकड़ी के बदले पीतल और पत्थरों के बदले लोहा; और मैं तेरे
हाकिमों को सलामती, और तेरे 'आमिलों को सदाक़त बनाऊँगा
18 फिर कभी तेरे मुल्क में ज़ुल्म का ज़िक्र न होगा, और न तेरी
हदों के अन्दर ख़राबी या बर्बादी का; बल्कि तू अपनी दीवारों का
नाम नजात और अपने फाटकों का हम्द रक्खेगी।
19 फिर तेरी रोशनी न दिन को सूरज से होगी न चाँद के चमकने
से, बल्कि ख़ुदावन्द तेरा हमेशा का नूर और तेरा ख़ुदा तेरा जलाल
होगा।
20 तेरा सूरज फिर कभी न ढलेगा और तेरे चाँद को ज़वाल न
होगा, क्यूँकि ख़ुदावन्द तेरा हमेशा का नूर होगा और तेरे मातम
के दिन ख़त्म हो जाएँगे।
21 और तेरे लोग सब के सब रास्तबाज़ होंगे; वह हमेशा तक
मुल्क के वारिस होंगे, या'नी मेरी लगाई हुई शाख़ और मेरी
दस्तकारी ठहरेंगे ताकि मेरा जलाल ज़ाहिर हो।
22 सबसे छोटा एक हज़ार हो जाएगा और सबसे हक़ीर एक
ज़बरदस्त क़ौम। मैं ख़ुदावन्द ठीक वक़्त पर ये सब कुछ जल्द
करूँगा।

61

[illegible]

1 ख़ुदावन्द ख़ुदा की रूह मुझ पर है क्यूँकि उसने मुझे मसह
किया ताकि हलीमों को ख़ुशख़बरी सुनाऊँ; उसने मुझे भेजा है
कि शिकस्ता दिलों को तसल्ली दूँ, कैदियों के लिए रिहाई और
ग़ुलामों के लिए आज़ादी का 'ऐलान करूँ,

2 ताकि ख़ुदावन्द के साल — ए — मक़बूल का और अपने
ख़ुदा के इन्तक़ाम के दिन का इश्तिहार दूँ, और सब ग़मगीनों को
दिलासा दूँ।
3 सिय्यून के ग़मज़दों के लिए ये मुक़र्रर कर दूँ कि उनको राख
के बदले सेहरा और मातम की जगह ख़ुशी का रौग़न, और उदासी
के बदले इबादत का ख़िल'अत बख़्शूं, ताकि वह सदाक़त बलूतों
के दरख़्त और ख़ुदावन्द के लगाए हुए कहलाएँ कि उसका जलाल
ज़ाहिर हो।
4 तब वह पुराने उजाड़ मकानों को ता'मीर करेंगे और पुरानी
वीरानियों को फिर बिना करेंगे, और उन उजड़े शहरों की मरम्मत
करेंगे जो नसल — दर — नसल उजाड़ पड़े थे।
5 परदेसी आ खड़े होंगे और तुम्हारे गल्लों को चराएँगे, और
बेगानों के बेटे तुम्हारे हल चलानेवाले और ताकिस्तानों में काम
करनेवाले होंगे।
6 लेकिन तुम ख़ुदावन्द के काहिन कहलाओगे, वह तुम को
हमारे ख़ुदा के ख़ादिम कहेंगे; तुम क़ौमों का माल खाओगे और
तुम उनकी शौकत पर फ़ख़्र करोगे।
7 तुम्हारी शर्मिन्दगी का बदले दो चन्द मिलेगा, वह अपनी
रुस्वाई के बदले अपने हिस्से से ख़ुश होंगे; तब वह अपने मुल्क
में दो चन्द के मालिक होंगे और उनको हमेशा की ख़ुशी होगी।
8 क्यूँकि मैं ख़ुदावन्द इन्साफ़ को 'अज़ीज़ रखता हूँ और
ग़ारतगरी और ज़ुल्म से नफ़रत करता हूँ; सो मैं सच्चाई से उनके
कामों का अज्र दूँगा और उनके साथ हमेशा का 'अहद बाँधूंगा।
9 उनकी नस्ल क़ौमों के बीच नामवर होगी, और उनकी औलाद
लोगों के बीच; वह सब जो उनको देखेंगे, इक़रार करेंगे कि ये वह
नस्ल है जिसे ख़ुदावन्द ने बरकत बख़्शी है।
10 मैं ख़ुदावन्द से बहुत ख़ुश हूँगा, मेरी जान मेरे ख़ुदा में
मसरूर होगी, क्यूँकि उसने मुझे नजात के कपड़े पहनाए, उसने

रास्तबाज़ी के ख़िल'अत से मुझे मुलब्बस किया जैसे दूल्हा सेहरे
से अपने आपको आरास्ता करता है और दुल्हन अपने ज़ेवरों से
अपना सिंगार करती है।

11 क्यूँकि जिस तरह ज़मीन अपने नबातात को पैदा करती है,
और जिस तरह बाग़ उन चीज़ों को जो उसमें बोई गई हैं उगाता है;
उसी तरह ख़ुदावन्द ख़ुदा सदाक़त और इबादत को तमाम क़ौमों
के सामने ज़हूर में लाएगा।

62

[illegible]

1 सिय्यून की ख़ातिर मैं चुप न रहूँगा और येरूशलेम की ख़ातिर
मैं दम न लूँगा, जब तक कि उसकी सदाक़त नूर की तरह न चमके
और उसकी नजात रोशन चराग़ की तरह जलवागर न हो।

2 तब क़ौमों पर तेरी सदाक़त और सब बादशाहों पर तेरी शौकत
ज़ाहिर होगी, और तू एक नये नाम से कहलाएगी जो ख़ुदावन्द
के मुँह से निकलेगा।

3 और तू ख़ुदावन्द के हाथ में जलाली ताज और अपने ख़ुदा
की हथेली में शाहाना अफ़सर होगी।

4 तू आगे को मतरूका न कहलाएगी, और तेरे मुल्क का नाम
फिर कभी ख़राब न होगाः बल्कि तू प्यारी' और तेरी सरज़मीन
सुहागन कहलाएगी; क्यूँकि ख़ुदावन्द तुझ से ख़ुश है, और तेरी
ज़मीन ख़ाविन्द वाली होगी।

5 क्यूँकि जिस तरह जवान मर्द कुँवारी 'औरत को ब्याह लाता
है, उसी तरह तेरे बेटे तुझे ब्याह लेंगे; और जिस तरह दुल्हा दुल्हन
में राहत पाता है, उसी तरह तेरा ख़ुदा तुझ में मसरूर होगा।

6 ऐ येरूशलेम, मैंने तेरी दीवारों पर निगहबान मुक़र्रर किए
हैं; वह दिन रात कभी ख़ामोश न होंगे। ऐ ख़ुदावन्द का ज़िक्र
करनेवालो, ख़ामोश न हो।

7 और जब तक वह येरूशलेम को क़ाईम करके इस ज़मीन पर महमूद न बनाए, उसे आराम न लेने दो।

8 ख़ुदावन्द ने अपने दहने हाथ और अपने क़वी बाज़ू की क़सम खाई है, कि "यक़ीनन मैं आगे को तेरा ग़ल्ला तेरे दुश्मनों के खाने को न दूँगा; और बेगानों के बेटे तेरी मय, जिसके लिए तूने मेहनत की, नहीं पीएँगे;

9 बल्कि वही जिन्होंने फ़स्ल जमा' की है, उसमें से खाएँगे और ख़ुदावन्द की हम्द करेंगे, और वह जो ज़ख़ीरे में लाए हैं उसे मेरे मक़दिस की बारगाहों में पीएँगे।

10 गुज़र जाओ, फाटकों में से गुज़र जाओ, लोगों के लिए राह दुरुस्त करो, और शाहराह ऊँची और बलन्द करो, पत्थर चुनकर साफ़ कर दो, लोगों के लिए झण्डा खड़ा करो।

11 देख, ख़ुदावन्द ने इन्तिहा — ए — ज़मीन तक ऐलान कर दिया है, दुख़्तर — ए — सिय्यून से कहो, देख, तेरा नजात देनेवाला आता है; देख, उसका बदला उसके साथ और उसका काम उसके सामने है।"

12 और वह पाक लोग और ख़ुदावन्द के ख़रीदे हुए कहलाएँगे, और तू मत्लूबा या'नी ग़ैर — मतरूक शहर कहलाएगी।

63

[illegible]

1 ये कौन है जो अदोम से और सुर्ख़ लिबास पहने बुसराह से आता है? ये जिसका लिबास दरख़शां है और अपनी तवानाई की बुज़ुर्गी से ख़रामान है ये मैं हूँ, जो सादिक़ — उल — क़ौल और नजात देने पर क़ादिर हूँ।

2 तेरी लिबास क्यूँ सुर्ख़ है? तेरा लिबास क्यूँ उस शख़्स की तरह है जो अँगूर हौज़ में रौंदता है?

3 “मैंने तन — ए — तन्हा अंगूर हौज़ में रौंदें और लोगों में
से मेरे साथ कोई न था; हाँ, मैंने उनको अपने क़हर में लताड़ा,
और अपने जोश में उनको रौंदा; और उनका ख़ून मेरे लिबास पर
छिड़का गया, और मैंने अपने सब कपड़ों को आलूदा किया।
4 क्यूँकि इन्तक़ाम का दिन मेरे दिल में है, और मेरे ख़रीदे हुए
लोगों का साल आ पहुँचा है।
5 मैंने निगाह की और कोई मददगार न था, और मैंने
ता'अज्जुब किया कि कोई संभालने वाला न था; पस मेरे ही बाज़ू
से नजात आई, और मेरे ही क़हर ने मुझे संभाला।
6 हाँ, मैंने अपने क़हर से लोगों को लताड़ा, और अपने ग़ज़ब
से उनको मदहोश किया और उनका ख़ून ज़मीन पर बहा दिया।”
7 मैं ख़ुदावन्द की शफ़क़त का ज़िक्र करूँगा, ख़ुदावन्द ही की
इबादत का, उस सबके मुताबिक़ जो ख़ुदावन्द ने हम को इनायत
किया है; और उस बड़ी मेहरबानी का जो उसने इस्राईल के
घराने पर अपनी ख़ास रहमत और फ़िरावान शफ़क़त के मुताबिक़
ज़ाहिर की है।
8 क्यूँकि उसने फ़रमाया, यक़ीनन वह मेरे ही लोग हैं, ऐसी
औलाद जो बेवफ़ाई न करेगी; चुनाँचे वह उनका बचानेवाला
हुआ।
9 उनकी तमाम मुसीबतों में वह मुसीबतज़दा हुआ और उसके
सामने के फ़रिश्ते ने उनको बचाया, उसने अपनी उलफ़त और
रहमत से उनका फ़िदिया दिया; उसने उनको उठाया और पहले
से हमेशा उनको लिए फिरा।
10 लेकिन वह बाग़ी हुए, और उन्होंने उसकी रूह — ए —
क़ुद्दूस को ग़मगीन किया; इसलिए वह उनका दुश्मन हो गया और
उनसे लड़ा।
11 फिर उसने अगले दिनों को और मूसा को और अपने लोगों
को याद किया, और फ़रमाया, वह कहाँ है, जो उनको अपने गल्ले

के चौपानों के साथ समन्दर में से निकाल लाया? वह कहाँ है,
जिसने अपनी रूह — ए — क़ुददूस उनके अन्दर डाली?
12 जिसने मूसा के दहने हाथ पर अपने जलाली बाज़ू को साथ
कर दिया, और उनके आगे पानी को चीरा ताकि अपने लिए हमेशा
का नाम पैदा करे,
13 जो गहराओ में से उनको इस तरह ले गया जिस तरह वीराने
में से घोड़ा, ऐसा कि उन्होंने ठोकर न खाई?
14 जिस तरह मवेशी वादी में चले जाते हैं, उसी तरह ख़ुदावन्द
की रूह उनको आरामगाह में लाई; और उसी तरह तूने अपनी
क़ौम को हिदायत की, ताकि तू अपने लिए जलील नाम पैदा
करे।
15 आसमान पर से निगाह कर, और अपने पाक और जलील
घर से देख। तेरी ग़ैरत और तेरी क़ुदरत के काम कहाँ हैं? तेरी
दिली रहमत और तेरी शफ़क़त जो मुझ पर थी ख़त्म हो गई।
16 यक़ीनन तू हमारा बाप है, अगरचे अब्रहाम हम से नावाक़िफ़
हो और इस्राईल हम को न पहचाने; तू, ऐ ख़ुदावन्द, हामारा बाप
और फ़िदया देने वाला है तेरा नाम अज़ल से यही है।
17 ऐ ख़ुदावन्द, तूने हम को अपनी राहों से क्यूँ गुमराह किया,
और हमारे दिलों को सख़्त किया कि तुझ से न डरें? अपने बन्दों
की ख़ातिर अपनी मीरास के क़बाइल की ख़ातिर बाज़ आ।
18 तेरे पाक लोग थोड़ी देर तक क़ाबिज़ रहे; अब हमारे दुश्मनों
ने तेरे मक़दिस को पामाल कर डाला है।
19 हम तो उनकी तरह हुए जिन पर तूने कभी हुकूमत न की,
और जो तेरे नाम से नहीं कहलाते।

64

1 काश कि तू आसमान को फाड़े और उतर आए कि तेरे सामने
पहाड़ लरज़िश खाएँ।

2 जिस तरह आग सूखी डालियों को जलाती है और पानी आग
से जोश मारता है ताकि तेरा नाम तेरे मुख़ालिफ़ों में मशहूर हो
और क़ौमें तेरे सामने में लरज़ाँ हों।
3 जिस वक़्त तूने बड़े काम किए जिनके हम मुन्तज़िर न थे, तू
उतर आया और पहाड़ तेरे सामने काँप गए।
4 क्यूँकि शुरू' ही से न किसी ने सुना, न किसी के कान तक
पहुँचा और न आँखों ने तेरे सिवा ऐसे ख़ुदा को देखा, जो अपने
इन्तिज़ार करनेवाले के लिए कुछ कर दिखाए।
5 तू उससे मिलता है जो ख़ुशी से सदाक़त के काम करता है,
और उनसे जो तेरी राहों में तुझे याद रखते हैं; देख, तू ग़ज़बनाक
हुआ क्यूँकि हम ने गुनाह किया, और मुद्दत तक उसी में रहे; क्या
हम नजात पाएँगे?
6 और हम तो सब के सब ऐसे हैं जैसे नापाक चीज़ और हमारी
तमाम रस्तबाज़ी नापाक लिबास की तरह है। और हम सब पत्ते
की तरह कुमला जाते हैं, और हमारी बदकिरदारी आँधी की तरह
हम को उड़ा ले जाती है।
7 और कोई नहीं जो तेरा नाम ले, जो अपने आपको आमादा
करे कि तुझ से लिपटा रहे; क्यूँकि हमारी बदकिरदारी की वजह
से तू हम से छिपा रहा और हम को पिघला डाला।
8 तोभी ऐ ख़ुदावन्द, तू हमारा बाप है; हम मिट्टी है और तू
हमारा कुम्हार है, और हम सब के सब तेरी दस्तकारी हैं।
9 ऐ ख़ुदावन्द, ग़ज़बनाक न हो और बदकिरदारी को हमेशा तक
याद न रख; देख, हम तेरी मिन्नत करते हैं, हम सब तेरे लोग हैं।
10 तेरे पाक शहर वीराने बन गए, सिय्यून सुनसान और
येरूशलेम वीरान है।
11 हमारा ख़ुशनुमा मक़दिस जिसमें हमारे बाप दादा तेरी
इबादत करते थे, आग से जलाया गया और हमारी उम्दा चीज़ें
बर्बाद हो गईं।

12 ऐ ख़ुदावन्द, क्या तू इस पर भी अपने आप को रोकेगा? क्या
तू ख़ामोश रहेगा और हम को यूँ बदहाल करेगा?

65

???????? ?? ?????? ????

1 जो मेरे तालिब न थे, मैं उनकी तरफ़ मुतवज्जिह हुआ;
जिन्होंने मुझे ढूँढा न था, मुझे पा लिया; मैंने एक क़ौम से जो
मेरे नाम से नहीं कहलाती थी, फ़रमाया, देख, मैं हाज़िर हूँ।
2 मैंने नाफ़रमान लोगों की तरफ़ जो अपनी फ़िक्रों की पैरवी
में बुरी राह पर चलते हैं, हमेशा हाथ फैलाए;
3 ऐसे लोग जो हमेशा मेरे सामने, बाग़ों में क़ुर्बानियाँ करने
और ईंटों पर ख़ुशबू जलाने से मुझे ग़ुस्सा दिलाते हैं;
4 जो क़ब्रों में बैठते, और पोशीदा जगहों में रात काटते, और
सूअर का गोश्त खाते हैं; और जिनके बर्तनों में नफ़रती चीज़ों का
शोर्बा मौजूद है;
5 जो कहते तू अलग ही खड़ा रह मेरे नज़दीक न आ क्यूँकि मैं
तुझ से ज़्यादा पाक हूँ। ये मेरी नाक में धुंवें की तरह और दिन भर
जलने वाली आग की तरह हैं।
6 देखो, मेरे सामने ही लिखा हुआ है तब मैं ख़ामोश न रहूँगा
बल्कि बदला दूँगा ख़ुदावन्द फ़रमाता है; हाँ, उनकी गोद में डाल
दूँगा
7 ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है, तुम्हारी और तुम्हारे बाप दादा की
बदकिरदारी का बदला इकट्ठा दूँगा, जो पहाड़ों पर ख़ुशबू जलाते
और टीलों पर मेरा इन्कार करते थे; इसलिए मैं पहले उनके कामों
को उनकी गोद में नाप कर दूँगा।
8 ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है, जिस तरह शीरा ख़ोशा — ए —
अँगूर में मौजूद है, और कोई कहे, उसे ख़राब न कर क्यूँकि उसमें

बरकत है, उसी तरह मैं अपने बन्दों की ख़ातिर करूँगा ताकि उन
सबको हलाक न करूँ।
9 और मैं या'क़ूब में से एक नस्ल और यहूदाह में से अपने
कोहिस्तान का वारिस खड़ा करूँगा और मेरे बर्गुज़ीदा लोग उसके
वारिस होंगे और मेरे बन्दे वहाँ बसेंगे।
10 और शारून गल्लों का घर होगा, और 'अकूर की वादी बैलों
के बैठने का मक़ाम, मेरे उन लोगों के लिए जो मेरे तालिब हुए।
11 लेकिन तुम जो ख़ुदावन्द को छोड़ देते और उसके पाक पहाड़
को फ़रामोश करते, और मुश्तरी के लिए दस्तरख़्वान चुनते और
ज़ुहरा के लिए शराब — ए — मम्ज़ूज का जाम पुर करते हो;
12 मैं तुम को गिन गिनकर तलवार के हवाले करूँगा, और तुम
सब ज़बह होने के लिए झुकोगे; क्यूँकि जब मैंने बुलाया तो तुम ने
जवाब न दिया, जब मैंने कलाम किया तो तुम ने न सुना; बल्कि
तुम ने वही किया जो मेरी नज़र में बुरा था, और वह चीज़ पसन्द
की जिससे मैं ख़ुश न था।
13 इसलिए ख़ुदावन्द ख़ुदा यूँ फ़रमाता है, कि देखो, मेरे बन्दे
खाएँगे, लेकिन तुम भूके रहोगे; मेरे बन्दे पिएँगे, लेकिन तुम प्यासे
रहोगे; मेरे बन्दे ख़ुश होंगे लेकिन तुम शर्मिंदा होगे।
14 और मेरे बन्दे दिल की ख़ुशी से गाएँगे, लेकिन तुम दिलगीरी
की वजह से नालाँ होगे और जान का ही मातम करोगे।
15 और तुम अपना नाम मेरे बरगुज़ीदों की ला'नत के लिए
छोड़ जाओगे, ख़ुदावन्द ख़ुदा तुम को क़त्ल करेगा; और अपने
बन्दों को एक दूसरे नाम से बुलाएगा
16 यहाँ तक कि जो कोई इस ज़मीन पर अपने लिए दु'आ —
ए — ख़ैर करे, ख़ुदाए — बरहक़ के नाम से करेगा और जो कोई
ज़मीन में क़सम खाए, ख़ुदा — ए — बरहक़ के नाम से खाएगा;
क्यूँकि गुज़री हुई मुसीबतें फ़रामोश हो गईं और वह मेरी आँखों
से पोशीदा हैं।

17 क्यूँकि देखो, मैं नये आसमान और नई ज़मीन को पैदा करता
हूँ; और पहली चीज़ों का फिर ज़िक्र न होगा और वह ख़याल में
न आएँगी।
18 बल्कि तुम मेरी इस नई पैदाइश से हमेशा की ख़ुशी और
शादमानी करो, क्यूँकि देखो, मैं येरूशलेम को ख़ुशी और उसके
लोगों को ख़ुर्रमी बनाऊँगा।
19 और मैं येरूशलेम से ख़ुश और अपने लोगों से मसरूर हूँगा,
और उसमें रोने की पुकार और नाला की आवाज़ फिर कभी सुनाई
न देगी।
20 फिर कभी वहाँ कोई ऐसा लड़का न होगा जो कम उम्र रहे,
और न कोई ऐसा बूढ़ा जो अपनी उम्र पूरी न करे; क्यूँकि लड़का
सौ बरस का होकर मरेगा, और जो गुनाहगार सौ बरस का हो
जाए, मला'ऊन होगा।
21 वह घर बनाएँगे और उनमें बसेंगे, वह ताकिस्तान लगाएँगे
और उनके मेवे खाएँगे;
22 न कि वह बनाएँ और दूसरा बसे, वह लगाएँ और दूसरा
खाए; क्यूँकि मेरे बन्दों के दिन दरख़्त के दिनों की तरह होंगे, और
मेरे बरगुज़ीदा अपने हाथों के काम से मुद्दतों तक फ़ायदा उठाएंगे
23 उनकी मेहनत बेकार न होगी, और उनकी औलाद अचानक
हलाक न होगी; क्यूँकि वह अपनी औलाद के साथ ख़ुदावन्द के
मुबारक लोगों की नसल हैं।
24 और यूँ होगा कि मैं उनके पुकारने से पहले जवाब दूँगा, और
वह अभी कह न चुकेंगे कि मैं सुन लूँगा।
25 भेड़िया और बर्रा इकट्ठे चरेंगे, और शेर — ए — बबर बैल
की तरह भूसा खाएगा, और साँप की ख़ुराक ख़ाक होगी। वह मेरे
तमाम पाक पहाड़ पर न ज़रर पहुँचाएँगे न हलाक करेंगे, ख़ुदावन्द
फ़रमाता है।

66

1 ख़ुदावन्द यूँ फरमाता है कि आसमान मेरा तख़्त है और ज़मीन
मेरे पाँव की चौकी; तुम मेरे लिए कैसा घर बनाओगे, और कौन
सी जगह मेरी आरामगाह होगी?
2 क्यूँकि ये सब चीजें तो मेरे हाथ ने बनाई और यूँ मौजूद हुई,
ख़ुदावन्द फ़रमाता है। लेकिन मैं उस शख़्स पर निगाह करूँगा,
उसी पर जो ग़रीब और शिकश्ता दिल है और मेरे कलाम से काँप
जाता है।
3 "जो बैल ज़बह करता है, उसकी तरह है जो किसी आदमी को
मार डालता है; और जो बर्रे की क़ुर्बानी करता है, उसके बराबर
है जो कुत्ते की गर्दन काटता है; जो हदिया लाता है, जैसे सूअर
का ख़ून पेश करता है; जो लुबान जलाता है, उसकी तरह है जो
बुत को मुबारक कहता है। हाँ, उन्होंने अपनी अपनी राहें चुन लीं
और उनके दिल उनकी नफ़रती चीज़ों से मसरूर हैं।
4 मैं भी उनके लिए आफ़तों को चुन लूँगा और जिन बातों से वह
डरते हैं उन पर लाऊँगा क्यूँकि जब मैंने कलाम किया तो उनहोंने
न सुना; बल्कि उन्होंने वही किया जो मेरी नज़र में बुरा था, और
वह चीज़ पसन्द की जिससे मैं ख़ुश न था।"
5 ख़ुदावन्द की बात सुनो, ऐ तुम जो उसके कलाम से काँपते हो;
तुम्हारे भाई जो तुम से कीना रखते हैं, और मेरे नाम की ख़ातिर
तुम को ख़ारिज कर देते हैं, कहते हैं, 'ख़ुदावन्द की तम्जीद करो,
ताकि हम तुम्हारी ख़ुशी को देखें'; लेकिन वही शर्मिन्दा होंगे।
6 "शहर से भीड़ का शोर! हैकल की तरफ़ से एक आवाज़!
ख़ुदावन्द की आवाज़ है, जो अपने दुश्मनों को बदला देता है!
7 पहले इससे कि उसे दर्द लगे, उसने जन्म दिया; और इससे
पहले कि उसको दर्द हो, उससे बेटा पैदा हुआ।
8 ऐसी बात किसने सुनी? ऐसी चीजें किसने देखीं? क्या एक
दिन में कोई मुल्क पैदा हो सकता है? क्या एक ही साथ एक क़ौम

पैदा हो जाएगी? क्यूँकि सिय्यून को दर्द लगे ही थे कि उसकी
औलाद पैदा हो गई।"
9 ख़ुदावन्द फ़रमाता है, क्या मैं उसे विलादत के वक़्त तक लाऊँ
और फिर उससे विलादत न कराऊँ? तेरा ख़ुदा फ़रमाता है, क्या
मैं जो विलादत तक लाता हूँ, विलादत से बा'ज़ रख्खूँ?
10 "तुम येरूशलेम के साथ ख़ुशी मनाओ और उसकी वजह से
ख़ुश हो, उसके सब दोस्तो; जो उसके लिए मातम करते थे, उसके
साथ बहुत ख़ुश हो;
11 ताकि तुम दूध पियो और उसकी तसल्ली के पिस्तानों से सेर
हो; ताकि तुम निचोड़ो और उसकी शौकत की इफ़रात से फ़ायदा
उठाओ।"
12 क्यूँकि ख़ुदावन्द यूँ फ़रमाता है, कि देख, मैं सलामती नहर
की तरह, और क़ौमों की दौलत सैलाब की तरह उसके पास रवाँ
करूँगा; तब तुम दूध पियोगे, और बग़ल में उठाए जाओगे और
घुटनों पर कुदाए जाओगे।
13 जिस तरह माँ अपने बेटे को दिलासा देती है, उसी तरह मैं
तुम को दिलासा दूँगा; येरूशलेम ही में तुम तसल्ली पाओगे।
14 और तुम देखोगे और तुम्हारा दिल ख़ुश होगा, और तुम्हारी
हड्डियाँ सब्ज़ा की तरह नशोंनुमा पाएँगी, और ख़ुदावन्द का हाथ
अपने बन्दों पर ज़ाहिर होगा, लेकिन उसका क़हर उसके दुश्मनों
पर भड़केगा।
15 क्यूँकि देखो, ख़ुदावन्द आग के साथ आएगा, और उसके रथ
उड़ती धूल की तरह होंगे, ताकि अपने क़हर को जोश के साथ और
अपनी तम्बीह को आग के शो'ले में ज़ाहिर करे।
16 क्यूँकि आग से और अपनी तलवार से ख़ुदावन्द तमाम बनी
आदम का मुक़ाबिला करेगा; और ख़ुदावन्द के मक़तूल बहुत से
होंगे।
17 वह जो बाग़ों की वस्त में किसी के पीछे खड़े होने के लिए

अपने आपको पाक — ओ — साफ़ करते हैं, जो सूअर का गोश्त
और मकरूह चीजें और चूहे खाते हैं; ख़ुदावन्द फ़रमाता है, वह
एक साथ फ़ना हो जाएँगे।
18 और मैं उनके काम और उनके मन्सूबे जानता हूँ। वह वक़्त
आता है कि मैं तमाम क़ौमों और अहल — ए — लुग़त को जमा'
करूँगा और वह आयेंगे और मेरा जलाल देखेंगे,
19 तब मैं उनके बीच एक निशान खड़ा करूँगा; और मैं उनको
जो उनमें से बच निकलें, क़ौमों की तरफ़ भेजूँगा, या'नी तरसीस
और पूल और लूद को जो तीरअन्दाज़ हैं, और तूबल और यावान
को, और दूर के जज़ीरों को जिन्होंने मेरी शोहरत नहीं सुनी और
मेरा जलाल नहीं देखा; और वह क़ौमों के बीच मेरा जलाल बयान
करेंगे।
20 और ख़ुदावन्द फ़रमाता है कि वह तुम्हारे सब भाइयों को
तमाम क़ौमों में से घोड़ों और रथों पर, और पालकियों में और
खच्चरों पर, और साँडनियों पर बिठा कर ख़ुदावन्द के हदिये के
लिए येरूशलेम में मेरे पाक पहाड़ को लाएँगे, जिस तरह से बनी
— इस्राईल ख़ुदावन्द के घर में पाक बर्तनों में हदिया लाते हैं।
21 और ख़ुदावन्द फ़रमाता है कि मैं उनमें से भी काहिन और
लावी होने के लिए लूँगा।
22 "ख़ुदावन्द फ़रमाता है, जिस तरह नया आसमान और नई
ज़मीन जो मैं बनाऊँगा, मेरे सामने क़ाईम रहेंगे उसी तरह तुम्हारी
नसल और तुम्हारा नाम बाक़ी रहेगा।
23 और यूँ होगा, ख़ुदावन्द फ़रमाता है कि एक नये चाँद से दूसरे
तक, और एक सबत से दूसरे तक हर फ़र्द — ए — बशर इबादत
के लिए मेरे सामने आएगा।
24 'और वह निकल निकल कर उन लोगों की लाशों पर जो मुझ
से बाग़ी हुए नज़र करेंगे; क्यूँकि उनका कीड़ा न मरेगा और उनकी
आग न बुझेगी, और वह तमाम बनी आदम के लिए नफ़रती

होंगे।”

इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

The Holy Bible in the Urdu language of India: इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

copyright © 2019 Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

Language: اردو (Urdu)

Contributor: Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution Share-Alike license 4.0.

You have permission to share and redistribute this Bible translation in any format and to make reasonable revisions and adaptations of this translation, provided that:

- You include the above copyright and source information.
- If you make any changes to the text, you must indicate that you did so in a way that makes it clear that the original licensor is not necessarily endorsing your changes.
- If you redistribute this text, you must distribute your contributions under the same license as the original.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

Note that in addition to the rules above, revising and adapting God's Word involves a great responsibility to be true to God's Word. See Revelation 22:18-19.

2023-01-03

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 18 Apr 2025 from source files dated 19 Apr 2023

4a2fe4e0-ffe8-5377-87c7-19b3106ba2bc